सुवास दीपक का कथा साहित्य: अंतर्वस्तु और शिल्प

(एम.फिल. लघु शोध-प्रबंध)

सिक्किम विश्वविद्यालय

में मास्टर ऑफ फिलॉसफ़ी एम. फिल. उपाधि की आंशिक परिपूर्ति हेतु

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध

मैरिमित लेप्चा

हिंदी विभाग

भाषा एवं साहित्य संकाय

सिक्किम विश्वविद्यालय

गंगटोक –737102

फरवरी– 2022

सुवास दीपक का कथा साहित्य: अंतर्वस्तु और शिल्प

(एम.फिल. लघु शोध-प्रबंध)

शोधार्थी

मैरिमित लेप्चा

पंजी. सं. 19/M.Phil/HND/02, दिनांक 13/08/2020

हिंदी विभाग

भाषा एवं साहित्य संकाय

सिक्किम विश्वविद्यालय

गंगटोक –737102

सुवास दीपक का कथा साहित्य: अंतर्वस्तु और शिल्प

(एम.फिल. लघु शोध-प्रबंध)

शोध- निर्देशक

डॉ. प्रदीप त्रिपाठी

शोधार्थी

मैरिमित लेप्चा

हिंदी विभाग

भाषा एवं साहित्य संकाय

सिक्किम विश्वविद्यालय

गंगटोक –737102

सुवास दीपक का कथा साहित्य: अंतर्वस्तु और शिल्प

(एम.फिल. लघु शोध-प्रबंध)

शोधार्थी

मैरिमित लेप्चा

पंजी. सं. 19/M.Phil/HND/02, दिनांक 13/08/2020

द्वारा

सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक के हिंदी विभाग में मास्टर ऑफ फिलॉसफी

(एम. फिल.) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध

, सामदुर, तादोंग - 737102
सिक्किम, भारत
3592-251212, 251415, 251656
स - 251067
र - www.cus.ac.in

सिक्किम विश्वविद्यालय
SIKKIM UNIVERSITY

6th Mile, Samdur, Tadong-737102
Gangtok, Sikkim, India
Ph. 03592-251212, 251415, 251656
Telefax : 251067
Website : www.cus.ac.in

(भारत के संसद के अधिनियम द्वारा वर्ष 2007 में स्थापित और नैक (एनएएसी) द्वारा वर्ष 2015 में प्रत्यायित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A central university established by an Act of Parliament of India in 2007 and accredited by NAAC in 2015)

दिनांक: 24. feb. 2022.

घोषणा-पत्र

मैं **मैरिमित लेप्चा** (पंजी. सं. 19/M.Phil/HND/02, दिनांक 13/08/2020) घोषणा करती हूँ कि मैंने सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक के हिंदी विभाग के अंतर्गत एम.फिल. उपाधि हेतु **'सुवास दीपक का कथा साहित्य: अंतर्वस्तु और शिल्प'** विषय पर डॉ. प्रदीप त्रिपाठी के निर्देशन में अपना लघु शोध-प्रबंध पूर्ण किया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरा मौलिक कार्य है। मेरे संज्ञान में इसे अंशतः या पूर्णतः इस विश्वविद्यालय या अन्य संस्थान में किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

इसे सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक के समक्ष हिंदी विषय में एम.फिल. की उपाधि हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

Hardeep Singh
अध्यक्ष / Head/
हिंदी विभाग / Department Hindi
सिक्किम विवि. / Sikkim University

विभागाध्यक्ष

(डॉ. हरदीप सिंह)

प्रदीप त्रिपाठी
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
भाषा एवं साहित्य संकाय
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक-737102

शोध-निर्देशक

(डॉ. प्रदीप त्रिपाठी)

मैरिमित लेप्चा

शोधार्थी

(मैरिमित लेप्चा)

ल, सामदुर, तादोंग - 737102
, सिक्किम, भारत
3592-251212, 251415, 251656
क्स - 251067
ट - www.cus.ac.in

6th Mile, Samdur, Tadong-737102
Gangtok, Sikkim, India
Ph. 03592-251212, 251415, 251656
Telefax : 251067
Website : www.cus.ac.in

सिक्किम विश्वविद्यालय
SIKKIM UNIVERSITY

(भारत के संसद के अधिनियम द्वारा वर्ष 2007 में स्थापित और नैक (एनएएसी) द्वारा वर्ष 2015 में प्रत्यायित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A central university established by an Act of Parliament of India in 2007 and accredited by NAAC in 2015)

दिनांक :..24/2/22

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि मैरिमित लेप्चा (पंजी. सं. 19/M.Phil/HND/02, दिनांक 13/08/2020) ने **'सुवास दीपक का कथा साहित्य: अंतर्वस्तु और शिल्प'** विषय पर एम. फिल. हिंदी उपाधि हेतु लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध उनके द्वारा संग्रहीत किए गए तथ्यों पर आधारित है। मेरे संज्ञान में इसे अंशतः या पूर्णतः इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य संस्थान में किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मैं मैरिमित लेप्चा के लघु शोध-प्रबंध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की अनुशंसा करता हूँ।

शोध-निर्देशक

प्रदीप त्रिपाठी
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
...ा एवं साहित्य संकाय
...ालय, गंगटोक-737102

(डॉ. प्रदीप त्रिपाठी)
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक

ल, सामदुर, तादोंग - 737102
क, सिक्किम, भारत
03592-251212, 251415, 251656
क्स - 251067
ट - www.cus.ac.in

6th Mile, Samdur, Tadong-737102
Gangtok, Sikkim, India
Ph. 03592-251212, 251415, 251656
Telefax : 251067
Website : www.cus.ac.in

सिक्किम विश्वविद्यालय
SIKKIM UNIVERSITY

(भारत के संसद के अधिनियम द्वारा वर्ष 2007 में स्थापित और नैक (एनएएसी) द्वारा वर्ष 2015 में प्रत्यायित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A central university established by an Act of Parliament of India in 2007 and accredited by NAAC in 2015)

दिनांक..24/2/22

प्लेजरिज्म चेक प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि मैरिमित लेप्चा (पंजी.सं.19/M.Phil/HND/02, दिनांक 13/08/2020) ने **'सुवास दीपक का कथा साहित्य: अंतर्वस्तु और शिल्प'** विषय पर डॉ. प्रदीप त्रिपाठी (सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय) के निर्देशन में एम.फिल. हिंदी उपाधि हेतु लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को उरकुंड सॉफ्टवेयर की सहायता से प्लेजरिज़्म परीक्षण करने के पश्चात् 9 % की साम्यता प्राप्त हुई है। सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित मानक के अनुरूप यह साम्यता 10% से नीचे तक स्वीकार्य है। उक्त मानदंड के अनुसार मैरिमित लेप्चा का लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त है।

अत: मैरिमित लेप्चा के लघु शोध-प्रबंध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाती है।

मैरिमित लेप्चा
शोधार्थी

प्रदीप त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक-737102
शोध-निर्देशक

Hardeep Singh
अध्यक्ष / Head/
हिंदी विभाग / Department Hindi
सिक्किम विवि. / Sikkim University
विभागाध्यक्ष

पुस्तकालयाध्यक्ष
Librarian
केन्द्रीय पुस्तकालय Central Library
सिक्किम विश्वविद्यालय
Sikkim University
पुस्तकालयाध्यक्ष

अनुक्रमणिका

भूमिका **1-5**

अध्याय-1 शोध-परिचय **6-16**

1.1 शोध का शीर्षक
1.2 शोध का परिचय
1.3 शोध की समस्या
1.4 शोध का उद्देश्य
1.5 पूर्व शोध कार्य की समीक्षा
1.6 शोध-प्रविधि
1.7 शोध का औचित्य एवं महत्त्व
1.8 शोध की सीमा
1.9 शोध का प्रयोजन

अध्याय-2 सुवास दीपक का कथा साहित्य: पृष्ठभूमि एवं रचना-संसार **17-37**

2.1 सुवास दीपक के कथा साहित्य की पृष्ठभूमि
2.2 सुवास दीपक का लेखकीय विकास
2.3 सुवास दीपक और समकालीन कथाकार

अध्याय-3 सुवास दीपक की कहानियों का अंतर्वस्तु विश्लेषण **38-68**

3.1 स्वाधीनता बनाम मोहभंग
3.2 आर्थिक समस्या के कारण बदलता परिवेश और संबधों में विघटन
3.3 प्रेम, यौन कुंठा एवं स्त्री-पुरुष संबंध
3.4 मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष एवं विसंगतिबोध
3.5 शिक्षा व्यवस्था का विघटन एवं बेरोजगारी का दंश

अध्याय-4 सुवास दीपक के उपन्यास 'अरण्य रोदन' का अंतर्वस्तु विधान **69-86**

4.1 शिक्षा व्यवस्था की मूल्यहीनता
4.2 अरण्य रोदन उपन्यास में व्यवस्था विडंबना
4.3 युवा वर्ग की उदासीनता और मोहभंग

अध्याय-5 सुवास दीपक के कथा-साहित्य की शिल्पगत नवीनता **87-109**

5.1 भाषागत वैशिष्ट्य

5.1.1 भाषा में आंचलिकता

5.1.2 मुहावरे एवं लोकोक्तियों का गठन

5.2 **शैलीगत वैशिष्ट्य**

5.2.1 सांकेतिक एवं व्यंग्यात्मक शैली

5.2.2 आत्मकथानक शैली

5.2.3 सादृश्य विधान एवं संवाद शैली

उपसंहार **110-114**

संदर्भ ग्रंथ सूची **115-117**

भूमिका

1960 के बाद हिंदी कथा साहित्य नए परिवेश में ढल गया था। 1950 से लेकर अब तक कथा साहित्य ने जो यात्रा तय की है, वह एक रेखीय नहीं रही है, बल्कि उसे कई मोड़ से गुजरना पड़ा है। हम जानते हैं कि साहित्य का धरातल यथार्थ से गहरे रूप में संबद्ध है। इसमें समसामयिक युग के अंतर्विरोधों, अंतर्द्वंद्वों एवं विषमताओं आदि का वर्णन मिलता है। इन लेखकों ने व्यवस्था द्वारा उत्पन्न प्रत्येक अंकुश को चुनौती दी है। स्वाधीनता के बाद के हिंदी लेखकों ने सभी स्तर पर आर्थिक संकट के विरुद्ध जूझते रहने, पारिवारिक टूटन एवं बदलते जीवन मूल्यों को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया है।

कथा साहित्य के इतिहास में स्वाधीनता के बाद का साहित्य काफी समृद्ध रहा है। मोहभंग के शिकार हुए आम व्यक्ति की पीड़ा, संत्रास, विवशता, अकेलापन और कुंठा को समग्र रूप में इस दौर के कथा लेखकों ने तरजीह दी है। इन लेखकों के यहाँ कथ्य के स्तर पर बदलाव के साथ-साथ कहन की शैली अर्थात शिल्प के धरातल पर भी युगांतकारी परिवर्तन को देखा जा सकता है। इस दौर के अधिकांश लेखकों के यहाँ सामाजिक समस्या मसलन व्यक्ति का अकेलापन, कुंठा आदि की अभिव्यक्ति प्रमुखता से हुई है। कहानी साहित्य के इतिहास में साठोत्तरी कहानी चर्चा के केंद्र में रही है। इस दौर में अनेक प्रतिभाशाली लेखकों ने श्रेठ रचनाएं लिखी। इस दौर में सुवास दीपक की उपस्थिति काफी महत्वपूर्ण है। साठोत्तरी कथा की दुनिया में सुवास दीपक की अपनी अलग ही पहचान है।

इस शोध कार्य का विषय 'सुवास दीपक का कथा साहित्य अंतर्वस्तु और शिल्प' है। इसके माध्यम उनके समय-समाज के साथ-साथ उनकी रचनशीलता से परिचित कराने के उद्देश्य से उक्त विषय चयनित है। सुवास दीपक जी के कथा-दुनिया की प्रवृत्ति उस समय एवं समाज को उद्घाटित करती है जो आजादी के बाद लोगों के हृदय में पैदा हुई थी। शिक्षा का प्रसार होने एवं रोज़गार के अवसर मिलने से गाँवों के युवा शहरों में बसने लगे। नगर में जगह की कमी एवं मंहगाई, संयुक्त

परिवारों का टूटना, नगरों के भीड़-भाड़, बढ़ती जिंदगी में अजनबीयत, अकेलापन, स्त्री-पुरुष यौन-कुंठा एवं शोषण आदि इनके कथा साहित्य में परिलक्षित हैं। उनके साहित्य में ऐसे अनेक बिन्दु हैं जिन पर अभी शोध कार्य करने की संभावना बनी हुई है। मेरे संज्ञान में सुवास दीपक की रचनाशीलता पर अभी तक कोई कार्य नहीं उपलब्ध नहीं है। सुवास दीपक की रचनाओं की महत्ता को समुचित रूप से समझने के लिए हमारे लिए शोधपरक ज्ञान आवश्यक है। इस शोध के जरिए हम शोषित व्यक्ति की मनः स्थिति और अंतिम पायदान पर खड़े आम आदमी के अधिकारों से परिचित हो सकेंगे। इस शोध में सुवास दीपक की कहानियों का सम्यक विश्लेषण किया गया है साथ ही उनके उपन्यास 'अरण्य रोदन' का भी बारीकी के साथ विवेचन करने का प्रयत्न किया गया है।

शोध विषय परिधि को ध्यान में रखकर शोध की दृष्टि से इसे पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। शोध कार्य का प्रथम अध्याय 'शोध परिचय' है। इसे 09 उप अध्यायों में बांटा गया है। इस अध्याय के तहत शोध-कार्य की नियोजित प्रक्रिया एवं पृष्ठभूमि की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। दूसरे उप-अध्याय के अंतर्गत शोध प्रबंध में 'सुवास दीपक का कथा-साहित्य: पृष्ठभूमि एवं रचना संसार' शीर्षक के माध्यम से सुवास दीपक की रचनाधर्मिता को उद्घाटित किया गया है। यह तीन उप-अध्यायों में विभाजित है। इसके अंतर्गत स्वाधीनता के पश्चात के साहित्यिक परिदृश्य को उद्घाटित किया गया है। इसके अलावा इसमें सुवास दीपक की रचनाशीलता की पृष्ठभूमि एवं लेखकीय विकास एवं साहित्य में उनकी उपस्थिति जैसे प्रमुख बिन्दु शामिल हैं। इस अध्याय में सुवास दीपक के समकालीन लेखकों की चर्चा करते हुए उनके महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला गया है। इसी क्रम में सुवास दीपक के रचना संसार को प्रमुख रूप से दर्ज किया गया है।

इस शोध कार्य का तीसरा अध्याय 'सुवास दीपक की कहानियों का अंतर्वस्तु विश्लेषण' है। इस अध्याय में उनके कहानी संग्रह 'चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ' का विश्लेषण प्रस्तुत है। इसमें कुल ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। धुलते बिम्ब, विकल्प, तुमि आमाके मारते पारोना, टूटना, ग्राम सेवक, चक्रव्यूह, टकराव, पड़ोस एवं बिल्ली के गले में घंटी आदि। समाहित कहानियों के

आलोक में सुवास दीपक की कहानियों का अंतर्वस्तु विश्लेषण के विविध पक्षों को दिखाया गया है। इसे कुल पाँच उप-अध्यायों में बांटा गया है। इसका पहला उप- अध्याय 'स्वाधीनता बनाम मोहभंग' है। इस उपशीर्षक के अंतर्गत स्वतन्त्रता के बाद के मोहभंग की स्थिति को समझने का प्रयत्न किया गया है साथ ही इन कहानियों के जरिए मोहभंग से प्रभावित आम-आदमी की वेदना, संघर्ष और विचारधारा को समझा जा सकता है। इसके दूसरे उप अध्याय 'आर्थिक समस्या के कारण बदलता परिवेश और संबधों में विघटन' के अंतर्गत बदलते परिवेश के कारण समाज में आए परिवर्तन को दिखाया गया है। नैतिक चेतना का विघटन, संयुक्त परिवारों का विखंडन, रिश्तों में तनाव, स्त्री-पुरुष साहचर्य का विघटन आदि सुवास दीपक की कहानियो में व्यक्त किया गया है। तीसरे उप-अध्याय में प्रेम, यौन कुंठा के साथ-साथ स्त्री-पुरुष साहचर्य के द्वन्द्वों की विस्तृत चर्चा है। सुवास दीपक की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंध एवं प्रेम का विभिन्न रूप उभरकर आया है। चौथा उप-अध्याय 'मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष एवं विसंगतिबोध' है। इस उप-अध्याय के अंतर्गत 'चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ' में मध्यवर्गीय जीवन, आर्थिक संकट, राजनीतिक दबाब व सामाजिक वैषम्य का उल्लेख करते हुए हाशिये पर खड़े निम्न मध्यवर्गीय परिवार की हताशा का विस्तार से विवेचन दर्ज है। पांचवां उप-अध्याय 'शिक्षा व्यवस्था का विघटन एवं बेरोजगारी' है। इसके तहत अशिक्षा एवं बेरोजगारी की समस्या पर ज़ोर देते हुए भ्रष्ट व्यवस्था को कहानियों के जरिए चित्रित किया गया है। लेखक ने शासन व्यवस्था के बीच सत्ता, सरकार, उच्च प्रतिभाशाली पर व्यंग्य किया है, इस उप-अध्याय के अंतर्गत उक्त सभी महत्वपूर्ण बिन्दु शामिल हैं।

प्रस्तुत अनुसंधान का चौथा अध्याय 'सुवास दीपक के उपन्यास अरण्य रोदन का अंतर्वस्तु विधान' है जो कि तीन भागों में विभक्त है। इसका पहला उप-अध्याय 'शिक्षा व्यवस्था की मूल्यहीनता' है। सुवास दीपक का उपन्यास 'अरण्य रोदन' विशेषतः शिक्षा व्यवस्था पर आधृत है। यह उपन्यास शिक्षा व्यवस्था की मूल्यहीनता को केंद्र में रखकर लिखा गया है। सुवास दीपक 11 वर्षों (1967 से 1978 तक) तक शिक्षण क्षेत्र से संबद्ध रहे। लेखक ने पाठशाला के अंदर हो रहे विभिन्न लोभ, घूस, स्वार्थी प्रधानाध्यापक, सरकार की लापरवाही और अनुशासनहीनता पर

कुठाराघात किया है। शिक्षा व्यवस्था क्यों आगे नहीं बढ़ पा रही है और इसके मूल्य में क्यों लगातार क्षरण आ रहा है, के पीछे के कारणों का विवेचन इस उप अध्याय में प्रस्तुत है। इसका दूसरा उप-अध्याय 'अरण्य रोदन उपन्यास में व्यवस्था विडम्बना' है। सुवास दीपक ने मध्यवर्गीय जीवन को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। उपन्यास में नायक की ईमानदारी का सभी लोग फायदा उठाते हैं और ईमानदार अध्यापक होने के कारण उनका (लेखक) तबादला होता रहता है। घर में राशन-पानी की कमी इत्यादि का विश्लेषण सामाजिक मनोविज्ञान की दृष्टि से किया गया है। इसमें व्यक्ति की विभिन्न सामाजिक विडम्बना, शोषित पात्र, व्यंग्य, आर्थिक समस्या, बेरोजगारी का दंश जैसी समस्याएँ प्रमुखता से दर्ज हैं। अध्याय का तृतीय उप-अध्याय 'युवावर्ग की उदासीनता और मोहभंग' है। इस उप-अध्याय के अंतर्गत स्वतन्त्रता पश्चात् मोहभंग की दशा-दिशा एवं इसका प्रभाव हिंदी साहित्य में किस प्रकार से उभरकर आया, परिलक्षित है। उपन्यास अरण्य रोदन जिस समय लिखा गया था, देश के व्यवस्था तंत्र में हो रहे तमाम भ्रष्टाचार, लूट, युवा वर्ग का भविष्य निर्माण आदि का उल्लेख करते हुए इसका विश्लेषण किया गया है।

इस अनुसंधान का पाँचवाँ और अंतिम अध्याय 'सुवास दीपक के कथा साहित्य की शिल्पगत नवीनता' है। इसे दो भागों में विभक्त किया गया है। इसके तहत सुवास दीपक की रचनाओं की भाषा एवं शैलीगत वैशिष्ट्य तथा उसकी विविधता और प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। इसके अलावा इस अध्याय के अंतर्गत सुवास दीपक की रचनाशीलता के आलोक में लोकोक्तियों, प्रतीकों एवं बिंबों की प्रयोगशीलता का अध्ययन प्रस्तुत है साथ ही उनके कथा-जगत में प्रयोग भाषा- शैली के विभिन्न रूपों को उदाहरण के साथ स्पष्ट किया गया है।

अनुसंधान के अंतिम हिस्से में सभी अध्यायों का समाहार बतौर निष्कर्ष प्रस्तुत है और अन्त में शोध को पूर्ण करते समय जो भी संबंधित सामग्रियों की सहायता ली गयी उसे शोध 'संदर्भ ग्रंथ' में शामिल किया गया है।

शोध कार्य की परिणति में कई विद्वान-मित्रों की महती भूमिका रही है। मैं उन सभी की आभारी हूँ जिनके दिशा निर्देश, सहायता और हार्दिक समर्थन से प्रस्तुत शोधकार्य पूर्ण हुआ है। इस शोध कार्य के सम्पन्न होने में जिनका भी सहयोग रहा है, सभी का आभार व्यक्त करती हूँ।

सबसे पहले शोध निर्देशक डॉ. प्रदीप त्रिपाठी जी का आभार जिन्होंने शोध विषय-चयन करने से लेकर, उसे अंतिम रूप देने में मार्गदर्शन किया तथा प्रस्तुत विषय को लेकर शोध कार्य करने का अवसर दिया। उनके दिशा निर्देश के बगैर यह शोध-कार्य असंभव था। उन्होंने मुझे शोध-कार्य के प्रति प्रेरणा और प्रोत्साहन दिया, इसलिए एक बार फिर से मैं अपने शोध निर्देशक के प्रति में अन्तर्मन से आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रस्तुत अनुसंधान हेतु सुवास दीपक के प्रति धन्यवाद व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे संबन्धित विषय के लिए सामग्री उपलब्ध करवाई एवं अपना बहुमूल्य समय दिया, उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। महत्त्वपूर्ण किताबों के लिए मैं सिक्किम विश्वविद्यालय के केंद्रीय ग्रंथालय के प्रति आभारी हूँ। अपने विभाग के अध्यक्ष डॉ. हरदीप सिंह, विभाग के शिक्षक डॉ. दिनेश साहू एवं डॉ. चुकी भूटिया मैडम के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने शोधकार्य कार्य के दौरान बहुमूल्य सुझावों से मुझे लाभान्वित किया। इसके अलावा अग्रज आकाश भैया, प्रीति दीदी, दिव्य रंजन भैया जो शोधकार्य के दौरान मुझे दुरुस्त करते हुए मनोबल बढ़ाते रहे, उनके प्रति आभार। सहपाठी सुस्मिता, भानु के स्नेह के प्रति आभारी हूँ। माता-पिता जिन्होंने बिना किसी रोक-टोक के शोध-कार्य करने के लिए अनुमति प्रदान की और मेरी अच्छी सेहत का खयाल रखते रहे। एक बार पुनः सबके प्रति आभार।

अध्याय-1 शोध-परिचय

1.1 शोध का शीर्षक

1.2 शोध का परिचय

1.3 शोध की समस्या

1.4 शोध का उद्देश्य

1.5 पूर्व शोध कार्य की समीक्षा

1.6 शोध-प्रविधि

1.7 शोध का औचित्य एवं महत्त्व

1.8 शोध की सीमा

1.9 शोध का प्रयोजन

1.शोध- परिचय

1.1 शोध का शीर्षक:

प्रस्तुत अनुसंधान का शीर्षक – 'सुवास दीपक का कथा साहित्य : अंतर्वस्तु और शिल्प' है।

1.2 शोध का परिचय:

हिंदी साहित्य के विकास-क्रम ने अनगिनत युग प्रवर्तक एवं रचनाकारों को जन्म दिया। कहानी साहित्य के विकास एवं विस्तार को मोटे तौर पर कई वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। पूरे कालखण्डों में आजादी के बाद की हिंदी कहानी जिसे हम साठोत्तरी के नाम से जानते हैं, बहुत ही समृद्ध है। साठोत्तरी कहानी की सबसे बड़ी प्रवृत्ति व्यवस्था पर किया गया व्यंग्य है। गौरतलब है, मध्यवर्ग की समस्या प्राय: आर्थिक विवशताओं के साथ जुड़ी हुई है।

स्वतंत्रता के लगभग 10 वर्षों के बाद साहित्य को परंपरागत विरासत के साथ ही नया परिवेश मिला। भाव एवं कला पक्ष की दृष्टि से देखें तो कथा साहित्य ने स्वयं को नए परिवेश के अनुकूल ढाल लिया। हिंदी साहित्य में सन् 50 के बाद नई कहानी का बोल-बाला शुरू हुआ। नई कहानी आंदोलन का आकर्षण छठवें दशक तक निस्तेज हो गया था। आजादी के बाद आम जनमानस में पैदा हुआ मोहभंग, जिसमें व्यवस्था की भयावहता थी, विसंगतियां एवं विडंबनाएं थी, कम होने के बजाय और भी गहरी होती गई। इन सभी कारणों ने इस पीढ़ी के रचनाकारों को व्यवस्था का विरोध करने के लिए बाध्य किया। जनतंत्र की जो परिकल्पना थी, वह अल्पतंत्र और धनतंत्र में तब्दील होती हुई दिख रही थी। ऐसे समय में जन सरोकार का साहित्य, जिसे जनवादी साहित्य के नाम से अभिहित किया जाता है, का तेजी से उभार हुआ। सन् 1967 में नक्सलवादी आंदोलन का प्रभाव न केवल बंगाल में बल्कि पूरे उत्तर भारत में फैल गया। फलस्वरूप हिंदी साहित्य में विचार और शिल्प दोनों ही स्तरों पर बदलाव देखने को मिले।

1960 के बाद हिंदी कथा साहित्य नए परिवेश में ढल गया था। 1950 से लेकर अब तक कथा साहित्य ने जो यात्रा तय की है, वह एक रेखीय नहीं रही है, बल्कि उसे कई मोड़ से गुजरना पड़ा है। साठ के दशक में ही कथा साहित्य ने रचनात्मक गतिरोध को तोड़कर अपने आपको नए रूपों में स्थापित किया।

सामाजिक विषमताओं के कारण आदमी में अधिक क्रोध, मानसिक तनाव-दबाव व सामाजिक संघर्ष को साठोत्तरी हिंदी कहानी में दिखाया गया है। युवा पीढ़ी गाँवों को छोड़कर नगरों-महानगरों में रोजगार की तलाश में पलायन करने लगी। नगरों-महानगरों में संयुक्त-परिवारों का विखंडन व सम्बन्धों में कटुता तेज हुई। सामाजिक विसंगति, अनुभव की प्रमाणिकता, नवीन जीवन मूल्य व नए शिल्प विधान आदि बिन्दुओं इस दौर की रचनाशीलता के केंद्रीय आयाम हैं। आजाद भारत के लिए देखे गए स्वप्न अब अवसरवाद, भ्रष्टाचार, भूख, संत्रास, बेरोजगारी, शोषण, महाजनों की लूट-पाट, मंहगाई आदि के कारण बस स्वप्न भर बनकर ही रह गया। इस अव्यवस्था के कारण हाशिये का व्यक्ति अपने और अपने परिवार का पेट भरने के लिए सही और गलत का फर्क न करते हुए गलत कार्य करने को मजबूर हुआ। जिस वजह से उसमें देशभक्ति एवं नैतिकता कम और विद्रोह, क्रोध की भावना ज्यादा भरने लगी। ऐसे ही यथार्थ चरित्रों को इन कथाकारों ने अपनी रचनाओं में जगह दी उनकी संवेदनाओं का चित्रण किया।

साहित्य बिना अपने परिवेश के न तो रचा जा सकता और न ही वह बच सकता है। ऐसे में साहित्य अपने समय की तत्कालीन सामाजिक स्थितियों से स्वतः प्रभावित होता है। 60 का दशक मोहभंग का दशक है। इस मोहभंग से उपजे आक्रोश के कारण जे.पी. ने सम्पूर्ण क्रांति का नारा दिया। संपूर्ण क्रांति 'समता एवं बंधुत्व' की पहल पर मनुष्य की गरिमा का आंदोलन था, जिसकी पृष्ठभूमि में जाति-धर्म जैसी अनेक बुराइयाँ काम कर रही थी। इसका मुख़ालफत करते हुए जे.पी. द्वारा यह संकेत मिलता है कि संपूर्ण क्रांति से मेरा तात्पर्य समाज के सबसे अधिक दबे-कुचले व्यक्ति को सत्ता के शिखर पर देखना है। साठोत्तरी कथा साहित्य में आम जनता का सीधे-सीधे हस्तक्षेप दिखता है। इन कहानियों की एक विशिष्ट प्रवृत्ति रही है-अनुभव की प्रमाणिकता। लेखक

रचना के माध्यम से कहानी मात्र ही नहीं अपितु पूरे समय-समाज, देश-काल-वातावरण को दिखा रहा होता है। इस दौर के साहित्य में अनुभूति के साथ-साथ परंपरागत लेखकीय विकास अधिक स्वतंत्र रूप में फला-फूला।

साठोत्तरी साहित्य के समय ही अहिंदी भाषी क्षेत्र सिक्किम के साहित्यकार सुवास दीपक ने भी अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य को विस्तृत एवं समृद्ध किया। सुवास दीपक का लेखन कविता, कहानी, उपन्यास एवं नेपाली से हिंदी में व डोगरी से नेपाली/हिंदी अनुवाद के रूप में उल्लेखनीय है। सुवास दीपक के कथा साहित्य में साठ के दशक के सभी भाव मौजूद हैं। शिक्षा व्यवस्था में भ्रष्टाचार इनके साहित्य का केंद्रीय तत्व है। पदों के लिए शिक्षा व प्रतिभा न देखकर अब सोर्स को महत्त्व दिया जाने लगा है जिससे शिक्षित युवा वर्ग में बेरोजगारी, निराशा व आक्रोश की भावना अधिक है।

सुवास दीपक के कथा साहित्य की प्रवृत्ति उस मोहभंग को दर्शाती है जो स्वाधीनता के पश्चात आमजन के हृदय में पैदा हुई थी। शिक्षा का विस्तार होने एवं रोज़गार के अवसर मिलने से गाँवों के युवा शहरों मे बसने लगे। नगर में जगह की कमी एवं मंहगाई, पारिवारिक विघटन, नगरों के भीड़-भाड़, बढ़ती जिंदगी में अजनबीयत, अकेलापन, स्त्री-पुरुष यौन-कुंठा, वर्ग-संघर्ष, क्रांतिकारी आवाज, ठेकेदार-मजदूर शोषण आदि इनकी साहित्यिक दुनिया में दिखाई देते हैं।

स्वतंत्रता से पूर्व जो आदर्श बने थे, वह एक-एक कर टूटने लगे। सुवास दीपक ने भी अपने कथा साहित्य में इन मूल्यों को अहमियत दी है। स्वाधीनता आंदोलन के बनाए हुए सिद्धांत और आदर्श पीछे छूटने लगे। सुवास दीपक ने अपने कथा साहित्य में व्यक्तिगत पीड़ा, भय, संत्रास, कुंठा, हिंसा, आतंक, जनता की परेशानियां और शासक वर्ग की उदासीनता आदि बिन्दुओं को अपने साहित्य का दर्ज किया। इनके यहाँ जो मूल्य परिलक्षित हैं वेअचानक घटने वाली घटना नहीं थी, बल्कि जनमानस में व्याप्त स्वप्न के पूरा न होने के कारण जो मोहभंग की स्थिति बनी उससे निर्मित थी।

भारत की एक वृहद आबादी पहाड़ों पर रहती है, लेकिन हिंदी परिदृश्य से पहाड़ी क्षेत्रों का वह रिश्ता नहीं बन पाया, जो साहित्यिक स्तर पर बनना चाहिए था। पूर्वोत्तर की स्थिति हिंदी साहित्य में हमेशा से उपेक्षित रही है। साठ के दशक में इस खालीपन को सुवास दीपक ने भरने का प्रयास किया। इनके साहित्य में स्वाधीनता के बाद विघटित हो रहे मानव मूल्य, शिक्षा व्यवस्था की नाकामी, आमजन तक शिक्षा की पहुँच का न होना, बेरोजगारी, गरीबी, बेबसी, लाचारी एवं नई सामाजिक संरचना में सामाजिक बदलाव स्पष्ट रूप से दिखते हैं। सुवास दीपक ने 60 के बाद के अपने समसामयिक परिवेश, मनोभावों एवं चिंतन आदि का चित्रण किया है।

हिंदी साहित्य एवं अनुसंधान क्षेत्र का यह दुर्भाग्य ही है कि शिक्षा व्यवस्था पर केंद्रित अपने समय का महत्वपूर्ण दस्तावेज़ होने के बावजूद अब तक इस रचना को संज्ञान में नहीं लिया गया। प्रस्तुत शोध कार्य 'सुवास दीपक का कथा साहित्य: अंतर्वस्तु और शिल्प' के माध्यम से उनके समय-समाज के साथ-साथ उनकी रचनाशीलता से परिचित कराना तथा उनके महत्त्व को उजागर करना रहा है।

1.3 शोध की समस्या :

प्रस्तुत अनुसंधान में निम्नलिखित बिंदु शोध की समस्या के रूप में द्रष्टव्य हैं-

1. सुवास दीपक के कथ्य की भावभूमि क्या है?
2. अपने समय के तत्कालीन प्रश्नों को उठाने में सुवास दीपक का कथा साहित्य कहाँ तक सफल हो पाया है?
3. अपने समकालीन रचनाकारों से सुवास दीपक की रचनाशीलता किस प्रकार से भिन्न है?
4. पूर्वोत्तर के समय, समाज और परिस्थितियों का उद्घाटन सुवास दीपक के कथा साहित्य में किन रूपों में दर्ज है?
5. सुवास दीपक की रचनाधर्मिता तत्कालीन विमर्शों से कितनी प्रभावित है?

6. 'अरण्य रोदन' को सिक्किम का पहला हिंदी उपन्यास का दर्जा मिलने के बाद भी उतना महत्त्व क्यों नहीं मिला, जितना मिलना चाहिए था?
7. एक महत्त्वपूर्ण रचनाकार होने के बावजूद सुवास दीपक की रचनाशीलता हिंदी कथा साहित्य में हाशिये पर क्यों है?
8. सुवास दीपक ने अपनी रचनाओं में परंपरागत शिल्प के ढांचे को किस प्रकार से तोड़ा है?

1.4 शोध-कार्य का उद्देश्य:

1. सुवास दीपक के कथा साहित्य के अंतर्वस्तु और शिल्प पक्ष को उद्घाटित करना प्रस्तुत अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य है।
2. प्रस्तुत अनुसंधान के माध्यम से सुवास दीपक की रचनाओं में हाशिये के समाज की उपस्थिति को उद्घाटित किया गया है।
3. अपने समय एवं समाज के तत्कालीन प्रश्नों को उठाने में सुवास दीपक को कितनी सफलता मिल पाई है, का अध्ययन भी प्रस्तुत शोध के माध्यम से किया गया है।
4. सुवास दीपक की रचनाशीलता पर समकालीन विमर्शों के प्रभाव का अध्ययन करना प्रस्तुत अनुसंधान का उद्देश्य है।
5. सुवास दीपक के कथा साहित्य में समय-समाज को दृष्टिगत रखते हुए आम आम आदमी के जीवन की विद्रूपताओं का अध्ययन करना भी इस अनुसंधान का लक्ष्य है।
6. पूर्वोत्तर भारत में सुवास दीपक का साहित्यिक योगदान, महत्त्व एवं उनके स्थान को रेखांकित करना इस शोध कार्य का मकसद है।
7. सुवास दीपक की रचनाओं में पूर्वोत्तर भारत की उपस्थिति को दर्ज करना भी प्रस्तुत अनुसंधान के उद्देश्य में शामिल है।

1.5 पूर्व शोध कार्य की समीक्षा

स्वाधीनता के पश्चात की कहानियों एवं उपन्यासों पर शोध की दृष्टि से कई अध्ययन हुए हैं। देखा जाय तो पूर्वोत्तर भारत से संबंधित कथाकारों विशेष रूप से सिक्किम पर केन्द्रित बहुत ही कम या लगभग नहीं के बराबर कार्य हुआ है। मेरी जानकारी में सुवास दीपक पर अभी तक कोई अनुसंधान नहीं हुआ है। सम्भवतः अनुसंधान की दृष्टि से सुवास दीपक का अध्ययन करना मेरा पहला प्रयास होगा।

इसके अतिरिक्त सुवास दीपक के कथा साहित्य से संबंधित कुछ समीक्षाएं निम्नलिखित हैं -

घनश्याम नेपाल द्वारा अरण्य रोदन की समीक्षा - वर्ष: 5, अंक: 5, 2 जुलाई, 1985 में नेपाली साहित्यिक 'विचार' (संपादक सुवास दीपक) में प्रकाशित। यहाँ अरण्य रोदन उपन्यास का उन्होंने मूलतः तीन स्तरों से परिचय करवाया। (क) सुवास दीपक की जीवन कथा के एक अंश का चित्र, (ख) राज्य के सम्पूर्ण शिक्षकों एवं शिक्षा संस्थानों की गतिविधियों का चित्रण, (ग) राष्ट्रीय शिक्षा पद्दति और व्यवस्था का चित्रण। वह इस उपन्यास को सुवास दीपक के ग्यारह वर्ष के शैक्षणिक जीवन की अनुभूति मानते हैं। यह उपन्यास केवल लेखक का न होकर पूरे भारत वर्ष के शिक्षकों की विडंबनाओं का यथार्थपरक चित्रण करता है। 'अरण्य रोदन' की समीक्षा 'रविवार' (हिंदी साप्ताहिक, आनंद पत्रिका प्रकाशन, वर्ष: 5, अंक 14, 1- 7 दिसंबर, 1985) भी उल्लेखनीय है। यह एक बेहतरीन समीक्षा है। देश की पूरी व्यवस्था भ्रष्टचार के चंगुल में आ चुकी है तो शिक्षण संस्थाएं भी इससे कैसे बच सकेंगी, इसमें इस बात का ज़ोर देकर संकेत है। अरण्य रोदन शिक्षा व्यवस्था को केंद्र में रखते हुए लिखा गया उपन्यास है जिसमें शिक्षक वर्ग में फैले भ्रष्टाचार, बेईमानी, चाटुकारिता और अनैतिकता को उजागर किया गया है और उसे लेखक द्वारा पूरी दृढ़ता के साथ चित्रित किया गया है।

सुवास दीपक के कथा साहित्य के समय-विस्तार को समझते हुए आजादी के बाद देश में आये परिवर्तनों के कारण देश के युवाओं पर इसका क्या प्रभाव पड़ा और आम आदमी का जीवन

कठोर से कठोर होता गया, इसका मूल्यांकन किया गया है। कठिनाईयों से उबारना, इन कहानियों में नई चेतना पैदा करता है और यही बात इन कहानियों को अलहदा बनाती है। सुवास दीपक की कहानियों में कहीं भी दुहराव नहीं है। कहानियाँ सहज होते हुए भी पाठकों का मनोरंजन करने में पूरी तरह समर्थ हैं। सुवास दीपक की भाषा पर अच्छी पकड़ है जो उनकी कहानियों को व्यवस्था पर सीधा व्यंग्य करने का माद्दा देती है। यह कहानियाँ यथार्थ से संबद्ध हैं, इन कहानियों द्वारा उभरे प्रश्न पाठको में अवश्य ही जागरुकता लाएँगी।

पुस्तकों की समीक्षा:-

साठोत्तरी हिंदी कहानी से संबंधित प्राप्त कुछ आलोचनात्मक पुस्तकों का विवरण निम्नलिखित है- रामप्रसाद.(1995). साठोत्तरी हिंदी कहानी में पात्र एवं चरित्र. इलाहाबाद: जयभारती प्रकाशन. पुस्तक में साठोत्तरी हिंदी कहानी के पात्रों के विषय पर विभिन्न आयामों से चर्चा की गई है। चरित्र कथा का महत्वपूर्ण हिस्सा है, अंतः यहाँ चरित्र का महत्त्व, उसका स्वरूप, चरित्र-विभेद, स्त्री-पुरुष संघर्ष एवं पात्र चित्रण है, साथ ही साथ साठोत्तरी हिंदी कहानी के विशिष्ट गुणों पर प्रकाश डाला गया है व साहित्य में सृजन पात्रों का महत्त्व इंगित किया गया है। खास तौर पर यह पुस्तक बदलते युग के साथ कहानी के मूल्य और कहानी का संबंध तथा साठोत्तरी कहानी के मूल उत्स की विस्तृत चर्चा करते हुए उसकी अवधारणा को स्पष्ट करती है।

अपनी सामाजिक स्वतंत्रता और दुनियादारी समझने के लिए स्त्रियों की किताबों से परिचय हुआ। घरेलू महिलाएँ पैसे कमाने के लिये घर से बाहर जाने लगीं। वे किसी अन्य पर आश्रित नहीं होना चाहती थी। शादी एक महत्वपूर्ण बंधन है, अत: इस बंधन में बंधने के लिए वह वर का स्वयं चयन करने लगी। विशेषकर इस पुस्तक में हिंदी कहानियों में सामाजिक परिवर्तनों की चर्चा विस्तृत फलक पर की गई है। सिंह, डॉ. विमला.(1999). साठोत्तरी हिंदी कहानियों में उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग का स्वरूप. वाराणसी: कला प्रकाशन. में निम्न मध्यवर्गीय चारित्रिक जटिलता की विवेचना की गयी है।

कथाकार अपनी सृजनात्मकता के माध्यम से समाज के सभी पहलूओं को दिखाता है, लेकिन इसमें उच्च मध्यवर्ग जीवन-विश्लेषण की भूमिका को बहुत ही कम दिखाया गया है। ऐसा नहीं है कि उच्च मध्य वर्ग के जीवन में दुःख या परेशानियाँ नहीं होती, लेकिन इस प्रकार की भावभूमि हमें कथा-साहित्य में कम मिलती है। इन कहानियों में निम्न मध्यवर्ग-उच्च मध्यवर्ग का विश्लेषण किया गया है और लेखक का मानना है कि जीवन के कई ऐसे रूप हैं जो अवश्य ही अभी तक हिंदी कहानियों की पकड़ में नहीं आ पाये हैं।

श्रीवास्तव, डॉ. शोभारानी.(2011).बीसवीं सदी की हिंदी कहानी के बदलते परिदृश्य. कानपुर. साहित्य रत्नालय. में हिंदी कहानी के स्वभाव को समझने की कोशिश की गई है। इसमें हिंदी कथा प्रवृत्ति एवं शिल्प विकास का अध्ययन किया गया है। इस पुस्तक में प्राकृत, अपभ्रंश, आदिकालीन कथा-वृत्ति, कृष्ण भक्तों की वार्ता, कहानी की विकास यात्रा आदि को उल्लिखित करते हुए उत्कर्ष काल में प्रेमचंद व प्रसाद युग के कहानियों की प्रवृत्तियों का रेखांकन द्रष्टव्य है।

बंसल, बीना.(2001). नई कहानी में आर्थिक संघर्ष, दिल्ली. ईशा ज्ञानदीप. भारतीय इतिहास में आर्थिक संघर्ष के कारणों के मूल में देश के पिछड़ेपन को विश्लेषित करने का प्रयास है। पाण्डेय, डॉ. शशिभूषण.(1674).नयी हिंदी कहानी के विविध प्रयोग. इला. लोकभारती प्रकाशन. में नई कहानी में 'प्रयोग' शब्द की प्रमाणिक और अनुभव का अभिलेख है। इस पुस्तक द्वारा लेखक नई कहानी के अनेक नए प्रयोगों को दिखाया गया है, जैसे कि कथा दृष्टि प्रयोग, नए शिल्प प्रयोग, कहानी की प्रकृति प्रयोग, विचार प्रयोग, नये विषय प्रयोग, भाषागत प्रयोग का विश्लेषण आदि।

अरोड़ा, डॉ. ज्ञानवती.(1686). समसामयिक हिंदी कहानियों में बदलते पारिवारिक संबंध. दिल्ली: सूर्य प्रकाशन.में हिंदी कहानी के समय-परिवेश के बदलने के कारणों को स्पष्ट करते हुए उससे पारिवारिक संबंधो में आए विभिन्न बदलावों को दर्शाया गया है। अगर समाज में परिवार का बिखरना या टूटना होता है तो इससे वह समाज को कमजोर बना देती है। प्रस्तुत पुस्तक में वर्तमान परिवार के टूटने के कारणों को समझाना ही इसकी मूल प्रवृत्ति है।

1.6 शोध प्रविधि :

1.6.1 अध्ययन विश्लेषण का सैद्धांतिक आधार:

प्रस्तुत अनुसंधान में मुख्य रूप से निगमनात्मक अनुसंधान-प्रविधि का प्रयोग हुआ है। अध्ययन एवं आवश्यकतानुसार प्रस्तुत अनुसंधान में आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक पद्धतियों का प्रयोग भी शामिल है।

1.6.2 सामग्री संकलन :

प्राथमिक स्रोत:

इसके तहत आधार सामग्री के रूप में सुवास दीपक के कहानी संग्रह 'चक्रव्यूह एवं अन्य कहानियाँ' और उपन्यास 'अरण्य रोदन' को शामिल किया गया है।

द्वितीयक स्रोत:

द्वितीयक स्रोत के अंतर्गत पुस्तकालयों से अनुसंधान विषय से संबंधित सहायक ग्रंथ, पत्र एवं पत्रिकाओं, शोध-प्रबंधों एवं इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्रियों आदि का इस्तेमाल किया गया है।

1.7 शोध का औचित्य एवं महत्त्व:

प्रस्तुत शोध की समस्या एवं उद्देश्य के आधार पर ही इसके औचित्य एवं महत्त्व को स्पष्टता से रेखांकित किया गया है। सुवास दीपक का उपन्यास 'अरण्य रोदन' एवं 'चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ' को सिक्किम का प्रथम हिंदी उपन्यास एवं कहानी संग्रह का दर्जा प्राप्त है। प्रस्तुत अनुसंधान के माध्यम से सुवास दीपक की रचनाशीलता को विस्तृत फ़लक पर उल्लिखित किया गया है। इस अनुसंधान के जरिए पूर्वोत्तर के साहित्य में सुवास दीपक की महत्ता एवं वैशिष्ट्य को समझने का प्रयत्न है। अनुसंधान की दृष्टि से देखा जाय तो निकट भविष्य में शोध-अध्येताओं को

यह सामग्री शोध की दिशा तय करने एवं उसे नई दृष्टि से समझने में मददगार साबित होगी। इस मायने में भी यह शोध कार्य काफी सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण साबित हो सकता है।

1.8 शोध की सीमा:

सुवास दीपक का नेपाली से हिंदी एवं डोगरी से नेपाली का अनूदित रचना संसार निश्चित रूप से अत्यंत व्यापक है। लेखक की रचनाशीलता को अनुसंधान के विविध पक्षों से देखा जा सकता है। सुवास दीपक का हिंदी में अब तक केवल एक उपन्यास 'अरण्य रोदन' एवं 'चक्रव्यूह और अन्य कहानियाँ' प्रकाशित है। इसके अलावा अन्य कई और भी कहानियाँ फुटकर रूप में तो उपलब्ध हैं, फिलहाल वह कोई मुकम्मल संग्रह की शक्ल में नहीं है। शोध की सीमा एवं समयाभाव को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अनुसंधान-कार्य के अंतर्गत सुवास दीपक के कथा साहित्य उपन्यास 'अरण्य रोदन' एवं 'चक्रव्यूह एवं अन्य कहानियाँ' चयनित है।

1.9 शोध का प्रयोजन:

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का मुख्य प्रयोजन सिक्किम वि.वि. के हिंदी विभाग के अंतर्गत एम.फिल. उपाधि प्राप्त करना है। एक महत्त्वपूर्ण रचनाकार की उपस्थिति को दर्ज करवाना एवं उसे साहित्यिक पटल पर रेखांकित करना भी इस शोध की प्रयोजनीयता का एक अहम हिस्सा है।

अध्याय-2

सुवास दीपक का कथा साहित्य: पृष्ठभूमि एवं रचना-संसार

2.1 सुवास दीपक के कथा साहित्य की पृष्ठभूमि

2.2 सुवास दीपक का लेखकीय विकास

2.3 सुवास दीपक और समकालीन कथाकार

2.1 सुवास दीपक के कथा-साहित्य की पृष्ठभूमि

स्वाधीनता के उपरांत हिंदी कहानी मानवीय चेतना और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है। स्वाधीनता से पूर्व आम जनता को सरकार से बहुत उम्मीदें थी, लेकिन स्वाधीनता के पश्चात ये आशाएं ही देश भर के लिए मोहभंग का कारण बनी। व्यक्ति का काम करने के लिए शहर में आना, शहर आकर बोल-चाल, पोशाक, रहन-सहन में बदलाव आना, नगरीय जीवन-बोध आदि ने एक ऐसी मानसिकता की निर्मिति की जो मनुष्य को मशीन बना देती है। स्वतंत्रता पूर्व लिखी जाने वाली कहानियाँ यथार्थ की जमीन पर कहानी का अंग नहीं बन सकी। वर्तमान कहानी में इनके माध्यम से यथार्थ की अभिव्यक्ति है, जिसमें मध्यवर्गीय मजदूरों की समस्याओं की अभिव्यक्ति, आत्मसंघर्ष और नए जीवन बोध की कहानी है। "स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व का कहानीकार कहानियाँ अवश्य बुनता था किंतु उसका अपना एक निश्चित मानदंड था, उसका आधार महज एक प्रकार का नीति वाक्य था जो कहानी के अंत में जाकर अपना मंतव्य स्पष्ट कर देता था।"[1] नई चेतना, भूख, गरीबी, पुराने मूल्यों का विघटन, तनाव, हताश मानसिकता, पाश्चत्य प्रभाव, शिक्षा व्यवस्था पर भ्रष्टाचार इत्यादि जैसे विषय गौण थे। स्वतंत्रता के पश्चात अनेक परिवर्तनों के कारण युगों और रचनाओं का नामकरण किया गया। साहित्यकारों में ऐसे अलग-अलग भावबोध आने के पीछे उनके समय-समाज की देन को देखा जा सकता है। जैसे कि 1943 ई. के आस-पास ही हिंदी साहित्य में नये-नये प्रतीक-बिम्बों और वाद के माध्यम से साहित्य रचा गया जिनमें प्रमुख रूप से अज्ञेय द्वारा शिल्प में नये प्रयोग किए गए। अस्तिववादी विचारधारा का मूल चिंतन ही अनास्थावादी एवं नकारवाद है। अजनबीपन, मृत्यु-बोध, कुंठा, संत्रास, अकेलापन, अनिश्चय आदि अस्तित्ववादी चिंतन की मुख्य प्रवृत्तियाँ रही हैं। अतःयह कहना उचित होगा कि प्रयोगवाद और बाद में जाकर नई कविता पर इसका व्यापक प्रभाव रूप से दिखाई पड़ता है।

इस दशक की कहानियों में दर्शन, राजनीति आदि विषयों पर अधिक लिखा गया, जो कि प्रेमचंद युग की विशेषताओं से भिन्न है। इन नये कहानीकारों द्वारा नये प्रतिमानों की स्थापना हुई।

[1]गर्ग, डॉ.भैरु लाल.(1878). स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में सामाजिक परिवर्तन. पृ. 29

इस समय की कहानियों में सामाजिक परिवर्तन, आजादी की मनोदशा, पुरानी और नई पीढ़ी की मानसिकता का टकराव, आर्थिक मुद्दे, नई-पुरानी परंपरा, नई शिक्षा-दीक्षा से उत्पन्न स्थितियों की अत्यंत मार्मिक कहानियाँ लिखी गई। इस नए आंदोलन का सूत्रपात करते हुए राजेन्द्र यादव ने स्पष्ट किया –"सन् 1950 के आस-पास से ही वैचारिक एवं स्पष्टगत स्वरूप के स्तर पर एक नितांत नई तरह की कहानी हिंदी में आने लगी थी-तब से आज तक की कहानी एक बार पुनः व्यक्ति यथार्थ से हटकर सामाजिक यथार्थ से जुड़ी और इसी समय में आधुनिक बोध की तलाश प्रारंभ हुआ है।"[1] कहानीकार का जीवन के प्रति नई दृष्टि विकसित हुई जिसमें यथार्थ, आर्थिक विकास का मुद्दा आदि मुख्य बिंदु थे। नई कहानी में वस्तु तत्व और शिल्प दोनों ही प्रमुख हैं। यहाँ आम आदमी की भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण होने लगी। व्यक्ति के यथार्थ परिवेश को दिखाया जाने लगा और कहानी का अंत पाठकों द्वारा विचार करने हेतु लिखा जाने लगा।

'नई कहानी' के पश्चात हिंदी कहानी में साठोत्तरी कहानी का दौर अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। साठ के बाद से वर्तमान काल या अद्यतन समय तक की कहानियों को 'समकालीन' के अंतर्गत रखकर अध्ययन-मनन हुआ है और यह प्रक्रिया लगातार जारी है। इन कहानियों में जीवन-संबंधों, मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता, अपने को मुक्त रखने का प्रयास और आत्मावलोकन की प्रवृत्ति द्रष्टव्य है। इन कथाओं के चरित्र एवं कथानक बेहद सरलता और सहजता से हमारे सामने आते हैं, क्योंकि वे मूल रूप से आम आदमी के साथ जुड़े हुए हैं।

सन् 1960 के बाद भारत पर तीन आक्रमण हुए। 1962 में भारत-चीन युद्ध, 1965 में पाकिस्तान आक्रमण और अंत में 1971 के संघर्ष के बाद बांग्लादेश का उदय जिसके फलस्वरूप देश में अशांति, सामाजिक विसंगतियां, हौसले का टूटना, अर्थव्यवस्था का गिरने जैसी बड़ी घटनाएं हुई, जिससे देशवासियों में हताशा और साथ ही साथ आक्रोश दिखने लगा।

मोहभंग की स्थिति अराजकता, आजादी पूर्व देशवासियों के मन में स्वतंत्र भारत को लेकर बहुत सी आशाएं थी कि आजादी के बाद दुःख, गरीबी, शोषण, भूख, सेठ-महाजनों की लूट-

[1]यादव, राजेंद्र. (2018). एक दुनिया समानान्तर. (भूमिका से)

घसोट समाप्त हो जाएगी, लेकिन स्वाधीनता के पश्चात् भारतीय समाज के ढांचे में किसी प्रकार का बदलाव देखने को नहीं मिला। वैज्ञानिक उपलब्धियों और भौतिक सुख-सुविधा पाने की चाहत में राजनीतिक स्वार्थ ही नहीं बल्कि समाज में अवसरवादिता जैसे दुर्गुण पनपने लगे। ब्रिटिशों द्वारा पहले से ही देश को लूट लिया गया था और अब ऊपर से तीन युद्धों के परिणाम स्वरूप कठिन पस्थितियां उभरने लगी। "मंहगाई, भूखमरी, बढ़ती जनसंख्या का सामना करता हुआ साधारण मनुष्य राजनैतिक स्तर पर जब भाई-भतीजावाद, अवसरवाद, पद लिप्सा, भ्रष्टाचार देखता है तो उसके आजाद भारत के लिए देखे गये स्वप्न बिखर जाते हैं। वह हताश, निराश और क्षुब्ध हो उठता है।"[1] इस प्रकार व्यवस्था के प्रति, राजनेता के प्रति लोगों का मोहभंग हुआ।

1960 के बाद व्यक्ति के जीवन में चाहे वह नौकरी करने वाला हो या निम्नवर्ग का आम आदमी नित नई सामाजिक समस्याओं से जूझने लगा। परिवार के लिए आदमी जैसे भी हो वह कमाना चाहता है। अच्छा या बुरा किसी बात की परवाह न करते हुए मध्यम व निम्न वर्ग तन ढकने, सर छिपाने और दो जून की रोटी कमाने में ही अपना जीवन व्यतीत करता रहा। मध्यवर्गीय समाजों में बच्चों के अंग्रेजी स्कूलों में भर्ती के लिए खर्च और महंगे शौक जैसी दिनचर्या से लेकर कर्ज, सूदखोरी जैसे परेशानियों से मध्यवर्ग की कमर टूटनी लगी। फलस्वरूप इन आर्थिक कठिनाईयों से मध्यवर्ग की साझा संस्कृति का बिखराव होना आरंभ हो गया। संयुक्त परिवार टूटने लगा। नई युवा पीढ़ी के व्यक्ति स्वयं और अपने परिवार तक ही सीमित रहने लगा। नगरो में परिवार चलाने के लिये पति-पत्नी दोनों घर से बाहर काम करने लगे जिससे घर और बाहर की जिन्दगी आपस में टकराने लगी और सामाजिक विघटन के साथ ही आपसी सम्बन्धों में खोखलापन और अविश्वास उभरने लगा। काम का बोझ और परिवार में आंतरिक कलह की वजह से समाज में एक ऐसे वर्ग का उदय होने लगा जो कि बेहद निराश और अवसादपूर्ण जीवन व्यतीत करता था।

हिंदी कथा साहित्य में अहिंदी भाषी लेखकों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। मराठी, असमिया, बंगाली, उड़िया एवं नेपाली भाषी कुछ लेखकों ने कथा की दुनिया को अपनी

[1] सिंह, डॉ. विमला. (1999). साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग का स्वरूप. पृ. 12

सृजनशीलता के जरिये समृद्ध किया है। इसमें पूर्वोत्तर भारत के सिक्किम राज्य के लेखक सुवास दीपक का नाम भी प्रमुख है। सिक्किम का पहला हिंदी उपन्यास सुवास दीपक द्वारा लिखा गया है। सुवास दीपक का कथा-लेखन समय साठोत्तरी से लेकर अब तक माना जा सकता है।

स्वतंत्रता के साथ ही एक नई पीढ़ी का उदय हुआ। नवीनता और मौलिकता भरे परिवर्तन को मूल उद्देश्य बनाकर इस समय के कहानीकारों ने इसका प्रयोग किया। कहानी के अनेक रूप और नये विषय के कारण विभिन्न नामों से हिंदी कहानी को नाम दिया गया। सामाजिक सरोकार कहानियों का केन्द्रीय बिन्दु था। गौरतलब है समय-सापेक्ष परिवेश में निरतंर परिवर्तन हो रहा था। शहरों का विस्तार और रोजगार की संभावना ने युवकों को अपनी ओर खीचा। युवा पीढ़ी शहरों की ओर विस्थापित हो रही थी और इस कारण कुछ वर्षों में ही परिवार विघटन की समस्या दिखने लगी। परिवारों के विखंडन की यथार्थ अभिव्यक्ति कहानियों के माध्यम से पूर्णतः द्रष्टव्य थी। 1950 के बाद हिंदी कहानी ने नये मानदंड स्थापित किए। ज्ञानरंजन की 'फेंस के इधर-उधर', अमरकांत की 'जिंदगी और जोंक', दूधनाथ सिंह की 'रीझ', रेणु की 'तीसरी कसम' आदि कहानियों ने हिंदी कहानी को नया स्वर दिया है। आज की कहानी पूर्व की कहानी से भिन्न है- आज समाज में व्याप्त जीवन के हर पहलू को साहित्य का विषय बनाया है और यथार्थ के साथ वर्तमान का चित्रण किया है। इनकी कहानियां सामाजिक यथार्थ के अलावा आंचलिक जीवन को समग्र रूप में प्रकट करती हुई दिखती हैं। स्त्री संवेदनाओं पर मृणाल पाण्डेय, सुधा अरोड़ा, शिवानी आदि लेखिकाओं ने अत्यंत प्रभावशाली नारी मूल्य, मान्यताओं और विमर्श जैसे गंभीर विषय को अपनी कहानी रचना में दर्ज किया है।

स्वतंत्रता के उपरांत रचनाओं में आये परिवर्तनों में मुख्य रूप से नवीन दृष्टि, यथार्थ, व्यक्तिगत कुंठा, भीड़ में अकेलापन, अजनबीपन आदि शामिल थे। उदाहरण के लिए दूधनाथ सिंह की 'प्रतिशोध; और 'सब ठीक हो जायेगा' आदि कहानियाँ विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं। यहाँ पुरानी परंपरा के प्रति कोई लगाव नहीं था, बल्कि विघटन और भोगे हुये यथार्थ को साठ के बाद के कहानियों में दर्ज किया गया है।

सुवास दीपक की 'टकराव' कहानी पति-पत्नी के संबंध में तनाव, असंतोष और कुंठा आदि को दिखाया गया है । शीला चाहती है कि सुमेर शाम को मार्केट में टहलने जाए या उसके साथ कही पार्टियों में जाए लेकिन सुमेर को यह सब कुछ पसंद नहीं। सुमेर शीला को पार्टियों में जाने से भी रोकता है, सुमेर को यह सब दिखावटी दुनिया लगती है। शीला को यह सब पसंद है लेकिन वह कुछ कह नहीं पाती और अंदर ही अंदर शीला कटी-कटी रहने लगती है। "कमरा अंधेरा से घिर चुका है। उसे लगा कि शीला उठ कर बत्ती नहीं जलाएगी। वह अपने अंदर एक खामोश विद्रोह पाल रही थी। एक खामोश विद्रोह का अंत न जाने कब और कैसा होगा। वह कुर्सी को पीछे सरका कर रुक जाता है। उसे महसूस होता है कि उन दोनों के बीच विपरीत विचारधाराओं का जो अंधेरा आ धँसा है उसे वह चिल्ला कर इस खामोशी को तोड़ देगा। उसके जबड़े कसते चले जाते है। दौड़ कर वह स्विच दबाता है। कमरा प्रकाश से नहाने लगता है।"[1] सुवास दीपक ने बदलती सामाजिक संरचना में व्यक्ति की हताशा को बहुत ही बारीकी के साथ दिखाया है।

आजादी के पश्चात् अधिकांश लोगों में आशाएं थी कि अब वह पूर्णतः आजाद हैं, लेकिन यह आशाएं अपूर्ण रह गयी। व्यक्ति मोहभंग की मनोदशा, निराशा, हताश, आशंका, कुंठा व्यक्ति के जीवन से गुजरने लगा। कमलेश्वर, मोहन राकेश, अमरकांत, मन्नू भण्डारी, श्रीमती विजय चौहान, भीष्म साहनी के यहाँ गरीबी, धोखा, भ्रष्टाचार, अन्याय, अकेलापन, बेरोजगारी, अफसरों से लाभ उठाने आदि की प्रवृत्तियां उल्लेखनीय हैं। सुवास दीपक की हर कहानी में कहीं न कहीं इन बिन्दुओं का समावेश स्पष्ट रूप से दिखता है। 'चक्रव्यूह', 'कर्ज-वसूली', 'विकल्प', 'टूटना, पड़ोस' आदि कहानियां यथार्थ की प्रामाणिक भूमि पर लिखी गई हैं।

[1]दीपक, सुवास. (2005). चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृ. -70-71

2.2- सुवास दीपक का लेखकीय विकास

हिंदी कथा साहित्य में 1960 के बाद बदलते भाव जैसे कि- "व्यक्ति का अकेलापन, निराशा, अनास्था, आत्मपराजय, आत्मनिर्वासन, नगर- गाँव के द्वंद्व, मनोलोक की जटिलताएं, परस्पर एक दूसरे के प्रति अपरिचितता का भाव, दो पीढ़ियो का संघर्ष, परंपरा और नवीन के मध्य तनाव की स्थिति, प्रेम संबंधी भावना का बदलता हुआ रूप, आर्थिक विषमता के प्रति विद्रोह, मूल्यबोध, संत्रास की पीड़ा इत्यादि नए भाव साहित्य का विषय बनकर सामने आए हैं।"[1] सुवास दीपक को अपनी मातृभाषा डोगरी के अलावा नेपाली, हिन्दी और अंग्रेजी की गहरी समझ है। उन्हें बचपन से पढ़ने-लिखने में गहरी रुचि थी। सुवास ने अपने लेखन का प्रस्थान बिन्दु 10 दिसंबर, 1967 में लिखी गई एक नेपाली कविता को मानते हैं, लेकिन वह प्रकाशित नहीं हो पाई। लेखक के साहित्य में 60 के बाद के दशक का प्रभाव स्पष्टत: दिखाई पड़ता है। सुवास जी का पहला साहित्य लेखन नेपाली में हुआ था उसके पश्चात् वे नेपाली से हिंदी की ओर अग्रसर हुए। इसलिए इसका पहला श्रेय हिंदी की पत्र-पत्रिका जो कि साप्ताहिक एवं मासिक पत्रिकाओं में छपने वाले अंकों को है, जिन्हें सुवास दीपक जी रुचि के साथ पढ़ते और अगले अंक का बेसब्री से इंतजार करते थे। जब-जब उन पत्रिकाओं के नए अंक पढ़ते उनके लिए लेखन के नए उत्स खुलते गए।

सुवास दीपक का कथा समय भी कुछ ऐसे ही चक्रों से गुज़र रहा था। "नयी कहानी, नई चेतना तथा नए संस्कार लेकर वह सुंदर भविष्य का स्वप्न संजोकर सर्वथा नई दिशा को ओर अग्रसर होना चाहती थी और इसी बिन्दु से आरंभ होती है स्वतंत्रता की उमंगों में डूबे हुए नए भारत की यात्रा।"[2] लिहाजा, परिवर्तन साहित्य भाषा और विषय वस्तु में भी आया। सुवास दीपक हिंदी के कथाकार होने के साथ-साथ चिंतक, अनुवादक, पत्रकार, और संपादक के रूप में जाने जाते हैं। लेखक और पत्रकार के रूप में सुवास दीपक ने अपने लिए एक विशिष्ट प्रकार के रचना संसार का सृजन किया। चर्चित कथाकार, कवि, अनुवादक और पत्रकार के रूप से सुवास बीते तीन दशकों से

[1]बंसल,बीना.(2001).नई कहानी में आर्थिक संघर्ष.पृ. 92

[2] वही, पृ. 80

महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। एक प्रकार से देखें तो सेतु भाषा (डोगरी-हिंदी-नेपाली और अंग्रेजी) से परिचय के कारण सुवास दीपक के लिए अनुवाद एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया जिसके कारण उनको विशेष पहचान मिली। स्वाधीनता के बाद के कहानीकारों ने अपनी कहानियों में सामाजिक परिवर्तनों को यथार्थ रूप में दिखाया। जैसे राजेंद्र यादव ने अपने लेखन में विसंगतियों, आर्थिक संघर्ष, टूटते जीवन को अपनी कहानियों में विषयगत रूप में दर्ज किया। मिसाल के तौर पर इस दौर में धर्मवीर भारती, शेखर जोशी, अमरकांत की कहानियों में जितने भी परिवर्तन हुए उसे प्रमुख रूप से देखा जा सकता है।

1970-73 के बीच सुवास दीपक की हिंदी रचनाएं प्रकाशित होने लगी थी। 'सारिका' पत्रिका में फरवरी 1972 में 'दो मुँह वाला साँप' (नेपाली लोक कथा) छपी । भारतीय नेपाली कथाओं के विषय को लेकर सारिका के संपादक कमलेश्वर से सुवास दीपक ने निरंतर संवाद करने का प्रयास किया। कोई यथोचित जवाब न मिलने पर सुवास दीपक काफी निराश हुए। कोई उत्तर न मिलने पर स्पष्ट जाहिर था कि वह उक्त संकल्पना से कहीं न कहीं असहमत थे। इसी बीच सुवास दीपक द्वारा किया गया अनुवाद अक्टूबर 1974 के 'साहित्य निर्झर' में प्रकाशित हुआ, जिसके संपादक शामलाल मेंहदीरत्ता जी थे। इसमें भारतीय नेपाली कथाकारों की सुवास दीपक द्वारा अनूदित कई महत्त्वपूर्ण सामग्री अनुवाद के रूप प्रकाश में आई। निश्चित रूप से उनका यह योगदान अत्यंत उल्लेखनीय है।

सुवास दीपक की रचनाशीलता का फ़लक अत्यंत व्यापक है। उन्होंने हिंदी, नेपाली, डोगरी एवं अंग्रेजी सभी भाषाओं में मौलिक लेखन के साथ-साथ अनुवाद कार्य भी किया है, जिसका विवरण निम्नलिखित है-

मौलिक कृतियाँ (हिन्दी में)

अरण्य रोदन	सम्भावना प्रकाशन, हापुड़, सिक्किम से लिखा गया पहला हिन्दी उपन्यास, 1985, दूसरा संस्करण 2021
खुला दरवाजा और पेड़	विचार प्रकाशन, सिक्किम से लिखा गया पहला हिन्दी कविता संग्रह, 1995, विचार प्रकाशन, गंगटोक से प्रकाशित
चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ	निर्माण प्रकाशन, सिक्किम से लिखा गया पहला हिन्दी कहानी संग्रह, सन् 2004

गोरखा शिखर पुरुष पर केंद्रित सीरीज (हिन्दी में)

प्रथम गोरखा स्वाधीनता सेनानी दलबहादुर गिरी (इतिहास)	प्रकाशक लेखक स्वयं, 2015
अमर शहीद दुर्गा मल्ल (इतिहास),	प्रकाशक लेखक स्वयं, 2015,
नेताजी सुभाष चंद्र बोस के गायक सिपाही राम सिंह ठकुरी (इतिहास)	प्रकाशक स्वयं, 2016
नेपाली साहित्य संस्कृति संगीत के धरोहर मास्टर मित्रसेन (इतिहास)	प्रकाशक स्वयं 2017

मौलिक कृतियाँ (नेपाली में)

अभिषेक, सिक्किम का प्रथम बाल उपन्यास	1980, दूसरा संस्करण, उपमा प्रकाशन, कालिम्पोंग 2020, उत्तर बंगाल के महाविद्यालयों में बाल साहित्य के अंतर्गत संदर्भ पुस्तक के रूप में सम्मिलित
साक्षात्कार, वार्ता संग्रह	निर्माण प्रकाशन, 1987
आधारशिला, कविता संग्रह	विचार प्रकाशन, 1993
भाषा मान्यता, 'विचार' में प्रकाशित सम्पादकीय	1995, विचार प्रकाशन, गंगटोक

अंग्रेजी में

Language and Literature Sikkim Study Series	सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, सिक्किम सरकार द्वारा प्रकाशित, 2004

सम्पादन/ प्रकाशन (नेपाली)

सुधा, (नेपाली मासिक) 1978 से सन् 1979 तक	शांग्रिला प्रकाशन. गंगटोक
विचार, नेपाली पाक्षिक, अर्ध साप्ताहिक, साप्ताहिक, जून 1, 1981 से 12 अगस्त 2011 तक नियमित रूप से प्रकाशित	विचार प्रकाशन, संपादक-स्वतत्वाधिकारी- सुवास दीपक
प्रतीक, नेपाली सामयिक साहित्यिक संकलन	विचार प्रकाशन, 1987

कहिले–काहीँ, 'विचार' में प्रकाशित संस्मरण-संकलन	निर्माण प्रकाशन, 2006
एक कवि: दस कविता, 'विचार' के एक कविः दस कविताएँ स्तम्भ में प्रकाशित कविताओं का संयुक्त कविता संकलन	निर्माण प्रकाशन, 2006
विचार रजत जयन्ती विशेषांक	विचार प्रकाशन द्वारा प्रकाशित, 2006
'विचार' में प्रकाशित कवि एवं लेखक पवन चामलिङ 'किरण' की रचनाओं का संकलन	विचार प्रकाशन, सन् 2008 में
सृजन–समय	सिक्किम अकादेमी की वार्षिक साहित्यिक पत्रिका का 2008 से 2010 तक सम्पादन
अकादेमी जर्नल	सिक्किम अकादेमी की वार्षिक पत्रिका का 2008 से 2010 तक सम्पादन

अनुवाद (नेपाली से हिंदी में)

भारतीय नेपाली कहानी विशेषांक, हिन्दी मासिक 'साहित्य निर्झर' का यह विशेषांक अक्टूबर 1974 में चंडीगढ़ से प्रकाशित हुआ।	यह भारतीय नेपाली कहानियों का हिन्दी में प्रकाशित प्रथम अनुवाद है। यह विशेषांक 'भारतीय नेपाली साहित्य' की अवधारणा को सार्थक आधार प्रदान करने की दिशा में प्रथम प्रयास था।

प्रस्ताव	हिन्दी मासिक पत्रिका, पटना के जून, 1981 के अंक के 'भारतीय नेपाली कथा खण्ड' में छह भारतीय नेपाली कहानियों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित
भारतीय नेपाली कहानियाँ (निर्माण प्रकाशन द्वारा प्रकाशित भारतीय नेपाली कहानियों का प्रकाशित	प्रथम संकलन, 1996
क्रूसीफाइड प्रश्न तथा अन्य कविताएँ	कवि पवन चामलिङ 'किरण' की नेपाली कविताओं का हिन्दी अनुवाद, 1996 । यह भारतीय नेपाली कविताओं का प्रथम अनूदित संकलन है।
शिखर कथा कोश	भाग 1 और भाग 2, कमलेश्वर द्वारा सम्पादित 35 भारतीय नेपाली कहानियों का हिन्दी अनुवाद, पुस्तकायन, नई दिल्ली द्वारा प्रथम भाग 1999 और दूसरा भाग 2000 में प्रकाशित
सहयात्री	लैनसिंह बाङ्देल के प्रसिद्ध लघु उपन्यास 'लंगडाको साथी' का हिन्दी अनुवाद, निर्माण प्रकाशन द्वारा 2001 में प्रकाशित
क्रमश:	पी.अर्जुन के खण्डकाव्य 'क्रमश:' का हिन्दी अनुवाद, विश्व मानव भारतीय नेपाली साहित्य प्रकाशन, दार्जिलिंग द्वारा 2002 में प्रकाशित

अथाह (2003 में प्रकाशित)	विन्द्या सुब्बा के साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त नेपाली उपन्यास का हिन्दी अनुवाद), निर्माण प्रकाशन
एक बहती नदी	प्रद्युम्न श्रेष्ठ की नेपाली कविताओं का हिन्दी अनुवाद), हिमाली प्रकाशन, देन्ताम द्वारा 2010 में प्रकाशित
भावधन तथा अन्य कविताएँ	अमर बानियाँ लोहोरो की नेपाली कविताओं का हिन्दी अनुवाद), काव्याक्षर प्रकाशन, सिक्किम, 2015
आधी सदी की कविताएँ	केदार गुरुंग की नेपाली कविताओं का हिन्दी अनुवाद, जनपक्ष प्रकाशन, गंगटोक, 2017
दृश्य और अदृश्य	अमर बानियाँ लोहोरो की नेपाली कविताओं का हिन्दी अनुवाद), रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर, 2021
छोटी-छोटी खुशियाँ	राजेन्द्र भण्डारी की नेपाली कविताओं का हिन्दी अनुवाद), रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, 2021

हिन्दी से नेपाली में

संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र	डॉ. गोपीचन्द नारंग के समीक्षा ग्रन्थ का नेपाली अनुवाद, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 2008 में प्रकाशित

मेरा एकाउन्न कविताहरू	प्रख्यात हिन्दी कवि एवं भारत के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी के हिन्दी कविता संग्रह 'मेरी इक्यावन कविताएँ' का नेपाली अनुवाद, 2006 में निर्माण प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

डोगरी से नेपाली में

पल–विपल, (डॉ. ओम गोस्वामी के डोगरी उपन्यास 'पल–खिन' का नेपाली अनुवाद)	निर्माण प्रकाशन द्वारा 2003 में प्रकाशित। यह मूल डोगरी भाषा से नेपाली में अनूदित प्रथम प्रकाशित उपन्यास है जिसका सन् 2003 में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार के लिए चयन किया गया था।
कमालपुरको चमत्कार	डॉ. ओम गोस्वामी के डोगरी बाल उपन्यास 'कमालपुर दी करामात' का नेपाली अनुवाद, निर्माण प्रकाशन द्वारा 2003 में प्रकाशित

अंग्रेजी से नेपाली में

गुरु पद्मसम्भव	पी. थोण्डुप द्वारा लिखित Guru Padmasambhava पुस्तक का नेपाली अनुवाद, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, सिक्किम सरकार द्वारा 2004 में प्रकाशित

अटल योद्धा	सिक्किम के मुख्यमन्त्री पवन चामलिङ की योगेन्द्र बाली द्वारा लिखित जीवनी Daring to be Different का नेपाली अनुवाद, सह–अनुवादक: विजय कुमार राई, क्वालिटी स्टोर्स, गंगटोक द्वारा 2003 में प्रकाशित
युमा धर्मको दार्शनिक विश्लेषण	जसराज सुब्बा की Spiritual Analysis of Yumaism पुस्तक का नेपाली अनुवाद, याक्थुङ मुन्धुम सापलोपा, गंगटोक द्वारा 2011 में प्रकाशित
दम्बदेणि-अस्न (दम्बदेनिया का इतिवृत्त) सार्क सांस्कृतिक केन्द्र, श्रीलंका द्वारा प्रकाशित	सिंहली भाषा में लिखित और रोहिणी परनवितन के अंग्रेजी अनुवाद से नेपाली अनुवाद, 2014

अंग्रेजी से हिन्दी में

जमीन से जुड़े एक राजनीतिज्ञ का सफरनामा	सिक्किम के मुख्यमन्त्री पवन चामलिङ की योगेन्द्र बाली द्वारा लिखित जीवनी Daring to be Different का हिन्दी अनुवाद, सह–अनुवादक पदम क्षेत्री, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली द्वारा 2009 में प्रकाशित
विभिन्न विधाओं में तीन दर्जन से ज्यादा सरकारी दस्तावेजों व ग्रन्थों का अंग्रेजी, नेपाली और हिंदी में परस्पर अनुवाद।	
देश की शीर्ष हिन्दी पत्रिकाओं में भारतीय नेपाली कहानियों और कविताओं के अनुवाद प्रकाशित।	

पुरस्कार एवं सम्मान

ग्रीन अवार्ड	पर्यावरण लेखन के लिए ग्रीन सर्कल, गंगटोक (सिक्किम), 1997
भानुरत्न साहित्य पुरस्कार	भानुरत्न साहित्य गुठी, सिंगताम (सिक्किम), 1998
शिवकुमार राई स्मृति पुरस्कार	दक्षिण सिक्किम साहित्य सम्मेलन, 2002
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार, 2003	डोगरी उपन्यास पल–खिन के नेपाली अनुवाद के लिए
भानु पुरस्कार, नेपाली वाङमय की श्रीवृद्धि के लिए नेपाली साहित्य परिषद, सिक्किम	2003
महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा अन्तरराष्ट्रीय सम्मान	महाकवि देवकोटा शताब्दी महोत्सव 2010 के अवसर पर नेपाली वाङमय की श्रीवृद्धि के लिए काठमांडू (नेपाल) में आयोजित समारोह में प्राप्त।
सिक्किम सेवा सम्मान (पत्रकारिता)	सिक्किम सरकार, 2014
गत पाँच दशक से अधिक समय से नेपाली भाषा और साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए अनुवाद और सृजनात्मक लेखन के माध्यम से अनवरत योगदान के लिए नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कालिम्पोंग द्वारा 24 वाँ पारसमणि प्रधान पुरस्कार	2021
विश्व हिन्दी सम्मेलन, 18 से 20 अगस्त 2018 की अवधि में विदेश मन्त्रालय, भारत सरकार और मॉरीशस सरकार द्वारा संयुक्त रूप से मॉरीशस में आयोजित 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में सिक्किम सरकार द्वारा मनोनीत आधिकारिक सदस्य के रूप में सहभागिता।	

2.3 सुवास दीपक और समकालीन कथाकार

सन् 1954 में डॉ.जगदीश गुप्त के संपादन में निकली 'नयी कविता' नाम से नई विधा का आरंभ माना गया है। साठोत्तरी कहानीकारों द्वारा यह स्वयं भोगा हुआ यथार्थ तो उनकी कहानियों में सामाजिक विघटन, मोहभंग, नवीन परिस्थिति का अन्वेषण, नए संबंधो की देन के रूप में दर्ज है। इन कहानियों में भावबोध के स्तर पर साम्य बोध नहीं है, बल्कि हर किसी का अपना दुःख एवं अपना सुख है। इस दौर में संत्रास और भय का व्यक्ति द्वारा अनुभव किया गया भाव बोध अनेक कहानियों में स्पष्ट दिखता है। खासकर मध्यवर्गीय परिवार, महानगरीय परिवेश में व्याप्त कठिनाई जीवन का एक अंग बन चुकी है। व्यक्ति अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाता है और इस झूठ को बुनते-बनाते उसे संत्रास और भय होने लगता है।

नये संबंधो में विघटन स्वतंत्रता के बाद समाजों में दिखाई पड़ता है और यह बदलाव परिवार और समाज के भीतर पति-पत्नी, पिता-पुत्र, भाई-बहन के विघटन के अलावा दो पीढ़ियों के संघर्ष को भी दर्शाता है। स्वतंत्रता के उपरांत पुरानी पीढ़ी के लोग पुरानी मान्यताएं स्वयं में पाते हैं तो दूसरी ओर आज के नवयुवकों को प्राचीन मान्यताएं उनके जीवन के लिए कोई मोल नहीं रखती। आज युवा पीढ़ी अपनी स्वतंत्र सोच की महत्वाकांक्षी है। जिस कारण एक ही परिवार में मानसिक दरार और परिवार से अलग हो जाने जैसी घटनाओं में बढ़ोतरी हुई। परिवार विघटन और दो पीढ़ी के संघर्ष के टकराव की स्थिति ज्ञानरंजन की कहानी 'पिता' में चित्रित है। उनके कथा की जमीन एक स्थान पर स्थिर न होते हुए भी गातिशील और जीवंत हैं। 'बुद्धिजीवी', 'फेंस के इधर-उधर', 'अमरूद का पेड़', 'शेष होते हुए', 'याद और याद', 'संबंध', 'सीमाएँ' आदि कहानियों में आजाद भारत में आम आदमी के जीवन में आये परिवर्तन के कारण हताशा, निराशा, ऊब, अकेलापन, तनाव और त्रास का प्रभाव अधिक दिखता है। ज्ञानरंजन की रचना प्रक्रिया के विषय में यह उद्धरण उल्लेखनीय है– "आज कहानी रचना बहुत कठिन हो गयी है और अपनी दयनीय, अभाग्यपूर्ण और व्यंग्यात्मक जीवन से असंपृक्त होकर कहानी निर्मित करना अब हमारे लिए संभव नहीं रहा। सुविधाओं या 'इस्टेब्लिशमेंट' को स्वीकार करके ईमानदार और सच्चा लेखन लंबे समय

तक कर पाना काफी कठिन है, इसीलिए सुविधाओं के अभाव में और 'इस्टेब्लिसमेंट' के प्रति विद्रोह का भाव अपने कम लिखने का मेरे मन में किंचित भी विचलन नहीं है।"[1] कम लिखकर अपनी उपस्थिति दर्ज करने वाले प्रमुख लेखकों में सुवास दीपक का नाम भी उल्लेखनीय है।

साठोत्तरी कहानीकारों में सुवास दीपक एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। सिक्किम में सुवास दीपक का पहला हिंदी उपन्यास 'अरण्य रोदन' काफी चर्चित उपन्यास है। उपन्यास में देश में चल रहे भ्रष्टाचार, राजनीतिक षड्यंत्र और उच्च पद के गलत उपयोग के साथ ही मुख्य पात्र अपने आस-पास हो रहे अन्याय-भ्रष्टाचार से परिचित हैं और इस चक्रव्यूह में स्वयं को असहाय, आक्रोशित, घृणित एवं ठगा हुआ महसूस करता है, क्योंकि उनके पास लड़ने का कोई साधन नहीं है।

सुवास दीपक की कहानियों के मूल स्वर में जीवन संघर्ष, शोषण, प्रशासन-तंत्र का भ्रष्टाचार और अन्याय के विरूद्ध कुछ न करने में स्वयं को हताश, असहाय और अंतर्द्वंद्व में फंसे जीवन का वर्णन अधिक है। यह कहानियाँ सामाजिक संघर्ष व अंतर्विरोध की समस्याओं का निर्वाह करती हैं। सुवास दीपक ने इन स्थितियों को जीवन के हर पहलू से जोड़कर चित्रित किया है। इन्होंने सरकारी भ्रष्टाचार, राजनीतिक स्थिति, युवा आंदोलन, मोहभंग, बेरोजगारी आदि को अपनी रचनाओं में दर्ज किया है। सुवास दीपक की कहानियाँ एवं उपन्यास व्यंग्यात्मक हैं। सुवास दीपक की 'विकल्प' कहानी का पात्र 'लकड़ा' नामक मजदूर व्यवस्था पर कटाक्ष करता है। लकड़ा को फैक्टरी में स्टोर कीपर के काम से भ्रष्टाचार के कारण निकाला गया। वह दूसरी जगह पत्थर तोड़ने की मजदूरी करने लगा, जहाँ हफ्ते के दिहाड़ी पर काम करने के बाद मजदूरों को मजदूरी नहीं मिली थी। लकड़ा मुनीम और ठेकेदार से अपनी मजदूरी मांगने जाता है, लेकिन मुनीम बिना खाता देखे ही उसे पैसे देने से मना कर दिया। लकड़ा का परिवार कई दिनों से सड़ी गोभी के पत्ते, सड़े आलू खा रहा होता है। उस शाम लकड़ा अपने परिवार को देखता है और अपनी अतीत के दिनो में खो जाता है। उसकी पहली बीबी भी इसी तरह किसी सेठ की भेंट चढ़ गयी थी। उसने उस ठेकेदार को चाकू मार दिया था, वह वही चाकू लेकर मुनीम को रास्ते में मार डालता है। सुबह बस स्टेशन में पुलिस उसे पकड़ लेती है।

[1] वर्मा, सुरेन्द्र (2000). नई कहानी: दशा दिशा. पृ. 44

लकड़ा द्वारा अपराध स्वीकार करने के बाद भी पुलिस की यातना कम नहीं होती तब- "कड़कती आवाज में उसने कहा था- "मैं हत्यारा नहीं हूँ ...हत्यारा फैक्टरी का स्टोर कीपर है, ठेकेदार है। मैंने कोई हत्या नहीं की। इस पेट के लिए अपने बीवी-बच्चों के लिए दो रोटियाँ भी आपकी व्यवस्था मुझे मुहैया नहीं करा सकी। पूरी हड्डियाँ गला कर भी भूखे मर जाते हैं हम !....मेरे बच्चे मेरी बीवी पंद्रह दिन से सड़े-गले पत्ते उबाल कर खा रहे हैं। उन्हें भर पेट रोटी कौन देगा? आप देंगे? आप सिर्फ उन्हें कुत्तों की तरह सड़-सड़ कर मर जाने के लिए मजबूर कर देंगे। उन्हें हत्यारे बनने के लिए मजबूर करेंगे ...हा ....हा.....हा.....।"[1] वह पागलों की तरह चिल्लाने लग गया था और फिर जैसे हाँफता हुआ लुढ़क गया था...।

उक्त कहानियों के जरिये आर्थिक विपन्नता, बेकारी, गरीबी और अनुशासनहीनता, व्यक्ति के टूटने, बेरोजगारी की यातना आदि की समस्याओं को दिखाया गया है। दूधनाथ सिंह की 'स्वर्गवासी' कहानी में भी पटवारी की नौकरी करने वाला आदमी को धोखे से फँसाकर नौकरी से निकाला गया है, जिसके बाद वह अपने जीजा के घर आता है, वहाँ के वातावरण को देखकर वह पूरी तरह टूटता जाता है और हताश होकर कुछ नहीं करता है। बेकारी में समय काटता है और अंत में अपने बहनोई के घर पर निर्भर रहता है। सुवास दीपक की 'टूटना' कहानी भी कुछ इसी प्रकार है। आज के समय में पत्नी-पति दोनों की कमाई से घर चलता है, क्योंकि सामाजिक स्थितियों ने आर्थिक स्थितियों को प्रभावित किया है। 'टूटना' कहानी में पति बेरोजगार है और दिन भर बेकारी की कारण उसे शराब की लत लग गई। वह अपने में ही खोया रहता है, आस-पास क्या हो रहा है उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। इस कहानी से कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं जो बेरोजगारी और बेकारी को व्यक्त करते हैं।

"शाम को नित्य की तरह पत्नी थकी मांदी अपनी ड्यूटी से लौटी है और शाम की पेट पूजा के लिए स्टोव जलाने लगी है। देखा, स्टोव में तेल नहीं, वह झल्ला उठती है। … मैं पड़ा छत की शहतीरियों को अनगिनत बार गिन कर फिर शुरू से गिन रहा था। वह भी मेरे पास चारपाई पर बैठा

[1]दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृ. -20

था। पत्नी के दोबारा कहने पर मैं वास्तविक धरातल पर उतरता हूँ - -"हूँ हूँ तेल नहीं है, तो लाना पड़ेगा। और क्या क्या लाना है?... आटा सिर्फ चार रोटियों का है! सब्जी भी नहीं है।"[1]

पति अपनी बेरोजगारी और बेकारी के कारण पत्नी पर आश्रित है और इस कारण वह अपने आपको हीन और तुच्छ समझने लगा है। हर तरफ से असहाय, हताश, निराश और घुटन में जीने लगता है। इन सभी से मुक्ति की आकांक्षा हेतु वह नशे की ओर जाता है और अंततः उसे शराब की लत लग जाती है। कहानी के केंद्र में शराब नहीं है, लेकिन समाज में व्याप्त बेरोजगारी के कारण जो कुंठा घर कर गई है उससे निकलने के लिए आसान रास्ता शराब ही दिखती है. कुछ समय के लिए शराब के आगोश में आकर भले ही गरीबी, बेबसी और लाचारी को भूल जाएं, लेकिन यह किसी भी चीज का अस्थाई इलाज नहीं है।

गौरतलब है, सुवास दीपक ने अपने सभी कहानियों में साठ के दशक की जन समस्याओं को उद्घाटित किया है। इसी के समानान्तर कमाल जोशी की-'जीवन कृत', श्रीमती विजय चौहान की 'एक बुतशिकन का जन्म' आदि कहानियाँ साठोत्तरी हिंदी कहानी की प्रमुख कहानियों के रूप में उल्लेखनीय हैं जिसमें बेरोजगारी और आर्थिक विषमता केंद्र में है।

सुवास दीपक के समकालीन लेखकों में ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, से रा यात्री, रमेश बत्रा इत्यादि हैं। सुवास दीपक अपने लेखकीय कौशल एवं सृजनात्मकता के कारण ही सरकारी नौकरी छोड़कर पत्रकारिता के पेशे में आए थे। इस पेशे में रहकर उन्होंने अपनी सृजनशीलता को बरकरार रखा और कथा साहित्य की ओर उन्मुख हुए। उनका मानना है कि वह अपने समकालीनों में कुछ महत्वपूर्ण रचनाओं को लगातार पढ़ते रहे। इसी दौरान भारतीय नेपाली कहानियों और कविताओं और महत्वपूर्ण अनुवादों से उनका परिचय हुआ। जिसे वह लगातार पढ़ते और प्रभावित होते रहे।

सुवास दीपक के समकालीन बिर्ख खड़का डुवर्सेली का नाम भी प्रमुखता से लिया जा सकता है । सुवास दीपक की सृजनशीलता किसी एक विधा में बंधकर आगे नहीं बढ़ी है बल्कि

[1]दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृ. -25

उन्होंने कई विधाओं में अपनी रचनाशीलता का परिचय दिया है। उनकी ख्याति एक अच्छे अनुवादक, संपादक और लेखक के रूप में रही है। उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालें तो हम पाते हैं कि राजनीतिक व्यंग्य के अलावा साठ के बाद की साहित्य-प्रवृत्ति उनके यहाँ स्पष्टतः द्रष्टव्य है। भ्रष्टाचार, मोहभंग, निराशा, बेरोजगारी, प्रगतिशीलता आदि विषय उनकी रचनाओं को पुष्ट करती है। 'चक्रव्यूह', 'टूटना', 'विकल्प', 'ग्राम सेवक' आदि इसी तरह की कहानियां हैं जिनमें 60 के दशक की प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है। सुवास की रचनाओं में बेचैन, संवेदनशील, जागरूक व्यक्ति दिखाई देते हैं। लेखक अपने समय की सभी विकृतियों से परिचित है। उनके पात्रों में व्यवस्था से लड़ने के लिए साहस नहीं है। इसीलिए इनके पात्र प्रतिरोध कम करते हैं।

सुवास दीपक मूलतः समाज में हो रहे परिवर्तन, जिस कारण शहरों में दिखावटी और भ्रष्टाचार में फँसे व्यक्ति किस स्थिति से गुज़र रहा है, का चित्रण कहानियों में करते हैं। स्वतंत्रता पश्चात् व्यवस्था को सुवास दीपक ने निकट से परखा है कि कैसे साधारण व्यक्ति को धोखे से व्यवस्था में फसाया जाता है और वह अंततः नौकरी छोड़ने तक के लिए विवश हो जाता है। सुवास दीपक की कहानियों में बेरोजगारी के साथ-साथ आधुनिक नारी का भी चित्रण दिखता है। डॉ. प्रेम शर्मा का कथन है कि - " साहित्यकार ही समय-समय पर अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से समाज में व्याप्त अनाचार, वर्ग वैषम्य, कमजोर वर्गों का शोषण, अशिक्षा, अनीति, भ्रष्टाचार इत्यादि समस्याओं को समाज के सम्मुख लाकर उसके परिष्कार का माध्यम बनते हैं एवं देश के उत्थान में निरंतर सहायक होते हैं। कहानी संग्रह में आधुनिक शिक्षा, सामाजिक संरचना और नैतिक मूल्यों में गिरावट, जिसके चक्रव्यूह में आज का युवा फंस गया है, यथार्थवादी कहानियाँ हैं। इस व्यवस्था से उभरे प्रश्न समाज में अवश्य जागरूकता लाएँगी। हिंदी साहित्य में आपसे अनेक अपेक्षाएँ हैं।"[1]

[1] शर्मा, डॉ. प्रेम, निदेशक, भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश, शिमला, 19 दिसंबर, 2005 के एक पत्र से उद्धृत

अध्याय-3 सुवास दीपक की कहानियों का अंतर्वस्तु विश्लेषण

3.1 स्वाधीनता बनाम मोहभंग

3.2 आर्थिक समस्या के कारण बदलता परिवेश और संबधों में विघटन

3.3 प्रेम, यौन कुंठा एवं स्त्री-पुरुष संबंध

3.4 मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष एवं विसंगतिबोध

3.5 शिक्षा व्यवस्था का विघटन एवं बेरोजगारी का दंश

3.1 स्वाधीनता बनाम मोहभंग

मोहभंग से तात्पर्य है, भ्रांति का टूटना या भ्रम का टूटना। भारत देश को आजादी-पूर्व दिखाई गई आशाएँ, सपने और भ्रम के टूटने से मोहभंग हुआ। आजादी से जनता को बड़ी उम्मीदें थी। आम जनमानस ने व्यक्ति को रोटी, कपड़ा और मकान के अलावा शोषण मुक्त राष्ट्र, एकता और बराबरी के अधिकार के सपने देखे थे, लेकिन आजादी मिलने के बाद ये सपने और उम्मीदें टूटने लगी। सन् साठ के बाद लिखे जाने वाले इस समय के साहित्य में मोहभंग स्पष्ट रूप में चित्रित है। जिसमें आजादी पूर्व दिखाये गये तमाम सुनहरे सपनों का मोहभंग हो गया था।

गुलामी से मुक्ति के साथ ही देश का बंटवारा भी हुआ और भारत व पाकिस्तान नाम के दो मुल्कों की नींव पड़ी। भारत और पाकिस्तान दोनों समाज में इससे उथल-पुथल मच गई। बटवारे के साथ हिंदू -मुस्लिम दंगे शुरू हुए जिससे लूटपाट, अत्याचार, भयंकर खून-खराबों के साथ विश्वासों का भी बटवारा हुआ। इन सब बातों के कारण मानवीय संवेदना और उसकी मानसिकता को गहरी ठेस पहुँची। दूसरी ओर विभाजन से उपजी शरणार्थियों की समस्या थी। पंजाब में इसका गंभीर रूप देखने को मिला। जिसमें तमाम परिवार एक दूसरे से छूट गये। यह दृश्य अत्यंत भयावह व वेदनापूर्ण था।

1952 में पंचवर्षीय योजना का सूत्रपात हुआ, लेकिन सारी योजनाएं फाइलों तक ही सीमित रही। पंचवर्षीय योजना सफल नहीं हो सकी, फलस्वरूप इस समय व्यक्ति में निराशा का भाव उत्पन्न हुआ, मध्यवर्ग और निम्न-मध्यवर्ग वस्त्र, अन्न और आर्थिक विषमता से गुज़र रहा था, बेरोजगारी बढ़ती जा रही थी। कांग्रेस सरकार या नेहरू युग में भारतीय सामाजार्थिक ढाँचे काफी कमजोर पड़ चुके थे, जिसको सुधारने के लिए नेहरू ने कई प्रयत्न तो किए, लेकिन असफल रहे। भूखमरी, बेरोजगारी, गरीबी और आर्थिक कठिनाई नेहरू युग में खत्म नहीं हो पायी। राजनीति में उथल-पुथल होने के कारण इसका सीधा प्रभाव समाज पर पड़ रहा था। इस समय समाज में भ्रष्टाचार, बेईमानी और अवसरवाद आदि के दृश्य दिखाई देते हैं।

"इस काल में अवसरवादी, स्वार्थ, पद और सत्ता के लालची कांग्रेस नेताओं ने जनता की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। जिंदगी की असहाय, भयावह, मारक परिस्थितियों में जूझता, संघर्ष करता आम-आदमी कुंठा, पीड़ा और तनाव का शिकार हो गया। इसकी असफलताओं के कारण मनुष्य की आस्था और डगमगाने लगी। सातवें दशक में यह स्थिति बिहार और गुजरात में नज़र आई। सत्तारुढ़ कांग्रेस दल आपसी कलह में डूबा रहा और भूखी जनता के अनाज के गोदामों में गोलों का उपयोग किया गया। आंदोलन जोर पकड़ता गया। 4 नवम्बर, 1974 को पटना विशाल रैली में बदल गया। 25 जून, 1975 को इंदिरा गांधी ने त्यागपत्र न देकर लोकतंत्र की अवहेलना करते हुए 'आपातकाल' की घोषण कर दी। आपातकाल के नाम पर हजारों लोगों को जेल में बंद कर दिया गया।"[1]

सन् साठ के बाद के हिंदी कथा साहित्य में तनावों, संघर्षों एवं आकांक्षाओं की व्यथा व्यक्त हुई है। साठोत्तरी कहानी में सुवास दीपक की उपस्थिति एवं उनके कथा-साहित्य में स्वाधीनता के बाद मोहभंग की स्थिति स्पष्टतः द्रष्टव्य है। यह मोहभंग आश्वासन एवं भाषण के प्रति था। सुवास दीपक की कहानियों में मोहभंग की स्थिति के कारण नए संबंधों का निरूपण, पीढ़ियों के संघर्ष, अजनबीपन, व्यंग्य और आक्रोश का चित्रण किया गया है। सुवास दीपक की कहानियों में सन् साठ के बाद देश की व्यवस्था में होने वाले मोहभंग का वर्णन मिलता है। "देश की जनता ने जो सुनहरे सपने देखे थे, वे आजादी के कुछ वर्षों के भीतर ही टूटने लगे थे, जिससे देश आजादी से भारत की तमाम जनता का मोहभंग हो गया था।"[2]

'चक्रव्यूह तथा अन्य कहानी' संग्रह की पहली कहानी 'धुलते बिम्ब' में मकान मालिक साल में एक ही बार आता है, वो भी सिर्फ साल का किराया वसूलने के लिए। किरायेदार आर्थिक संकटों के कारण पत्नी का जेवर बेच कर किराया चुकाता है। कहानी बहुत ही सरल और स्पष्ट भाषा में लिखी गई है। स्वतंत्रता के पश्चात मध्यवर्गीय नगरीय जीवन में परिवार में आर्थिक संकटों के

[1] प्रसाद, डॉ.कमलेश्वर.(1986).हिन्दी में लंबी कविता. पृ. 11
[1]गुलाटी, डॉ.येश.(1980).कविता और संघर्ष चेतना. पृ. 19

कारण व्यक्ति की जीवन शैली में बदलाव आ गया था, साथ ही साथ मकान मालिक का डर, किराया समय से न दे पाने पर पुलिस केस या मकान से ही निकलवा न दे इत्यादि का डर लगातार बना रहता था। 'धुलते बिम्ब' कहानी का एक उदाहरण द्रष्टव्य है- "विनोद शर्मा शाम को खाना खाने के बाद सड़क पर घूम रहा है और सोचता है कि- काफी दिनों से आकाश में गर्द छाई है, धूप भी कितने दिनों से नहीं निकली, आँधी और वर्षा से यह सब मिट जाएगी और आकाश कुछ समय के लिए साफ हो जाएगा जैसे मेरे मन में जमी धूल की परत कुछ हद तक पत्नी का एक जेवर बेचने से धुल गई है, डर का फन जो मेरे सिर पर बैठा था, हट गया है।

परंतु यह धूल की परत अभी तक पूर्ण रूप से नहीं उतरी है और फिर जमनी शुरू हो गई है।"[1]

इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति जैसे-तैसे गुजारा कर रहा है, लेकिन व्यक्ति के मन में कहीं न कहीं परिस्थिति से निकलने की उम्मीद अब भी बाकी है। लेकिन यह उम्मीद उसे बहुत आगे तक नहीं ले जाती और फिर से आशंका के बादल छाने लगते हैं। शासन व्यवस्था, परिस्थिति, आर्थिक संकट और शोषण आदि से समाज में व्यक्ति का मोहभंग हो गया। "आजादी के बाद भी हमारे देश के नेताओं ने पहले वाली शासन व्यवस्था को ही कायम रखा था। पहले की तुलना में नौकरशाही, पुलिस, कचहरी, दमन तथा शोषण के तरीकों में कोई विशेष अंतर नहीं था। सारा का सारा शासन तंत्र वही था। एक तरफ जनता के हितों की रक्षा की जा रही थी, तो दूसरी तरफ उनके अधिकारों को छीना जा रहा था। सन 1948 में कम्युनिस्ट पार्टी, अखिल भारतीय ट्रेड यूनिट, किसानों, विद्यार्थियों के संगठनों, उग्रवादी समाचार पत्रों के खिलाफ एक आम हमला बोल दिया गया। सरकार ने पश्चिमी बंगाल, मद्रास तथा दूसरे प्रांतो में यह कार्य करना असंभव बना दिया। मजदूर वर्ग के सभी नेता पकड़ लिए गए। जेलों के बाहर निहत्थे हड़ताल कर्मियों तथा जेलों के अंदर राजनीतिक कैदियों पर गोलियां चलवा कर बहुत से लोगों को मौत के घाट पहुंचा दिया गया। अंग्रेजी सरकार ने जनता को दबाने के जो भी नियम- कानून बनाए थे; उनका प्रयोग करके भारत

[1]दीपक, सुवास. (2005). चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृ. -11

सरकार भी जनता को दबाने का कार्य कर रही थी । सन् 1947 में लगभग पच्चीस हज़ार मजदूर तथा किसान नेता जेलों में थे।"[1]

आजादी से किसानों और मजदूरों को पूरी उम्मीद थी, लेकिन देश आजाद होने के बाद व्यवस्था में गुणात्मक सुधार नहीं हुआ। शासक के वादे, भाषण, मानवता का विकास, आश्वासन सिर्फ बातों में ही रह गयी और वायदे सफल होते-होते रह गए। 'विकल्प' कहानी में मजदूर अपने परिवार की सुरक्षा और दो वक्त की रोटी देने के लिए फैक्ट्री में पत्थर तोड़ने की मजदूरी करता है। किसी अधिकारी के बेईमानी के कारण उसे फैक्ट्री से निकाल दिया जाता है, जब दूसरी जगह भी बईमानी और शोषण का शिकार होता है तो लकड़ा अपने आप को काबू नहीं कर पाता है और अपनी रामपुरी चाकू से मुंशी की हत्या कर देता है। पकड़े जाने पर जेल में कई यातना और जानलेवा मार के अलावा अपराध स्वीकार कर लेने के बावजूद भी कभी न खत्म होने वाली यातना मिली। कहानी के जरिये लेखक किसानों, मजदूरों की व्यवस्था से उठे मोहभंग को चित्रित करता है। सुवास दीपक इस कहानी में लिखते हैं - "....लकड़ा फांसी की प्रतीक्षा कर रहा है।....उसका परिवार, उसकी बीबी, बच्चे न जाने कहाँ है? लावारिस कुत्तों की तरह गंदी नालियों में मुंह मारते रहेंगे.... लड़के बड़े होकर बाप की तरह किसी की हत्या करके फाँसी के फंदे पर झूल जाएंगे....जेलें तरक्की करती जाएंगी। ठेकेदारों को आधुनिक सभ्यता के निर्माताओं के अलंकार मिलते रहेंगे....व्यवस्था के बहरे कान और खोखले दिमाग लकड़ा जैसों का निर्माण करते रहेंगे....क्या विकल्प है ? कोई जवाब देता क्यों नहीं? लकड़ा इसका जवाब जेल के सिकंजों से अपनी दुर्दंत चुप्पी के जरिये माँगता है....।"[2]

आम जनता का शोषण, बेईमानी, भ्रष्टाचार, भूखमरी, निराशा, गरीबी, अत्याचार, व्यवस्था से मोहभंग का वर्णन सुवास दीपक की कथा-रचना का अहम विषय है। चुनाव पर चुनाव होता रहा, लेकिन आम-जन सरोकारों में कोई परिवर्तन नहीं आया। फिर भी लोगों के मन में शासन

[1] नवल, डॉ.नन्द किशोर. (1950). कविता की मुक्ति. पृ. 130-131
[2]दीपक, सुवास. (2005). चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृ-20

व्यवस्था के प्रति निष्ठा बनी रही। इसी आस्था और विश्वास की वजह से सरकारें अपनी निरंकुशता के साथ सत्ता पर काबिज रहीं। आम जनमानस में मोहभंग की स्थिति थी, लेकिन उसको लेकर कोई जन आन्दोलन नहीं हुआ जो सत्ता को उखाड़ फेंके।

3.2 आर्थिक समस्या के कारण बदलता परिवेश और संबधों में विघटन

बदलते परिवेश के साथ-साथ समसामयिक वैषम्यजन परिस्थितियों का इतिहास अपने-आप जुड़ जाता है। कथा साहित्य में यह परिवेश स्पष्टतः द्रष्टव्य है। कहानी का विकास एवं अंतर्वस्तु में परिवर्तन तत्कालीन विषमता के कारण होता है। कहानी किसी भी युग की क्यों न हो उसका आधार देश के परिवेश से अलग नहीं होता। यह बदलती व्यवस्था परिवर्तन के साथ-साथ कहानी लिखी जाती है, जिसका संबंध मानव अनुभूति पर आधृत होता है। कहानी के जरिये उस युग में क्या हुआ था और क्यों हुआ आदि सूचनाएँ मिलती हैं।

सन् 60 के पश्चात की कहानी में सामाजिक मूल्यों के परिवर्तन बोध को लेकर अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं। समाज परिवर्तन की पृष्ठभूमि में कोई न कोई परिवेश अवश्य कार्य करता है। स्वतंत्रता के उपरांत कई योजनाओं के द्वारा देश के विकास हेतु लगातार प्रयत्न हुआ, लेकिन सारी योजनाएं यथार्थ रूप में फलीभूत नहीं हो सकीं। "आधुनिकता की विभिन्न आकृतियों, जो यूरोपिय समाज में कल तक बहुत तीव्र थी, सांस्कृतिक संक्रमण के रास्ते भारतीय रचना भूमि की आधार भी बनी हैं। कवियों, कथाकारों, नाटककारों की लंबी सूची है, जिनकी रचनाओं में आधुनिकीकरण की स्थूल प्रक्रिया से रचनात्मक भूमिका संवेदना के रूप में प्रतिबिंबित है।"[1] यह साहित्य में बदलती जीवन दृष्टि की देन है। "व्यक्ति का अकेलापन, निराशा, अनास्था, आत्म-परायापन, आत्म-निर्वासन का भाव, दो पीढ़ियों का संघर्ष, परंपरा और नवीन के मध्य तनाव की स्थिति, प्रेम संबंधी भावना का बदलता स्वरूप इत्यादि नए भाव साहित्य का विषय बनकर सामने आए हैं, जो साहित्य

[1]विमल, गंगा प्रसाद . (1978). आधुनिक साहित्य के संदर्भ में. पृ. 182-183

को आधुनिकता का जामा पहनाते हैं।"[1] आधुनिकता के अधिकांश भाव सुवास दीपक की कहानियों में द्रष्टव्य है।

60 के बाद के लेखक सुवास दीपक की कथा-दुनिया में परिस्थितियों की भीतरी एवं बाहरी टकराव, आम आदमी की विडंबना, समकालीन जीवन का मोहभंग, भ्रष्टाचार, राजनीति के बदलते स्वरूप, सामाजिक व्यवस्था और शोषित-पीड़ित अनुभूति से गहरा रिश्ता है। देशवासी आजादी मिलने से सुखद जीवन के मोह से भर गये। आजादी मिलने के बाद जीवन के संघर्ष और अनेक विकट स्थितियों के कारण फिर वह मोह टूटता चला गया। साठोत्तरी के दौर के लगभग सभी लेखकों ने अपने साहित्य में उक्त समस्याओं को दर्ज किया है। सुवास की कहानियों में भी वही कथ्य है जो साठोत्तरी के अन्य लेखकों के यहाँ उपस्थित है।

सुवास दीपक ने मध्यवर्गीय जीवन की यातना, बेबसी, लाचारी को प्रमुख तरजीह दी है। उन्होंने जिन सरोकारों का अनुभव किया है उसे कहानियों में उपस्थित किया है, क्योंकि उनका लक्ष्य मात्र भावनाओं का वर्णन ही नहीं अपितु वास्तविक भावनाओं का सप्रसंग सटीक चित्रण करना भी रहा है। समाज में व्याप्त किसानों व मजदूरों की समस्या, नगरीय जीवन की त्रासदी आदि शामिल है। मध्यवर्गीय नारी का संघर्ष, पीड़ा एवं हाशिए के दृश्यों के साथ-साथ राजनीतिक जागरूकता का परिचय देने के लिए कभी प्रजातंत्र की उपलब्धियों और सीमाओं का मूल्यांकन किया है तो कभी उनकी सार्थकता पर प्रश्नचिन्ह लगाकर भ्रष्टाचार की चर्चा भी की है। शासन व्यवस्था पर भरोसा सिर्फ आशा बनकर रह गई है। प्रजातंत्र की आड़ में आज भी सत्ताधारी लोग अपनी ही झोली भर रहे हैं। इन सब बिन्दुओं पर लेखक का तर्कपूर्ण विचार कहानियों में विद्यमान है। सुवास दीपक की कहानी 'धुलते-बिम्ब' में समकालीन शहरी जीवन की समस्या, पारिवारिक तनाव, व्यस्त जीवन, अकेलापन और असुरक्षित भावबोध को कहानी केंद्र में रखा है। इस दौर के लेखन में जो विद्रोह दिखता है, वह राजनीति, मंहगाई, अकाल, सामाजिक समस्या, धार्मिक दंगे आदि का समावेश इनकी कहानियों में चित्रित हैं। सुवास दीपक ने अपनी कहानी 'तुमि आमा के

[1]बंसल, बीना. (2001). नई कहानी में आर्थिक संघर्ष. पृ. 91-92

मारते परोना' में सामाजिक रूढ़ियों पर व्यंग्य किया है। सुवास दीपक ने कहानी के जरिये जनता में राजनीतिक जागरूकता का आह्वान किया है। राजनीति समाज की नैतिकता का भार उठाती है, लेकिन आज इसके ठीक विपरीत है। आज राजनीति नैतिकता-विहीन हो गई है। सुवास दीपक की अधिकांश कहानियाँ प्रशासनिक भ्रष्टाचार, राजनीतिक कूटनीति, जनता की निरीहता और अज्ञानता से संदर्भित है। वे अपनी इन कहानियों में शासन व्यवस्था और राजनीति पर करारा व्यंग्य भी करते हैं। इस समय राजनीतिक चेतना से संबंधित अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं, जो क्षोभ, आक्रोश, विद्रोह, तनाव को दर्शाती हैं।

सुवास दीपक की 'तुमि आमाके मारते पारोना' छात्र आंदोलन के अनेक पहलुओं को उजागर करती है। प्रशासन के विरुद्ध क्रांतिकारी नारेबाजी करते अचानक छात्र सूनसान प्लेटफार्म में पागलों की तरह चिल्ला रहे हैं –"यू गिव मी ब्लड, आय विल गिव यू फ़्रीडम, काउंटर पर बैठे लड़के उसकी हरकतों का अभी तक लुत्फ़ ले रहे थे और चे को पढ़ने वाला भी पालथी मारे उसे देख रहा था।...समूचा हिंदुस्तान मेरी आखों में घूम चुका था बह बाबला सा लड़का मुझे बाबला कतई नहीं लग रहा था, बल्कि शोषित युवा-शक्ति का प्रतीक लग रहा था।"[1] यह कहानी विसंगति बोध के साथ-साथ सत्य की वास्तविकता का उद्घाटन करती है। स्वातंत्र्योत्तर समाज में अनेक परिवर्तन हुए। वर्ण-व्यवस्था का अंत, जातिवाद को नष्ट करने का प्रयास आदि, किन्तु इस समाज में पुरानी मान्यताओं तथा सामाजिक व्यवस्थाओं में वह परिवर्तन अभी नहीं हो पाया जिसकी सभी को उम्मीद थी। सामाजिक बदलाव बहुत की रफ़्तार बहुत धीमी होती है। यानी आधुनिक सुख-सुविधाओं में बदलाव तेजी से हुआ है। लोगों के रहन-सहन, पहनावा, आचार-विचार, सोचने-समझने का ढंग इत्यादि में परिवर्तन द्रष्टव्य है। महानगरों में छोटे परिवार का महत्व बढ़ चुका है। बढ़ती आबादी और औद्योगीकरण ने महानगरों के पारिवारिक ढाँचे को छोटा कर दिया है। आज पति-पत्नी और बच्चे ही एक परिवार कहलाते हैं। "परिवार का पुराना ढाँचा प्रेमचंद के समय में टूट गया था और परिवार की परिभाषा वह नहीं रह गई थी जो अभी तक समझी जाती थी।....इस बात

[1]दीपक, सुवास. (2005). चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृ. -23

को समझने के लिए भारतीय व्यक्ति को जिन-जिन भीषण यातनाओं से गुजरना पड़ा है वे आज अविश्वसनीय लगता है।"[1]

आज की पीढ़ी और पुरातन पीढ़ी के भेद को लेकर कई रचनाएँ लिखी गई हैं। जैसे 'पिता','गंदले जल का रिश्ता', 'एक नाव की यात्रा','गुलरा के बाबा' आदि । इस प्रकार की स्थिति स्वाधीनता उपरांत भारतीय समाज में उत्पन्न हुई है। यह कहानी व्यक्ति के अकेलापन, हताश, कुंठा को व्यक्त करती है जो टूटते परिवार से उपजी है। एक ही परिवार में पिता-पुत्र अपरिचित हैं। संबंधों में आत्मीयता नहीं रही, जिसे कहानीकार ने बड़ी कुशलता से अपनी कहानी को विषय के रूप में दर्ज किया है।

सुवास दीपक की 'ग्राम सेवक' कहानी में संबंधों का अजनबीपन है। ग्राम सेवक का संबंध अपनी माँ और संतान से अत्यंत कटु हो गया है। इसे कहानी के एक उद्धरण से आसानी से समझा जा सकता है- "उनकी दिनचर्या से मैं परिचित हो रहा हूँ। साहब चार बजे उठते हैं और शोर मचाने और गाने लग जाते हैं। बच्चों को पाँच बजे ही उठा देते हैं और कड़ी सर्दी में भी ठंडे पानी से नहलाने लगते हैं। बीच-बीच बच्चों की पिटाई भी करते हैं।"[2] ग्राम सेवक अपनी दोनों संतानों को बात-बात पर पेटी से मारा करता है, उसकी माँ गाँव में बीमार थी, सो इलाज के लिए शहर ले आया। वे पुनः लिखते हैं – "उसे कोई बीमारी नहीं थी। केवल बूढ़ा शरीर, अंधी दुनिया और साथ-साथ उसका दिमाग़ भी कुछ बिगड़ गया था ।"[3] बूढ़ी माँ ज्योतिहीन होने के कारण सारे काम बहू को करना पड़ता है। इधर इसने काफी दु:ख देना शुरू कर दिया है। एक मिनट भी खाट पर नहीं बैठती, इससे ग्राम सेवक और बहू काफी परेशान दिखने लगे।

माँ-बेटे के संबंध में स्नेह, प्रेम एवं कोमल भावना पर कठोरता का आवरण चढ़ गया था। काफी दिन ऐसे ही चलता रहा। ग्राम सेवक ने बूढ़ी माँ के खाट के चारो ओर रबड़ का जंगला लगा

[1]यादव, राजेंद्र.(2018).एक दुनिया समानान्तर.पृ. 30
[2]दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृ. 30
[3] वही, पृ. 32

दिया। ग्राम सेवक बूढ़ी माँ को खाट से निकलने नहीं देता, बुढ़िया थोड़ी हिलती भी तो पेटी से उसकी धुलाई शुरू हो जाती और ग्राम सेवक का यही व्यवहार दोनों संतानों ने भी अपनाया। बच्चे भी बूढ़ी माँ को पीटने लगे। अंत में बुढ़िया की सांस अटक गयी। कहानीकार लिखते हैं - "उस रात को बहुत तेज बारिश हो रही थी। बुढ़िया जंगले के रबड़ को ऊपर नीचे खीच रही है पाँव जंगले के बाहर निकालने की कोशिश कर रही है।..धड़ाम की आवाज !...बुढ़िया पीठ के बल पड़ी है। खुली-खुली ज्योतिहीन आँखें अपलक।... वह पेटी उठाते हैं और सटाक-सटाक....प्रहारों की झड़ी.....वह कुछ क्षण पहले ही ठंडी हो चुकी है और ग्राम सेवक उसके पथराए शरीर पर पेटी से प्रहार करने में व्यस्त है।"[1]

बेटा (ग्राम सेवक) माँ को अपने घर लाकर उसका अच्छे से ख्याल रखने के बजाए उस पर क्रोध व आक्रोश प्रकट करता है। बेटे का कठोर व्यवहार माँ के लिए असहनीय हो चुका है, किन्तु वह विवश है। निःसंदेह बूढ़ी माँ अकेली है और आर्थिक परिस्थिति भी विषम है,जिस ओर ग्राम सेवक का तनिक भी ध्यान नहीं पड़ा। माँ और पुत्र के टूटते संबंधों की ओर लेखक ने स्पष्ट संकेत किया है। 'ग्राम सेवक' पूर्व पीढ़ी के प्रति घृणा, अविश्वास और अनिश्चय यथार्थ की कहानी है। अजनबीपन कई कारणों से होते हैं। ग्राम सेवक दो पीढ़ियों के अंतर से उत्पन्न अकेलापन को झेलता है। रचनाकार ने इस कहानी के जरिये अजनबीपन को व्यक्त करने के लिए परिस्थिति और मूल्यहीन अवस्था को व्यक्त किया है।

आर्थिक विषमता के संदर्भ में सुवास दीपक की 'टूटना' और 'धुलते-बिंब' कहानी को देखा जा सकता है। पति के कारण पत्नी भी उसके साथ आर्थिक संघर्ष का सामना करती है। रोज़मर्रा की आवश्यकताओं का प्रबंध पत्नी करती है। 'टूटना' कहानी में बेरोजगारी और शराब का लती होने के संबंध को दिखाया गया है। पति बेरोजगार होने के कारण उसे शराब की लत लग जाती है, जिसके कारण दोनों के संबंधों में बिखराव आने लगता है। यह कहानी बड़े शहरों में आर्थिक संकट से जूझ रहे परिवारों और जीवन संघर्ष को सजीवात्मक रूप से प्रस्तुत करती है।

[1]वही, पृ. 34

‘धुलते-बिंब’ कहानी में आर्थिक तंगी के चलते पति किराया के पैसे देने के लिए पत्नी की जेवर गिरवी रख कर किराया देता है। पैसे देने के बाद पति को कुछ हल्का लगने लगता है, परंतु उसे फिर अगले बार के लिए डर लगने लगता है। यह स्थितियाँ नगरीय जीवन में उपज रहे मानवीय संघर्ष को अभिव्यक्त करती हैं। औद्योगिक सभ्यता के आगे व्यक्ति का मूल्य कुछ भी नहीं है। सुवास दीपक की कहानियों में बदलते परिवेश के साथ पात्र संघर्षशील जीवन जी रहे हैं। यहाँ आर्थिक-सामाजिक शोषणजन्य चित्रण को लेखक ने अपनी कहानियों में बखूबी दर्ज किया है।

साठ का युग उथल-पुथल का युग रहा है। देश को गरीबी, आपातकाल, बेरोजगारी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा। सुवास दीपक की ‘टकराव’ कहानी में बदलते परिवेश के साथ-साथ महिला-पुरुष संबंध एवं कुंठा का वर्णन स्पष्ट दिखता है। आधुनिक औद्योगीकरण और उच्च सभ्यता के दिखावटी के कारण व्यक्ति आत्म-केंद्रित रहने लगा, जिसका प्रभाव परिवार पर पड़ा। सुमेर ज़्यादातर किताबों और अपने लेखन में व्यस्त रहता है। शीला के साथ में बाहर घूमने नहीं जाता। सुमेर को आधुनिक उच्च सभ्यता की बनावटी सुख-सुविधाएँ और ऐश-ओ-आराम पसंद नहीं है, लेकिन शीला बिल्कुल विपरीत है। ज्यादातर दोनों अपने-अपने कामों में व्यस्त रहने लगते हैं। “इन विपरीत प्रकृतियों के बीच अक्सर उनकी झड़प हो जाती है। शीला में भावुकता लेस मात्र भी नहीं और सुमेर निहायत अंतर्मुखी और साथ ही साथ गुस्सैल भी है।”[1] कभी-कभी दांपत्य जीवन के विघटन, यौन कुंठा, संत्रास, पीड़ा और आपसी टकराव के कारण भी अच्छे संबंध टूट जाते हैं या टूट रहे हैं। अपने जीने के हिसाब और तौर तरीके दूसरों पर थोपना तथा एक दूसरे की भावना को नहीं समझ पाने के फलस्वरूप संबंधों का विघटन आरंभ होता है। लेखक द्वारा साठोत्तरी युग के पारिवारिक संबंध में आए तनाव, कुंठा को उजागर करने का भरपूर प्रयास किया गया है।

[1]वही, पृ. 68

3.3 प्रेम, यौन-कुंठा तथा स्त्री-पुरुष संबंध

सुवास दीपक की कथा-दुनिया में पारिवारिक संबंधों में तनावग्रस्त स्थिति दिखाई देती है। पति-पत्नी के बिखराव के कारण नैतिक मूल्य, प्रेम खंडित होता है और दोनों के दैनिक जीवन में दरार उत्पन्न होती है। स्वातंत्र्योत्तर लेखकों द्वारा बदलते इन संबंधों पर तमाम कहानियाँ लिखी गई हैं। मसलन- श्रीकांत वर्मा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती आदि कहानीकारों की कहानियाँ बदलते संबंधों के चित्रण को लेकर काफी चर्चित रही हैं। सुवास दीपक ने अपनी रचनाओं में इन संबंधों के परिवर्तित जीवन मूल्यों के चित्रण को दर्ज किया है। कहानीकारों द्वारा दांपत्य जीवन के बदलते परिवेश का कारण आर्थिक संघर्ष, बदलते प्रेम संबंध, यौन कुंठा रही है। "अमेरिका में परिवारों के बिखराव को देखते हुए एक सर्वेक्षण में कहा गया है कि अब वह स्थिति आ चुकी है जब परिवारों को संयुक्त रखना नितांत जटिल हो गया है। पति-पत्नी आज आत्म-सुख को अधिक महत्व देने लगे हैं, परिवारों के टूटने का यही मुख्य कारण है। त्याग और उत्सर्ग जो परिवार को चटखने से बचाते थे, वे अब केवल शब्दमात्र बन कर रह गये है। दांपत्य-संबंधों में भोग ही प्रधान हो गया है।"[1] एक समय ऐसा था जब पति जैसा भी हो अच्छा-बुरा, दयालु, शराबी, ईमानदार इत्यादि स्त्री को भाग्य और भगवान के भरोसे पति परमेश्वर की सेवा में सारी जिंदगी बितानी पड़ती थी। वह दहेज के लिए हत्या, मार-पीट, लड़ाई, अत्याचार सह लेती थी। लेकिन आज स्त्री की वह स्थिति नहीं है। अपनी योग्यता और क्षमता से सभी को प्रभावित कर रही है। इस तरह के तमाम प्रसंग साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में देखा जा सकता है।

आधुनिक विचार एवं परिवेश के कारण पुरानी परंपराएँ नष्ट हो रही है और पुराने मूल्य टूटते नज़र आ रहे हैं। सुवास दीपक की 'टकराव' कहानी में सुमेर को आधुनिक दिखावटी और अनावश्यक पार्टियों में जाना पसंद नहीं है। इस सन्दर्भ को सुवास जी ने अलग ढंग से चित्रित किया है–"हाई सोसाइटी की इस तथाकथित सभ्यता पर उसे चिढ़ है। इस नकली नकाब को वह कभी

[1]अरोड़ा, डॉ. ज्ञानवती.(1989).समसामयिक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक संबंध. पृ. 165

ओढ़ नहीं सकता और न ही उसने इसे शीला पर हावी होने दिया।"[1] किन्तु शीला को यह सब पसंद है लेकिन सुमेर के मना करने के बाद चुप सी रहने लगी है और दोनों में इसी बात को लेकर आक्रामक स्थिति बननी शुरू हो जाती है। पति-पत्नी के बीच भयंकर तनावग्रस्त स्थिति पनपने लगती है। दोनों के बीच लगभग कोई प्रेम नहीं बचता, जिसके फलस्वरूप शीला निराशा और उदासी से भर जाती है। विवाह के बाद शीला की भावनाओं को वह उड़ान नहीं मिल पाती जो वह चाहती थी, बल्कि उसे घुटन और उबन नसीब होती है। विवाह के लगभग दो वर्ष बाद भी उन्हें कोई संतान प्राप्त नहीं हुई। संतान सुख नहीं होने का मूल कारण सुमेर शीला को पता नहीं चलने देता है। "डाक्टर ने बताया था कि वह संतान पैदा करने में असमर्थ है, परंतु यह बात वह शीला के आगे प्रकट होने नहीं देता। जब कभी बच्चों की बात चलती है तो वह अपने आप को बौना समझने लगता है।....इसी वजह से वह भी आजकल अंतर्मुखी हो गया है। उसकी रुचि केवल लिखने, किताबें पढ़ने के अलावा और किसी चीज में नहीं है। उसे शाम-सवेरे किताबों में डूबे या टेबल पर झुके देखा जा सकता है।"[2]

शीला गुप्ता की बुरी नियत के बारे में सुमेर को बताती है जिसे सुनकर सुमेर को बहुत गुस्सा आता है। शाम को शीला सुमेर से बारिश में साथ टहलने के लिए कहती है तो सुमेर मना कर देता है। इस पर शीला और दुखी होती है। कहानीकार के शब्दों में- "आज तो बारिश हो रही है। न होने पर भी कहाँ आप मुझे घूमने फिरने के लिए ले जाते हो? आप यही चाहते हैं कि मैं दिन भर दफ्तर में और शाम को इस चारदीवारी में बंद हो जाऊँ।...खुद सुबह-शाम डब्बू बन मेज पर झुके रहते हैं, न पत्नी की ख्वाहिशों की फिक्र न कुछ...मुझसे अब यह बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

[1]दीपक, सुवास. (2005). चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृ. 68
[2] वही, पृ. 70

तो क्या होगी ? कुत्ती की तरह भौंक रही हो। जाओ और लूर-लूर....कुत्ती की तरह दुम हिलाती फिरती रहो और गुप्ता, मेहरा सभी से फारेन की चीजों की फरमाइश करती रहो....। तड़ाक से एक थप्पड़ शीला के मुलायम गाल पर पड़ती है। सुमेर स्वयं काँप जाता है।"[1]

इस वार्तालाप के बाद शीला बारिश में बाहर चली जाती है, पीछे-पीछे सुमेर शीला को ढूंढ़ने चला जाता है। जब दोनों घर वापस आते हैं तो दोनों के कपड़े पूरी तरह भी भीग चुके होते हैं। सुमेर के ज़ोर से चिल्लाने से वह उठती है और वहीं कपड़े बदलने लगती है। "उसे देख सुमेर क्रोध, खीझ और झल्लाहट के स्थान पर उसके नग्न शरीर को देखकर सुमेर के रोम-रोम में वासना की आग भड़क उठती है। और उसे भोगने की छटपटाहट महसूस करने लगता है।"[2] पति-पत्नी के संबंध में यौन कुंठा को 'टकराव' कहानी में व्यवस्थित रूप से दर्ज किया गया है।

साठ के बाद राजेंद्र यादव की कहानी 'प्रतीक्षा', मार्कन्डेय की 'माई' आदि कहानियों में नारी-पुरुष प्रेम संबंधों की मूल स्थिति का रेखांकन है। प्रेम संबंधों में परिवर्तन आधुनिक विज्ञान और भौतिकता के कारण आया है। श्रीकांत वर्मा के अनुसार- "प्रेम अब भी एक जीवित शब्द है और उसे सुनते ही अब भी हमारी धड़कन में एक और धड़कन सुनाई पड़ जाती है। अंतर केवल इतना है कि अब वह भावुकता से भरा हुआ एक पीला, बीमार और एकांगी शब्द नहीं रहा, बल्कि वह एक भयानक मगर मनुष्य के सबसे कीमती अनुभव के रूप में स्पष्ट होता जा रहा है। उसकी जटिलताएँ सामने आ रही हैं।"[3]

प्रेम संबंध के साथ यौन-अवसाद को भी कहानी के माध्यम से दर्शाया गया है। इस समय में यौन कुंठा पर तमाम कहानियाँ लिखी गयी हैं, जिनमें यौन कुंठा के कारण दांपत्य जीवन में तनाव, कटुता और मानसिक असंतोष आदि का रूप अधिक है। 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'मिस पाल',

---

[1] वही, पृ. 70

[2] वही, पृ. 74

[3] गर्ग, डॉ.भैरु लाल.(1878). स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में सामाजिक परिवर्तन. पृ. 87

'चाँदनी', 'एक असमर्थ हिलता हाथ', 'लर्क्स' आदि कहानियाँ काम संबंधों के महत्व, आवश्यकता, कुंठा, अकेलापन आदि को चित्रित करती हैं। सुवास दीपक की कहानियों में भी यौन चिंतन का यथार्थ स्वरूप उभरकर सामने आया है। वर्तमान दौर में व्यक्ति अधिक स्व-केंद्रित हो गया है। इन कहानियों में नए नैतिक मूल्य एवं परिवर्तित यौन भावना को भी दिखाया है। युगीन चेतना और आधुनिक चेतना के कारण यौन भावनाओं में भी परिवर्तन हुआ है। "समकालीन समय 'नर-नारी' में प्रेम अपनी सहज स्थिति में नहीं रह पा रहा है क्योंकि यौन की भूख उसके प्रेममय जीवन को विषम बना रही है।"[1] सुवास दीपक की 'टकराव' कहानी की नायिका शिक्षित है। आधुनिक नारी आत्म-निर्भर है। वैवाहिक बंधन में होने के बाद भी वह अकेलेपन की पीड़ा और यौन कुंठा से जूझती रहती है। अपने पुराने मूल्यों और आधुनिक नई परिस्थिति के मध्य शीला सुमेर के अनेक टूटे हुए संदर्भो में अकेली हो गई है। जिसे कहानीकार ने बड़े ही कुशलता से व्यक्त किया है।

सुवास दीपक ने अपनी रचनाओं के जरिये वैवाहिक सम्बन्धों यौन कुंठा का चित्रण स्पष्टतः किया है, जो कि समकालीन आधुनिक परिवेश का कटु यथार्थ है। कभी-कभी इसका कारण आर्थिक संघर्ष भी हो सकता है। जिस कारण दांपत्य जीवन संबंधों में तनाव और स्थिति पैदा होती है। सुवास की 'टूटना' कहानी मिसाल के तौर पर द्रष्टव्य है। एक युवा की सामान्य आकांक्षा एक रोजगार प्राप्त करना होता है और वह भी इच्छा पूरी नहीं हो पाती तो वह टूटने लगता है। और यह उसी मध्यवर्गीय युवक के टूटने की कहानी है 'टूटना' जहाँ वह इतना टूट गया है कि वह अपनी तमाम निराशा और नौकरी न पाने की बेबसी से पूरी तरह खंडित हो चुका है। आजादी के पश्चात भारतीय मध्यवर्ग में निराशा और असंतोष बढ़ने लगा। उस पर पारिवारिक दायित्वों और आवश्यकताओं के कारण आर्थिक एवं सामाजिक जीवन और अधिक संघर्षपूर्ण होने लगा। मध्यवर्गीय जीवन का प्रमुख स्रोत आर्थिक स्थिति है। इसके अभाव के कारण व्यक्ति बेकारी और बेरोजगारी की ओर बढ़ने लगा और अनेक आर्थिक विषमता के कारण व्यक्ति मानसिक कुंठाओं से ग्रस्त होता गया। "पिछले बीस वर्षों में जिन उद्योग-धंधों का जन्म और विकास स्वतंत्र भारत में

[1]सिंह, डॉ. प्रेम. (2003). साठोत्तरीकहानी और परिवर्तित मूल्य. पृ. 180

हुआ है, वे उसे प्रथम श्रेणी का राष्ट्र बनने में समर्थ है, किन्तु इस विकास का ऐतिहासिक फल यह हुआ कि हमारी अर्थव्यवस्था पर पूंजीवाद की गहरी छाप पड़ी और समाज शोषक तथा शोषित वर्गों में बट गया। इसके फलस्वरूप वर्ग-संघर्ष की एक नई भूमिका तैयार हो गई है। उद्योग-धंधों, व्यापार और अर्थव्यवस्था के कुछ थोड़े से परिवारों में सिमटने का परिणाम यह हुआ है कि शिक्षित मध्यवर्ग के लिए इन विदेशी प्रतिष्ठानों में नौकरियाँ पाना भी कठिन हो गया है।"[1] स्वतंत्रता के उपरांत विभाजन और समाज में बदलते पारिवारिक संबंधों पर कहानियाँ लिखी गयी। दिनों दिन बढ़ती कीमत, स्त्रियों के नौकरी करने, आर्थिक स्वावलंबी होने से संबंधित कुछ ऐसी कहानियाँ आई जिसमें पहली बार झूठे जीवन मूल्यों को यथार्थता के साथ द्रष्टव्य किया गया। इनमें निम्नमध्य-वर्गीय और मध्य-वर्गीय जीवन की आर्थिक विषमता का चित्रण किया गया।

60 के पश्चात के लेखकों में सुवास दीपक एक महत्वपूर्ण कथा लेखक हैं जिनकी कहानियां सामाजार्थिक चेतना से जुड़ी हुई है। राजनीतिक विषमता उनकी कहानियों में प्रस्फुटित होती है। उनकी कहानी 'टूटना' में आर्थिक विषमता के कारण दांपत्य जीवन एवं संबंधों में बिखराव और तनाव दिखाई पड़ता है। पति एक साल से बेकार घर में है। बीबी को मिडिल स्कूल में नौकरी मिली है और उसी की कमाई से सारा घर चलता है। पति को घर बैठे-बैठे कब शराब पीने की लत लग गयी पता नहीं चला। कहानीकार लिखते हैं –"यह क्रम अब हर रोज का हो गया है। पत्नी लाख चिल्लाती है, रोती है परंतु जानते हुए भी मैं गर्त में गिरता जा रहा हूँ। मेरी पहले की सभी मान्यताएँ चकनाचूर हो चुकी हैं। पत्नी की वफादारी और समर्पित भावना अब मुझे शराब के गिलास में तैरती नज़र आती है, जिसे मैं एक घूट में गटक जाता हूँ।"[2] आजादी के उपरांत समाज को घोर आर्थिक परेशानियों से जूझना पड़ा था। आर्थिक संघर्ष के कारण व्यक्ति में शराबी और बेकारी के अलावा मानसिक कुंठा की भावना भी प्रबल होती गई। यही कारण है कि उसके दांपत्य जीवन में बिखराव, निराशा और शंका जैसे तमाम शब्द उसे घेरे रहते हैं। "हम अपनी समस्याओं पर बहस करते हैं।

[1]बंसल,बीना.(2001).नई कहानी में आर्थिक संघर्ष.पृ. 96

[2]दीपक, सुवास. (2005). चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृ. 27

बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाते हैं। निराश होने पर भी कहकहे लगाते हैं ।"[1] पति के ग्रुप का नाम भी 'संयुक्त बेकार संघ' है जिसमें समाज में उसकी तरह कई बेरोजगार और बेकार दोस्त शामिल हैं। "आर्थिक अभावग्रस्तता से पीड़ित मनुष्य मानसिक रूप से दुर्बल हो जाता है और दुर्बलता का शिकार व्यक्ति वह सब करता है जो मरता क्या न करता है। परिणामस्वरूप अनाचार को वाणी मिलती है।"[2] फलतः पति, पत्नी और शराब के बीच शराब को महत्व अधिक देता है, जिसके कारण उनके दांपत्य सम्बन्धों में दरार आने लगती है। "शराब पीने की इच्छा हो रही है। लगता है कि मेरा दिमाग बिगड़ जाएगा। नसों में तनाव उभर रहा है और लग रहा है मेरे शरीर में जान नहीं है। मैं सहज नहीं हूँ।.....पीछे से पत्नी बुलाती है- 'सुनिए', परंतु हमारे पैरों की ध्वनि में उसके 'सुनिए' की आवाज मेरे कानों से टकराने के बावजूद भी मैं अनसुनी कर रहा हूँ।"[3]

उक्त तमाम संदर्भों से यह बात पूर्णतया स्पष्ट है कि सुवास दीपक ने मनोवैज्ञानिक कारणों का सूक्ष्म अन्वेषण अपनी कथा-रचनाओं में किया है। उनकी कहानियों में दर्ज चेतना एक विखंडित होती पीढ़ी को सार्थक दिशा देने हेतु प्रेरित करती है। उन्होंने अपने अनुभवजन्य सामाजिक मनोभावों को कहानियों में प्रमुखता के साथ उकेरा है, यही उनके कथा संसार की ताकत है।

---

[1] वही, पृ. 24

[2] सिंह, डॉ. प्रेम. (2003).साठोत्तरी कहानी और परिवर्तित मूल्य. पृ. 64

[3] दीपक, सुवास. (2005). चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृ. 28-29

3.4 मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष एवं विसंगतिबोध

साहित्य जिस काल-खंड में लिखा जाता है, उस युग का प्रतिबिंब आना बहुत ही सहज है। भारतीय मध्ययवर्ग में उपज रही सामाजिक विसंगति, नवीन चेतना, पारिवारिक विघटन एवं परिवर्तित जीवन मूल्य को सुवास दीपक ने अपनी कथा रचना दर्ज किया है। सुवास के साहित्य की अहम वृत्तियों को निम्नलिखित विवेचन के द्वारा समझा जा सकता है। समाज को उम्मीद थी कि स्वतंत्र होते ही दुख, शोषण, गरीबी और सेठ-महाजनों की लूट समाप्त हो जायेगी, किन्तु देश की स्थिति आजादी के बाद और बिगड़ती चली गयी। बढ़ती विसंगति, धार्मिक स्थितियों के कारण धीरे-धीरे जनता के मन में शासन व्यवस्था के प्रति नफरत होने लगी। उक्त संदर्भ की पुष्टि हेतु यह कथन अधिक समीचीन प्रतीत होता है- "जनसाधारण का जीवन संघर्ष भी बढ़ती कीमतों और बेरोजगारी के कारण और अधिक जटिल होने लगा। इसका असर हमारे सामाजिक जीवन और हमारी दृष्टि पर पड़े बिना नहीं रह सकता था। साहित्य में संशय और अस्वीकृति के स्वर सुनायी देने लगे। कहीं-कहीं पर तो यहां तक मोहभंग हुआ कि जीवन ही निरर्थक नज़र आने लगा। परंपरागत मान्यताओं और मूल्यों पर से विश्वास उठता जान पड़ने लगा।"[1] सुवास दीपक की रचना में मध्यवर्गीय जीवन में अकेलापन, क्रोध, बेचैनी और बेहतर जीवन जीने की ललक के कारण विद्रोह का स्वर उभर कर आया है। मध्यवर्गीय जीवन महंगाई, बेरोजगारी, भूखमरी का सामना करता है। समाज में भ्रष्टाचार, अवसरवाद एवं पद-लिप्सा का वर्णन उनकी कहानियों को अधिक यथार्थ और परिपक्वता प्रदान करती है। आजाद भारत में दिखाए गए सपने धीरे-धीरे बिखरने लगे और इसी कारण से राजनेता व शासन व्यवस्था पर साधारण जनता का मोहभंग होता है। "ऐसा नहीं है कि जहां देश सन् सैंतालीस में था वहीं सन् नब्बे तक रहा। देश का विकास हुआ पर इसके साथ ही सामान्य आदमी जागरुक भी हुआ। जीने की आवश्यकताएँ भी बढ़ी, बाजारू संस्कृति का विस्तार भी हुआ। अतः सबसे अधिक संत्रासमय जीवन मध्यवर्ग का होता गया। वह पेट भर खा सकता था- किन्तु उसकी चिंता, आतुरता घोर महंगाई में सम्मान के साथ जीने की थी। इसलिए साठोत्तरी

[1]सिंह, डॉ. विमला. (1999). साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में उच्चवर्ग एवं निम्न वर्ग का स्वरूप.पृ. 4

कहानीकारों ने व्यापक रूप से मध्यवर्ग की आशा-निराशा, पीड़ा-वेदना को मुखरित करने की कोशिश की है।"[1] मध्यवर्गीय समाज सामाजार्थिक आवश्यकताओं के बीच घिसता रहता है, ऊपर से राजनीतिक दबाव के चलते इस वर्ग का संघर्ष और भी दयनीय हो गया, क्योंकि यह वर्ग शिक्षित वर्ग है। शिक्षित मध्यवर्ग होने के कारण उसे दुहरा संघर्ष करना पड़ता है। महंगाई के कारण जीवन की आर्थिक स्तर और अस्थिर हो गया।

सुवास दीपक का कथा संग्रह 'चक्रव्यूह और अन्य कहानियाँ' में 'टूटना' कहानी समकालीन समय की शिक्षित मध्यवर्गीय समाज के दुर्दशा की कथा है। उदाहरण द्रष्टव्य है- "मैं एक साल से यहाँ बेकार हूँ। कोई धंधा हाथ नहीं लग रहा।.....मैं अपने दब्बूपन और बेकारी से पिसा दिन भर अपने प्रथम पुत्र के साथ कमरे में पड़ा रहता हूँ जैसे नज़रबंद होऊँ। निश्चय ही इस बेकारी ने मुझे नज़रबंद करके रख दिया है।"[2] परिवार में पति पढ़ा लिखा होने के बावजूद भी रोजगार में नहीं है और पत्नी की कमाई से सारा घर चलता है। पति अपनी बेकारी से निराश व कुंठित होकर भीतर ही भीतर उसे शराब पीने की लत लग गयी। शराब का असर उसके मानसिक संतुलन पर पड़ने लगा। पति को परिवार की कोई परवाह नहीं रही। वह अपने शराबी समूह में रहने लग गया। उसकी आत्मपीड़ा की अभिव्यक्ति देखिए - "मैं कितनी बेशर्मी से सब कुछ समझता हुआ भी घर की बर्बादी पर तुला हुआ हूँ। पत्नी और बच्चे के भविष्य को मैं जान कर भी गर्त में डाले जा रहा हूँ।"[3]

सुवास दीपक की कहानियाँ विशेष रूप से मध्यवर्गीय समाज-संघर्ष को आधार बनाकर रची गई हैं। मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष की हर विडंबना इनकी कहानियों में विद्यमान है। उनके पात्र विषम चक्रव्यूह से घिरे होते हैं, किन्तु वे संघर्ष करते हैं, टूटते हैं लेकिन समझौता नहीं करते। 'पड़ोस', 'धुलते बिंब', 'ग्राम सेवक', 'कर्ज वसूली' आदि कहानियों में सुवास दीपक ने बदलते

[1]वही, पृ. 13

[2]दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ.पृ. 24

[3] वही, पृ. 28

भारतीय सामाजिक-ढाँचे को दर्ज किया है। विषम परिस्थिति की इस प्रक्रिया में मध्यवर्गीय परिवार भीतर से टूटा हुआ है और उसकी आशा विलुप्त हो गयी है।

सुवास दीपक के कथा संग्रह 'चक्रव्यूह और अन्य कहानियाँ' में दूसरी कहानी 'विकल्प' एक ऐसे पारिवारिक व्यवस्था की कहानी है जिसमें विषम मूल्यों के साथ-साथ पूंजीपति उसका आर्थिक शोषण करता है। 'लकड़ा' एक मजदूर है और अपनी मजदूरी की कमाई से परिवार चलाता है। पहले फैक्ट्री में बेईमानी से उसे फंसा कर निकलवा देता है, फिर अपने परिवार को दो वक्त का खाना देने के लिए लकड़ा पत्थर तोड़ने की मजदूर करता है। लेकिन उसका संघर्ष तब अधिक बढ़ता है, जब उसकी मजदूरी की कमाई उसे नहीं दी जाती है। रचनाकार के शब्दों में - "मजदूरी ! पत्थर के सात ढेर, एक हफ्ते के पैतीस रूपये। उसने नपा तुला स्पष्टीकरण मुनीम पर उछाल दिया था।

"क्या बकवास करता है? काम किया ही नहीं और आ गया मजदूरी माँगने ! दिखाओ कहाँ है तुम्हारे पत्थर?

"वो तो तुमने उठवा लिए हैं।"

"उठवा लिए हैं।" मुनीम उसकी नकल करके बोला था, "हट यहाँ से ! हमारा वक्त बर्बाद मत कर।" मुनीम ने लापरवाही से कहा !

"देखो मुनीम ! यह बात ठीक नहीं है। मेरी मजदूरी तुम्हें देनी ही पड़ेगी। यह बेइंसाफ़ी है।

"बेइंसाफ़ी है! कानून की बात करता है। चोर-उचक्के भी आजकल कायदे-कानून की बात करने लग गए हैं। कौड़ी की औकात नहीं।" मुनीम ने चिल्ला कर कहा।"[1]

परिवार चलाने के लिए आर्थिक संघर्ष के साथ-साथ लकड़ा रहने के लिए घर और भूख से हर दिन जूझ रहा था। जीवन कष्टमय, तनाव और संघर्ष से व्यतीत हो रहा था, जिससे मुक्त होने का

[1]दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ.पृ. 16

कोई उपाय नहीं था। वास्तव में लकड़ा अपने आस-पास निरंतर हो रहे भ्रष्टाचार, आर्थिक शोषण और अन्याय के कारण भीतर से शासन व्यवस्था के प्रति क्रोध, रीझ और आक्रोश भाव पैदा कर लेता है। परिणाम स्वरूप लकड़ा मुनीम का कत्ल कर देता है। लकड़ा को जेल में अपना अपराध स्वीकारने के बाद भी भयंकर यातना मिलती है। "कड़कती आवाज में उसने कहा था- "मैं हत्यारा नहीं हूँ, हत्यारा फेक्टरी का स्टोर-कीपर है, ठेकेदार है। मैंने कोई हत्या नहीं की। इस पेट के लिए अपने बीबी-बच्चों के लिए दो रोटियाँ भी आपकी व्यवस्था मुझे मुहैया नहीं कर सकी। पूरी हड्डियां गला कर भी भूखें मर जाते हैं हम!...मेरे बच्चे, मेरी बीबी पंद्रह दिन से सड़े-गले पत्ते उबाल कर खा रहे हैं। उन्हें भर पेट-रोटी कौन देगा? आप देंगे? आप सिर्फ उन्हें कुत्तों की तरह सड़-सड़ कर मर जाने के लिए मजबूर कर देंगे । उन्हें हत्यारे बनने के लिए मजबूर करेंगे....हा....हा....हा.... ।"[1] लकड़ा अपनी इच्छा के विरुद्ध मुनीम की हत्या करता है, वह अपने जीवन के उतार-चढ़ाव से असंतुष्ट है। उसे अपनी मृत्यु भी सपने में आती है जहाँ उसकी पीड़ा खुशी में परिवर्तित हो जाती है। उसे वर्तमान की पीड़ा से मुक्ति सिर्फ सपनों की दुनिया में ही मिलती है। जीवन के अकथनीय संघर्ष मनुष्य ऐसे अंधकार में धकेल देता है, जिससे निकल पाना कभी-कभी बहुत दूभर हो जाता है। 'विकल्प' कहानी सुवास दीपक द्वारा मध्यवर्ग के आर्थिक शोषण, अन्याय, जीवन संघर्ष को यथार्थ मूल्यों के साथ दर्ज किया है। मध्यवर्ग का संघर्ष, विसंगतिबोध, बेबसी, जीवन में व्याप्त यातना आदि सुवास दीपक की कहानियों में कई जगह रेखांकित है। इसके अलावा मध्यवर्ग की टूटती हुई स्थिति को लेकर लिखी गयी अन्य कहानियाँ, जैसे 'धुलते बिंब', 'टूटना' ,'ग्राम सेवक', 'पड़ोस', 'टकराव' आदि हैं, जहाँ मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष को व्यापक रूप से निरूपित किया गया है।

आज कहानीकारों के पास व्यापक फ़लक पर सामाजिक विसंगतिबोध को लेकर लेखन सामग्री उपलब्ध है। मध्यवर्गीय परिवेश कई समस्याओं से जूझ रहा है, जैसे - आर्थिक विसंगति, भ्रष्टाचार, बेईमानी साथ में दिनोदिन बढ़ते जीवन यापन का संघर्ष आदि। बेहतर जिंदगी जीने के साथ-साथ पैसों का भी महत्व बढ़ने लगा है। ज्ञानरंजन एक जगह टिप्पणी करते हैं- "अब आप

[1] वही, पृ. 40

जल्दी-जल्दी पैसा कमाना चाहते हैं, जल्दी-जल्दी लिखना चाहते हैं, जल्दी-जल्दी सब छप जाय यह भी चाहते हैं। आप जगमगाना चाहते हैं, सफलता के दरवाजे खोल देना चाहते हैं। दुनिया बन जाए, चार पैसे मिल जाए, आलोचक भी दर्ज कर लें, पाठक भी मुग्ध हो जायें। इसीलिए हमको बहुत सारा जो मिलता है वह बाजारू होता है।"[1]

यथार्थ से लैस सामाजिक विसंगति कुछ अधिक ही भयंकर है। मध्यवर्ग की विसंगति रही है कि वह दिन-रात अपने और अपनों के परिवारों की आवश्यकता में सारी जिंदगी निछावर करता है। अपनी अधूरी आकांक्षाओं को मन में लिए निराश रहता है। "मध्यवर्ग का असंतुलित फैलाव आधुनिक भारत का शायद सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है।...वे आर्थिक दृष्टि से अस्थिर हैं। पूंजीपतियों के वर्ग में पहुँचने की लालसा से प्रेरित होते हैं, पर इनमें बहुत से श्रमिकों के वर्ग में आ गिरते हैं। वे अनुमान करते हैं कि इन्हें एक सम्मानित स्तर बनाए रखना हैं, जो प्राय: उनके साधनों से बाहर होता है। यह निरंतर चलता आर्थिक संघर्ष उनके जीवन दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।"[2] चूंकि मध्यवर्ग का मूल आधार आर्थिक है, जिस कारण उनकी स्थिति दयनीय और इच्छा दमित रह जाती है। मध्यवर्गीय जीवन विषम आर्थिक स्थितियों के कारण कठिन हो गया है। वह अंदर से बिखर चुका है तथा परिवार में अशांति और तनाव का माहौल बन गया है। कभी-कभी स्थिति से समझौता भी करना पड़ता है। कथाकार सुवास दीपक द्वारा हू-ब-हू इसी हर्ष-विषाद, सुख-दु:ख, कुंठा-उदासी, छटपटाहट, आवेग और टीस-टूटन को अपनी कहानियों में स्थापित किया गया है। इसीलिए इनकी कहानियां जीवंत लगती हैं। यह कहानीकार अधिकांशतः मध्यवर्गीय परिवार/समाज से संबद्ध हैं, इसीलिए उनकी कहानियों में मध्यवर्ग की व्यथा अधिक उभरकर सामने आती है।

सुवास दीपक के इस कहानी संग्रह की पहली कहानी 'धुलते-बिंब' मध्यवर्गीय जीवन-समाज की अभावग्रस्त विसंगति को दर्शाती है। नगरीय जीवन में मकान मालिक साल में एक ही बार आता है, वो भी सिर्फ किराया वसूलने के लिए। किराएदार शुरूआती महीनों में पैसे इक्कठा

[1]सिंह, डॉ. विमला.(1999). साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में उच्चवर्ग एवं निम्न वर्ग का स्वरूप. पृ. 16
[2] बंसल, बीना (2001). नई कहानी में आर्थिक संघर्ष. पृ. 222-223

करता है, लेकिन शहर में महंगाई और दैनिक आवश्यकताओं के कारण इक्कठा किए पैसे खत्म हो जाते हैं। इस बार मकान मालिक आयेगा तो वह किराया कहाँ से देगा, इसकी चिंता उसे सताए रहती है। सुवास दीपक लिखते हैं - "अपनी तो हालत ही ऐसी है कि हर महीने यह सोचते हुए कि कुछ बचा कर रखा जाएगा किन्तु दुगुने-तिगुने खर्च पड़ जाते हैं तो किराया अदा करना तो दरकिनार रहा, हमें यह भी पता नहीं चलता कि किराया एक साल का हो गया है, और जब साहबान आ धमकते हैं तो हमें अपनी जान बचानी मुश्किल हो जाती है।"[1] आखिरकार कोई उपाय न पाकर पत्नी की जेवर बेचकर किराया देता है। जीवन की बढ़ती आवश्यकताओं के बीच थोड़े से वेतन से मध्यवर्गीय जीवन की छोटी-छोटी इच्छाएं हैं, आवश्यकताएँ हैं जो पूर्ण नहीं हो पाती है।

60 के पश्चात की कहानियों में आर्थिक स्थिति और 'स्व' का भाव उत्पन्न होने के कारण इसका सीधा प्रभाव संयुक्त परिवार पर पड़ा। आधुनिक सुख-सुविधाओं की चाह में परिवार में केवल पुरुष की कमाई कम पड़ने लगी तथा स्त्रियाँ भी नौकरी करने लगी। परिवार में बाहरी दुनिया का प्रभाव स्पष्टतः पड़ने लगा। पति-पत्नी के बीच तनाव और बिखराव की स्थिति पैदा होने लगी और संयुक्त परिवार बिखरने लगा। आज महानगरीय परिवार में पति-पत्नी और बच्चे ही रहते हैं। माता-पिता गाँव में रहते हैं। आज पिता-पुत्र, भाई-भाई और बहू-जेठानी की नहीं बनती। इसके पीछे अधिकतर उनकी आर्थिक स्थिति को ही माना जाता है। पारिवारिक सामाजिक विघटन एक परिवार में रहकर भी हो सकता है। आज युवा पीढ़ी अपने माता-पिता को किसी कारणवश या विवशता-वश अपने पास रखते हैं। सुवास दीपक की कहानी 'ग्राम-सेवक' एक ही घर में परिवार-विघटन को खूब बारीकी से दर्शाती है। ग्राम सेवक शहर में अपने परिवार, पत्नी और दो बच्चों के साथ रहता है। ग्राम सेवक का स्वभाव गुस्सैल है और कठोर भी। अपने बच्चों की ऐसे पिटाई करता है जैसे धोबी धुलाई करता हो। बिना कारण जब उसकी बूढ़ी माँ को गाँव से इलाज के लिए शहर लाया गया तो, बूढ़ी माँ की सेवा भी कुछ ठीक-ठाक नहीं हुई। माँ से ग्राम सेवक और बहू दोनों परेशान रहते थे। चौबीसों घंटा चौकीदारी करनी पड़ती थी, क्योंकि बूढ़ी माँ ज्योतिहीन होने के

[1]दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ.पृ. 7

कारण गिरती पड़ती रहती थी। कभी दीवार से टकराती तो कभी कुछ गिरा देती थी। ग्राम सेवक के समझाने पर भी उन पर कोई असर नहीं होता था। ग्राम सेवक अब बच्चों के साथ-साथ उसकी माँ को भी पेटी से प्रहार करना शुरू कर दिया। अब बुढ़िया खाट में लेटी रहती है, अगर जरा सा भी हिली तो ग्राम सेवक उस पर झपट पड़ता है और पीटना शुरू कर देता है। यह सिलसिला इसी तरह चलता रहा। एक दिन बुढ़िया खाट से निकलने की बहुत कोशिश करती है। अधिक कोशिशों के बाद बुढ़िया अचानक धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ती है। ग्राम सेवक वहाँ आकर उसे उठाने के बजाय पेटी से मारने लगता है। लेकिन ग्राम सेवक की माँ कुछ क्षण पहले ही दुनिया छोड़ चुकी थी। कहानीकार लिखते हैं -"बुढ़िया जंगले के रबड़ को ऊपर नीचे खीच रही है। पाँव जंगले के बाहर निकालने की कोशिश कर रही है।...धड़ाम की आवाज! ग्राम सेवक शायद लेट्रिन में है। लेट्रिन से निकल कर सीधे बुढ़िया के कमरे में पहुँचता है। बुढ़िया फर्श पर पीठ के बल पड़ी है। खुली-खुली ज्योतिहीन आंखे अपलक। वह पेटी उठाते हैं और सटाक-सटाक...प्रहारों की झड़ी। बुढ़िया की तरफ से कोई क्रिया, कोई हल-चल नहीं है। वह कुछ क्षण पहले ही ठंडी हो चुकी होती है और ग्राम सेवक उसके पथराए शरीर पर पेटी से प्रहार करने में व्यस्त हैं।"[1] ग्राम सेवक अपनी बुढ़ी माँ को अपने पास तो रखता है, लेकिन उसके साथ निर्मम व्यवहार करता है। ग्राम सेवक को उसकी बूढ़ी माँ के खयाल से कुछ लेन-देन नहीं है। अपने समय के कटु सच सुवास ने यहाँ जीवंत तरीके से निरूपित किया है।

आज आदमी इतना व्यस्त होता जा रहा है कि करीबी रिश्तों को महज फर्ज समझकर या अनिवार्य समझकर ढो रहा है। फलस्वरूप संबंधों में प्रेम भावना कम होती जा रही है। सुवास दीपक की 'टकराव' कहानी में संबंधों का बिखराव और तनाव को देखा जा सकता है। समय के साथ-साथ पारिवारिक संबंधों (स्त्री-पुरुष) में भी काफी परिवर्तन आया है। आज स्त्री कई स्थानों में पुरुष से बेहतर या बराबर है, लेकिन पति-पत्नी के बीच सब कुछ ठीक रहने के बजाए दांपत्य जीवन में

[1] वही, पृ. 34

बेचैनी, तनाव, अलगाव, और बिखराव का माहौल बना रहता है। 'टकराव' कहानी इसका पुख्ता उदाहरण है।

3.5 शिक्षा व्यवस्था का विघटन एवं बेरोजगारी का दंश

आजादी के बाद राष्ट्र प्रगति और आर्थिक विकास के लिए कई योजनाओं को शुरू किया गया। समय के साथ यह योजनाएँ सिर्फ कथनी बनकर रह गयी। आम आदमी से इसका जुड़ाव उस रूप में नहीं हो सका जिसकी उम्मीद थी। विकास और पंचवर्षीय योजनाओं को सरकार ने लागू किया। उसका नतीजा पूरी तरह से सफल नहीं हुआ, क्योंकि हर देशवासियों के लिए योजनाओं के केंद्र में उच्चवर्ग, पूंजीपतियों का प्राधान्य रहा। इन सबके बावजूद पंचवर्षीय योजना का सीधा लाभ गरीबों, किसानों, गाँव को कितना मिला यह अनुमान लगाना थोड़ा मुश्किल होगा। "सन् 1951 में जहां 40 लाख बेरोजगार थे वहीं 1996 में 20 लाख हो गये बेकारों की यह संख्या सरकारी आकड़ों के अनुसार है, जबकि वास्तविक बेकारों की संख्या स्रोत से कहीं अधिक होती है।"[1] पांचवीं पंचवर्षीय योजना में रोजगार की अधिकाधिक व्यवस्था का निवारण किया गया, लेकिन इस योजना का हश्र भी वैसा ही रहा। गाँव में विकास के नाम पर भ्रष्टाचार की शुरूआत हुई। "जाल फरेब, अनुदान-लूट और कागजी कामों को प्रोत्साहन मिला। फूट वैमनस्य,विलगाव, विखराव गांवों में बढ़ता गया। जाति-कलह, अशिक्षा, गुटबाजी, राजनीतिज्ञ के प्रवेश और नौकरशाही मनोवृत्ति ने सामूहिक विकास की योजना को उचित दिशा में पनपने नहीं दिया।"[2] तब से लेकर अब तक आर्थिक विकास और प्रगति की योजना के नाम पर भ्रष्टाचार, लूट, धोखे का धंधा जारी है। सामान्य जन, मजदूर, बेरोजगारी के आगे लाचार हैं। हर दिन बेरोजगारी की संख्या वृद्धि होती जा रही है। उल्लेखनीय है- "गाँव के नाई ने जर्मनी का उस्तरा इस्तेमाल कर और गाँव के बढ़ई

[1]पाण्डेय, गणेश.(1999).आठवें दशक की हिन्दी कहानी में ग्रामीण जीवन.पृ. 31
[2] वही, पृ. 33

ने विदेश से आयी कीलों का प्रयोग करके गांव के लुहार की रोजी मारी है। लुहार ने विदेशी वस्त्र पहन कर जुलाहे की रोजी बर्बाद कर दी है। जुलाहे ने जापान का जूता पहनकर मोची का और मोची ने कलईदार तश्तरियां और प्यालियों का इस्तेमाल करके कुंभार का व्यवसाय नष्ट कर दिया है। इस प्रकार प्रत्येक अपने पड़ोसी की रोजी मारते हैं और गांव अपने जवार के दूसरे गांव को बर्बाद करता है।"[1]

शिक्षित बेरोजगारों की स्थिति तो और भी त्रासद है। मानसिक तनाव और कुंठा व पीड़ा उन्हें व्यवस्था विरोधी बनाती है या भ्रष्टाचार दलाली और लूट खसोट के दलदल का एक भाग बन जाने हेतु विवश कर देती है। साठ के बाद हिंदी कहानीकारों ने शिक्षित बेरोजगारों को लेकर तमाम कथा-रचनाएँ लिखी हैं। जिनमें शिक्षित युवा बे-रोजगारी के कारण मानसिक तनाव, कुंठा, असंतोष और आक्रोश से गुजर रहे हैं। सुवास दीपक की 'टूटना','तुमि आमा के मारते पारोना' और 'विकल्प' कहानी में गरीबी, बेरोजगारी और शोषण की अलग-अलग स्थितियाँ देखी जा सकती हैं।

'टूटना' कहानी में एक परिवार में पिता की बेरोजगारी ने उसके भीतर अनावश्यक और निरर्थक भावना पैदा कर दी और उसे शराब पीने की आदत कब और कैसे लगी उसे खुद पता नहीं चला। जिस कारण उसका मानसिक संतुलन सिर्फ शराब में डूबा रहता है। इसी आदत के साथ पति-पत्नी के संबंध में तनाव और दूरी बढ़ने लगती है। पत्नी के बताई जगह पर नयी नौकरी मिलने के बावजूद शराब पीने के व्यवहार की वजह से उसे नौकरी से बेदखल कर दिया जाता है। नयी नौकरी खोने के दु:ख में वह और भी शराबी हो गया। सुवास दीपक की यह कहानी समाज में शिक्षित बेरोजगारी की एक भयावह स्थिति की व्याख्या करती है, जो कि आज भी प्रासंगिक है। एक शिक्षित बेरोजगार की यह स्थिति समाज में उसे और भी नीचे धकेल देती है। "पत्नी फिर पहले की तरह दाल-रोटी जुटा रही है। मैंने तो नौकरी करके किया ही क्या है? इतनी ही उन्नति की कि शराबी बन बैठा, और आज इसी वजह से नौकरी से हटा दिया गया हूँ। शराब पीने की इच्छा हो रही है। लगता है कि मेरा दिमाग बिगड़ जाएगा। नसो में तनाव उभर रहा है और लग रहा है मेरे शरीर में

[1]वही, पृ. 37

जान नहीं है।"[1] पात्र बेरोजगारी के भयानक तनाव और व्यवस्था की व्यर्थता के दबाव में अमानवीय व्यवहार करता है। अपने कर्तव्य से मुकर जाता है। बेरोजगारी और शोषण के प्रति और व्यवस्था की क्रूरता के खिलाफ युवावर्ग के आक्रोश को लेखक ने अपनी दूसरी कहानी 'तुमिआमा के मारते पारोना' में बड़े माद्दा के साथ व्यक्त किया है। इसमें लेखक के समक्ष बीती हुई एक घटना है। देश में शोषण के अलग-अलग चेहरे होते हैं, किन्तु उनकी पीड़ा तो एक ही है। राजनीतिक व्यवस्था और शोषण के शिकंजे में आज मध्यवर्ग से लेकर युवा वर्ग पिस रहा है। शिक्षित नयी युवा पीढ़ी अपने ऊपर होने वाली जादती के प्रति जागरूक है। स्टेशन के प्लेटफ़ार्म पर एक नव युवक ज़ोर-ज़ोर से कह रहा है-'यू गिव मी ब्लड आय विल गिव यू फ्रीडम'। मुद्दा तब समझ में आता है जब युवक के चिल्लाने के कारण उसे कांस्टेबल द्वारा डंडा मारा जाता है। वह चोट से आये तनाव और आक्रोश को छिपाने के लिए हंसते हुए अजीब हरकते करने लगता है। "लड़का स्टूल पर सिर टिका कर ऊँघ रहा था। वह उसी पोजीशन में कांस्टेबल की ओर देख रहा था। अचानक जब वह मुड़ा तो वह गोली लगने की मुद्रा में ज़ोर से चीख कर उछल पड़ा। एक हाथ से उसने अपना सीना दबा रखा था और 'आ...आ...जोल...पानी' कह कर धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ा था। परंतु दूसरे ही क्षण 'तुमिआमा को मारते पारोना...तुमिआमा के ...आमि महा विद्रोही रण-क्लांत...' कहता उगली उठा कर कांस्टेबल की ओर देखता चिल्लाए जा रहा था।"[2]

सभी उसकी हरकतों का लुफ्त ले रहे थे। लेकिन लेखक की अंतरात्मा इस दृश्य को देखकर हिल गयी। यह हर युवा की पीड़ा है, जो व्यवस्था तंत्र ने उसे दी है, वह जागरूक है। युवा शोषण की त्रासदी इस देश में गहरी छाप छोड़ चुकी है। लेखक कहता है - "समूचा हिंदुस्तान मेरी आँखों में घूम चुका था। वह बावला-सा लड़का मुझे बावला कतई नहीं लग रहा था बल्कि शोषित युवा-शक्ति का प्रतीक लग रहा था।"[3]

---

[1] दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ, पृ. 28

[2] वही, पृ. 22

[3] वही, पृ. 23

सरकारें कहती कुछ हैं और करती कुछ हैं। कथनी और करनी में बहुत फर्क आ गया है। ऐसी स्थिति में जन मानस के मन में सत्ता के प्रति विरोध का भाव पनपने लगता है। डॉ. पुष्पपाल सिंह के अनुसार "परिवेश के प्रति अतिशय जागरूकता और जीवन जीने की अतिशय जटिलता ने युवा मानव को अपने चारो ओर की भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति अत्यंत रोषशील बना दिया।"[1] साठ के दशक के कथाकारों ने परंपरागत कहानी से अलग कहानियाँ लिखी हैं, तमाम विघटित मूल्यों को चुनौती दी हैं साथ ही यथार्थ की प्रामाणिकता, परिवर्तित मानसिकता और संवेदना की कहानियाँ भी प्रदान की हैं। सुवास दीपक ने अपनी कहानी में भ्रष्ट तंत्र को व्यंग्यात्मक दृष्टि से चित्रित किया है तथा उन पदलोलुपों की पोल खोली है, जो बिना रिश्वत के कोई काम नहीं करते। यह यथार्थ किसी भी दफ्तर, व्यवस्था, संस्था यहाँ तक कि शिक्षण संस्थान, जैसे - स्कूल, कॉलेजों में भ्रष्टाचार का जघन्य रूप द्रष्टव्य होता है। इसी रूप को सुवास की राजनीतिक व्यंग्यात्मक कहानी 'कर्ज-वसूली' आदि में भी उक्त समस्या को बेबाकी के साथ दर्ज किया गया है। शरद जोशी, परसाई और रवीन्द्रनाथ त्यागी की व्यंग्यात्मक रचनाओं से सुवास दीपक प्रभावित हैं और यह विशेषता उनकी कहानियों में भी दिखती है। इनके कहानी संग्रह के अंतर्गत 'पड़ोस', 'जाना एक मास्टर का परीक्षा अधीक्षक बनकर' तथा 'तुमिआमा के मारते पारोना' आदि कथा-विन्यास में व्यंग्यात्मक एवं बिम्ब-भाषा का प्रयोग द्रष्टव्य है। सुवास दीपक का मानना है कि 70 के दशक में रचनाकार रचनात्मक तनाव एवं जीवन के समस्याओं के बीच जी रहा था। रचना और जीवन दोनों की समस्या लेखक की अपनी समस्या है, जो एक नया संदर्भ बनकर लेखन में उभरकर आया है। सुवास दीपक की रचनाओं में व्यंग्य की प्रधानता है। लगभग रचनाएँ अनुभवजन्य हैं। लेखक अपनी सभी रचनाओं में किसी न किसी रूप में उपस्थित है। सुवास दीपक का व्यंग्य समाज के लगभग हर पहलू पर होता है। कहानी में शिक्षा की व्यवस्था एवं शिक्षा संस्थानों में हो रही घूसखोरी और पूंजीवाद का दबाब चित्रित करती है। जैसे वह लिखते हैं – "पांडेय जी को परीक्षा अधीक्षक बनकर जंबूद्वीप जाना था, लेकिन विभाग से झूठ बोलकर अपनी ड्यूटी कैंसिल करवा ली थी। नहीं जाने का खास कारण उन्हें वहीं रहकर छात्राओं की समस्या का समाधान करना था और अपनी भी।

[1]सिंह, डॉ.पुष्पपाल. (2007). समकालीन कहानी: युगबोध का संदर्भ. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस. पृ. 97

दूसरे अध्यापक की रातो-रात ड्यूटी अपनी जगह कैंसिल होकर दूसरी जगह जाना पड़ता है, जिसकी इत्तला उसे शाम को पता लगती है। परीक्षा से एक दिन पहले। पांडेय जी के पास कल की परीक्षा के लिए विद्यार्थी ऐसे आ रहे थे जैसे 'चुनावों में मंत्रियों के पास जनता या जनता के पास मंत्री। .... बेयरा, जो मध्यस्थ हैं उन्हीं की बगल में बैठा होता है, कहता है - "हो गई बात मास्टर जी से न? बहुत अच्छा हुआ। अब सभी मास्टर जी के चरणों में बीस-बीस रूपयों की दक्षिणा रखो।"

सेवा करोगे तो मेवा पावोगे।

मास्टर साहब क्षीर सागर में लेटे अंतर्ध्यान होकर शिष्यों का दुःख हरण कर रहे हैं। लक्ष्मी जी के स्थान पर बेयरा उनके पाँव दबा रहा है।"[1]

समाज में स्वार्थ और लोभ के कारण शोषण के कई रूप कहानियों में रेखांकित हैं। पूंजीवादी व्यवस्था इतना व्यापक रूप में फैल चुकी है कि इसकी पहुँच व्यवस्था एवं शासन तक हो गई है। अपने लाभ में व्यक्ति जनता के हित-अहित कि चिंता नहीं करता, उसे मात्र आय और शक्ति से परवाह है।

'कर्ज-वसूली' सुवास दीपक की शिक्षा व्यवस्था के नाम पर हो रहे भ्रष्टाचार की कहानी है। अध्यापक द्वारा पुराने स्कूल मैनेजिंग कमेटी से 100 रुपए कर्ज लिया गया था, जिससे पाठशाला के नए प्रधानाध्यापक कर्ज वसूलने के लिए आते हैं। नए प्रधानाध्यापक द्वारा आय एकत्रित कर ट्रस्ट स्थापित किया जाता है। पाठशाला की ओर से कल्चरल प्रोग्राम प्रस्तुति से राशि एकत्रित किया गया तथा अन्य कार्यक्रमों से भी। लेकिन एकत्रित की गई धनराशि से कोई काम नहीं किया गया। तब लोगों का माथा ठनका। लोग मि. वर्मा के पीछे पड़ने लगे कि एकत्रित राशि कहाँ गई ? लोगों द्वारा जब पुलिस तक खबर करने की धमकी दी तब मि. वर्मा ने कुटनीति का पैतरा आजमाया। सुवास दीपक लिखते हैं - "अंतः उन्होंने तुरंत कॉलबेल बजाई। चपरासी आया। ऐसे मौकों पर

दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ, पृ. 65

उनका चपरासी सधा हुआ था। कॉलबेल की आवाज से ही चपरासी समझ जाता था कि साहब का मूड कैसा है। दस-पंद्रह मिनट के अंदर सभी को बढ़िया नाश्ता करवाया गया। ईश्वर जाने साहब ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से उन पर कैसे जादू कर दिया कि सभी उनकी जय-जयकार बोलते हुए बाहर निकल रहे थे। पाठक समझ गए होंगे कि मुर्दाबाद 'जिंदाबाद' में कैसे बदल गया।"[1]

'कर्ज-वसूली' में शिक्षा विभाग में कोढ़ की तरह फैले भ्रष्टाचार के दुष्परिणामों के दृश्य हैं। दोनों कहानियों में शिक्षा का स्तर प्रभावित होता है। शिक्षक समाज इतना भ्रष्ट हो चुका है कि वह शिक्षा पर ध्यान न देकर समाज के अन्य वर्ग की तरह ही येन-केन-प्रकारेण अपनी वस्तुस्थिति को सुदृढ़ एवं मजबूत करने में लगा है।"[2] यह कहानियाँ वर्तमान समय की मानसिक स्थितियों की कहानी है। सामाजिक परिस्थिति से जूझता व्यक्ति जो अंदर से कुंठित होता जा रहा है, यथार्थता के साथ कहानियों में द्रष्टव्य है। आजादी से लोगों को बड़ी उम्मीद थी जो सिर्फ उम्मीद बनकर रह गयी, जिससे देश भर में उथल-पुथल मची, दंगे हुए। सबसे अधिक लोगों को शासन व्यवस्था से मोहभंग हुआ। सुवास दीपक की कहानियों में मोहभंग की दशा-दिशा का स्पष्टतः रेखांकन है। 'चक्रव्यूह और अन्य कहानियाँ' में 'विकल्प', 'धुलते बिंब', 'तुमिआमा के मारते पारोना' एवं 'टूटना'आदि कहानियों में मोहभंग की दशा के कारण देश में स्वार्थ भ्रष्टाचार, कुंठा, ईर्ष्या एवं दांपत्य जीवन में नए संबंधों का निरूपण हुआ है।

भारतीय जीवन संबंधों में परिवर्तन बोध को लेकर तमाम कहानियाँ लिखी गयी। सुवास दीपक की 'टकराव','पड़ोस' एवं 'बिल्ली की गले में घंटी' आदि कहानी संबंधों में नए परिवर्तन बोध की ओर संकेत करती है। दांपत्य में कटुता, पति-पत्नी के मध्य मन-मुटाव, यौन कुंठा आदि को सुवास दीपक की कहानी 'टकराव' में स्पष्टतः व्यंजित है। आज व्यक्ति आत्म-केंद्रित होने लगा है, जिसका प्रभाव संबंधों में पड़ने लगा है। इन रचनाओं में विसंगति बोध आर्थिक-राजनीतिक शोषण

[1]वही, पृ. 84

[2]भाषा. (जनवरी-फरवरी 2006). नई दिल्ली: केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय. भारत सरकार, वर्ष:45, अंक:3. पृ. 20

के कारण संबंधों में बिखराव उत्पन्न दिखाई देता है। 'चक्रव्यूह और अन्य कहानियाँ' की लगभग कहानियाँ मध्यवर्ग से जुड़ी कहानियाँ हैं। मध्यवर्गीय जीवन की बढ़ती वेदना प्रकट करती हैं- 'धुलते बिंब', 'टूटना', 'चक्रव्यूह', 'पड़ोस', 'टकराव', 'ग्राम सेवक' तथा 'कर्ज-वसूली' जैसी कहानियों में बेरोजगारी, आर्थिक शोषण, कुंठा, संत्रास, राजनीतिक दबाव आदि को परिलक्षित किया गया है। साठ के पश्चात के कथा में विघटित-मूल्य, संबंधों का बिखराव व नवीन चेतना उत्पन्न हुई है। यह रचनाएँ इस बात की पुख्ता गवाह हैं।

भ्रष्ट तंत्र तथाकथित नैतिक मूल्यों को नष्ट कर रहा है तथा इससे जुड़े लोग लाभ-लोभ व स्वार्थी होते जा रहे हैं, जो अपने हित एवं दूसरों पर ईर्ष्या की भावना रखते हैं। अपने को पद-स्थापित, प्रतिष्ठित बनाने की खोज में भ्रष्टाचार को अपनाते हैं। सुवास दीपक की 'कर्ज-वसूली' में शिक्षा व्यवस्था के नाम पर हो रहे भ्रष्टाचार का वर्णन है। प्रधानाध्यापक धन एकत्रित कर ट्रस्ट स्थापित करता है, लेकिन एकत्रित जमा राशि से कोई काम नहीं करता। वह पैसे खा जाता है। दूसरी कहानी में अध्यापक अपनी ड्यूटी विभाग से कैंसिल करवा लेता है। शाम को अध्यापक के पास छात्र-छात्राएं कल की परीक्षा के लिए पर्चा पूछने के लिए लगातार आने-जाने वालों का सिलसिला जारी रहता है। स्पष्टतः कहानीकार सुवास दीपक अपने समय, समाज एवं परिस्थिति को लेकर अत्यंत गंभीर और प्रासंगिकता से लैस चिंतनधर्मिता के परिपक्व व्याख्याकार हैं।

अध्याय-4

सुवास दीपक के उपन्यास 'अरण्य रोदन' का अंतर्वस्तु विधान

4.1 शिक्षा व्यवस्था की मूल्यहीनता

4.2 अरण्य रोदन उपन्यास में व्यवस्था विडंबना

4.3 युवा वर्ग की उदासीनता और मोहभंग

4.1- शिक्षा व्यवस्था की मूल्यहीनता

आजाद भारत में बढ़ते नगरीकरण और आजीविका की खोज में गाँव से नगरों तथा शहरों में अधिक संख्या बढ़ोत्तरी हुई है। बढ़ती जनसंख्या और रोजगार व नौकरियों की कमी के कारण सामान्य व्यक्ति आर्थिक संकटों को झेलने लगा। बेरोजगारों की संख्या बढ़ने लगी, व्यक्ति और अधिक निराश, हताश होकर नैतिक मूल्यों के पतन की ओर विमुख हो गया। ऐसी स्थिति में नैतिकता और सामाजिक स्थिति का पतन स्वाभाविक है। वर्तमान समय में भी भ्रष्टाचार, अनाचार, अनैतिकता के कारण व्यक्ति में मूल्यों का विघटन हुआ है। भ्रष्टाचार लोगों को अनेक अनैतिक मूल्यहीन कार्य हेतु मजबूर कर देता है। "स्वाधीन होने के बाद नागरिकों की आकांक्षाएं सरकार पूरी नहीं कर सकी। गरीब और अमीर के बीच की खाई बढ़ी। महंगाई ने लोगों का जीवन दूभर कर दिया। पुलिस राज कायम रहा। बेरोजगारी और भूखमरी बनी रही। भ्रष्टाचार पनपता गया।"[1] भ्रष्टाचार में व्यक्ति के सभी आदर्श लड़खड़ा जाते हैं। वास्तव में व्यक्ति निजी संघर्ष करते हुए सामाजिक पूर्ति करते-करते नैतिकता एवं मूल्य को त्यागने पर विवश और लाचार होता जाता है। वर्तमान युग में कोई भी कारोबार तेजी से आगे नहीं बढ़ पाता है, तो वह गैर-कानूनी या भ्रष्टाचार, अपराध कर्म करने पर उतर आता है। इसी के परिणामस्वरूप शासन व्यवस्था में नैतिकता का मूल्य विघटित हो रहा है। जिसका प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। साठ के बाद की रचनाओं में मूल्यों के पतन का चित्रण गंभीरता से हुआ है तथा किस प्रकार से इसका प्रभाव शिक्षा व्यवस्था पर हुआ है, इसकी मार्मिक अभिव्यक्ति 1985 में प्रकाशित उपन्यास 'अरण्य रोदन' में देखने को मिलती है। यह उपन्यास भारतीय शिक्षा व्यवस्था की कमियों-खामियों को उजागर करता है। अरण्य रोदन उपन्यास काल्पनिक रचना नहीं बल्कि एक ऐसी व्यवस्था का विरोध है जो देश को खोखला करता जा रहा है। इसके तमाम उदाहरण इस उपन्यास में दर्ज हैं। यह उपन्यास इसी पीड़ा को व्यक्त करता है। यही कारण है कि यह उपन्यास अपने रचनाकाल के समय से ही प्रासंगिक है। इसका द्वितीय संस्करण वर्ष 2021 में संभावना प्रकाशन, हापुड़ से पुनः प्रकाशित है।

[1]बंसल, बीना. (2001). नई कहानी में आर्थिक संघर्ष. पृष्ठ -61

यह उपन्यास पाठशाला के अंतर्गत व्याप्त अन्याय, भ्रष्टाचार के कारण कहीं न सुनाई देने वाली 'रुदन' का उपन्यास है। यह 'रुदन' कोई नहीं सुन पा रहा है। पाठशाला एक मंदिर के समान है और शिक्षक एक गुरू के रूप में पूजा जाता है। अरण्य रोदन उपन्यास की शुरुआत पाठशाला में कल्चरल प्रोग्राम से होती है। कार्यक्रम में जो भी उपस्थित हैं उन्हें इस कार्यक्रम में कोई रुचि नहीं है। कल्चरल प्रोग्राम में नए प्रतियोगी न होने के कारण पुराने छात्रों को वापिस अपनी प्रस्तुति देनी पड़ती है। कार्यक्रम शुरु होने पर भी सभी इसके प्रति बेपरवाह दिख रहे हैं। बड़ी कक्षाओं के लड़के खैनी बनाने में व्यस्त हैं। आयोजक महोदय अपनी महबूबा की याद में डूबे हैं जो कि दूसरी शहर में थी। इसके वर्णन में उपन्यासकार लिखते हैं -"कार्यक्रम का समय हो चुका है। आयोजक नामों की फेहरिस्त लिए एक अदद कुर्सी पर बैठा है। एक खीजे हुए निराशा प्रेमी सी मुद्रा उनके स्थायी सूखाग्रस्त चेहरे पर विराजमान है। अन्य शिक्षक अपनी-अपनी दिशाओं में खड़े चुप परिवेश से कटे दो-दो तीन-तीन के दल बनाकर नीचे बाजार की ओर देख रहे हैं। कुछ बातों में मशगूल हैं। प्रधानाध्यापक दफ्तर में ही चपरासी को न जाने किस बात पर डांट रहे हैं।"[1] सभी को कार्यक्रम में सिर्फ अपनी उपस्थिति लगानी है। कार्यक्रम में प्रतियोगी क्या प्रस्तुति करता है इसे बच्चे सुने या न सुने, लेकिन वह बड़ी तन्मयता से तालियाँ बजाते हैं। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाध्यापक द्वारा कविता प्रस्तुति के साथ सभा ख़त्म होती है।

राष्ट्रीय गीत गाने के बाद सभी अपने-अपने घरों की ओर निकल पड़ते हैं। "दरअसल तत्कालीन शिक्षा-पद्धति यह है कि देश के भविष्य की चिंता कोई नहीं करता। विद्यार्थी क्या सीख रहे हैं अथवा उनका विकास किस दिशा में हो रहा है। इसकी चिंता न तो अध्यापकों को है और न संस्थान के मुखिया अर्थात प्रधानाध्यापक महोदयों को है। जिनके कंधों पर देश-निर्माण का दारोमदार है, उन्हें तो बस अपनी रोटी सेंकने से मतलब है।"[2]

[1]दीपक, सुवास. (1985).अरण्य रोदन. पृष्ठ -2

[2] http://www.kanchanjangha.in/wp-content/uploads/2021/04/50-%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE-%E0%A4%B8%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0%A4%B

पाठशाला में शिक्षा मंत्री के आगमन की सूचना पहले ही दे दी जाती है। शिक्षा मंत्री महोदय के आगे सेठी साहेब (प्रधानाध्यापक) ने विद्यार्थियों के साथ-साथ पाठशाला की भी मरम्मत की। "केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि देश के विकास में विकास चाहे जो भी हो, जनसंख्या में हो, गरीबी में हो अथवा किसी मंत्री के आगमन पर होने वाले खर्च में हो, सभी से यश स्थापित किए जाते रहे हैं । शिक्षा मंत्री के आगमन पर होने वाले खर्च हेतु कस्बे में चंदे उगाहे गए। बच्चों से भी चंदा उगाहा गया।"[1] बच्चों को पहले से ही उत्तर रटा दिया गया, शरीर के अंगों के नाम अंग्रेजी में रटाया जाने लगा। कौन-कौन से विषय पढ़ाना है और कौन से प्रश्न पूछना है इन सबकी पहले से तैयारी कर ली गयी। प्रधानाध्यापक स्वयं अपने निगरानी में इसे देखा करते। "किसी जहाज के उड़ान भरने से पहले जिस प्रकार उसके सभी कलपुर्ज़े की आधिकारिक रूप से जांच-परख कर ली जाती है, उसी प्रकार सेठी साहब ने भी स्कूल रूपी जहाज को उसके कल-पुर्जे रूपी छात्र-छात्राओं को तथा जहाज के पायलट रूपी शिक्षकों की जांच पूरी करके शिक्षा मंत्री के आने से दो-तीन दिन पहले तक उड़ान के लिए तैयार कर लिया।"[2] मंत्री महोदय ने ऐसी प्रगति नहीं देखी थी। फर्राटेदार रटे प्रश्न-उत्तरी, शरीर के अंगों के अंग्रेजी नाम, बच्चों से नाम गिनाने में गलती हो जाती, तब भी मंत्री जी को पता नहीं चलता। वे कभी स्कूल नहीं गए थे, गाँव में किताबों से ज्यादा उन्हें भैंसों से प्यार था। पाठशाला नाम सुनते ही खेतों में भाग जाते। "मंत्री महोदय को अब खाक पता था कि "नोज़" नाक होती है या कान। उनके पीछे पिल्लों की तरह दुम हिलाते निदेशक, इंस्पेक्टर आदि जानते हुए भी रंग में भंग नहीं करना चाहते थे। वैसे भी तो यह देश की प्रगति का प्रश्न है थोड़ी बहुत गलतियाँ तो होती ही रहती हैं...।"[3] उनके लिए यह काफी रोमांचक रहा, सेठी साहेब की इस पद्धति से खुश होकर शिक्षा मंत्री सेठी साहेब की पदोन्नति की बात करता है और सेठी साहब प्रधानाध्यापक से प्रमोट होकर इंस्पेक्टर बन गए। सारी मेहनत स्कूल छात्र, अध्यापकों का लेकिन नाम ले गए सेठी साहब। जाते-जाते सेठी साहब अपने वायदे दे जाते हैं कि विभाग जाकर सभी की

[1]दीपक, सुवास.(1985). अरण्य रोदन. पृष्ठ -11

[2] वही, पृ. 09-10

[3] वही, पृ. 11

तकलीफ़ें दूर करूंगा। जैसे सरकार वोट लेने के लिए वायदे कर जाती है, लेकिन करती कुछ नहीं। "वायदे करना तो हमारे देश का एक सांस्कृतिक पहलू है अन्ततः सेठी साहब ने भी सभी शिक्षकों को आश्वासन दिया कि विभाग जाकर वह सभी की तकलीफ़ें दूर करने के लिए जी तोड़ मेहनत करेंगे।"[1] सब अपने-अपने में व्यस्त हैं, उन्हें न संस्कृति की पड़ी है न बच्चों के भविष्य की। शिक्षा व्यवस्था की मूल्यहीनता का दूसरा स्वरूप स्वयं प्रधानाध्यापक महोदय द्वारा दिया गया है। प्रधानाध्यापक सिर्फ अपने स्वार्थ और पद लोभ की सोचते रहते हैं, उन्होंने शिक्षा संस्था को अपनी स्वार्थ लिप्ति हेतु अपनाया। उनके लिए यह सब मात्र व्यवसाय है। कितने खेद की बात है कि इसमें शिक्षा संस्था से इतर विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया गया। उनका क्या कसूर था? बेचारे देश का भविष्य। सेठी साहब जैसे प्रधानाध्यापक के कारण शिक्षा संस्था आगे बढ़ने में असमर्थ और बदनाम है।

स्कूल के नए प्रधानाध्यापक चट्टोपाध्याय ईमानदारी से अपना कार्य करता है। उन्हें आय का कोई लोभ नहीं, उनकी कभी पदोन्नति नहीं हुई, परंतु तबादला होता रहा है। वे पूरी जिंदगी इधर से उधर कार्य करते गए, लेकिन अपने लिए कुछ खास जुटा नहीं पाये। उनकी जिंदगी इतनी व्यस्त है कि परिवार के राशन-पानी की कमी के साथ-साथ हाथ में फूटी कौड़ी नहीं। पत्नी को समझ नहीं आता कि इतने साल सरकार की नौकरी करने के बाद भी घर में इतनी तंगी क्यों है? इस बात को लेकर दोनों में झगड़ा भी होता रहता है। पत्नी अपनी डेढ़ साल की बच्ची को दफ्तर के मेज पर रखकर चली जाती है। "यू नो, मैं सरकार का नमक खाता हूँ और पूरा काम करता हूँ। पत्नी कहती- तभी तो घर में नमक तेल की हर समय किल्लत रहती है। संयम पैदा करने को कहते हैं। जिस सरकार का नमक खाते हैं उसी से परिवार के लिए जहर मँगवा लो।"[2] हर माह दो सौ से ज्यादा ऋण, ईमानदार इतना कि स्कूल के फ़ंड में पड़े हजार रुपये को अपनी निजी आवश्यकताओं के लिए खर्च नहीं करता। लेकिन कुछ एक महीने के बाद इनका तबादला दूसरी पाठशाला में हो गया। दूसरी ओर लेखक का भी दूसरी पाठशाला में तबादला हो गया।

---

[1] वही, पृष्ठ -12

[2] वही, पृष्ठ -16

दूसरे स्कूल में शिक्षा संस्था का अलग ही नज़ारा देखने को मिला। लेखक विज्ञान का शिक्षक है, लेकिन उसे यहाँ हिंदी पढ़ाने के लिए कहा जाता है। जब लेखक ने कहा कि वह विज्ञान का शिक्षक है और यहाँ भी वे विज्ञान ही पढ़ायेगा तो महिला अधिकारी लापरवाही से कहती हैं- "जो कुछ भी पढ़ाओ, क्या फर्क पड़ता है?"[1] क्योंकि अभी यहाँ प्रधानाध्यापक की कुर्सी खाली है, सो इंचार्ज महिला अधिकारी को बनाया गया था। महिला अपने पाँच साल के बच्चे के साथ स्कूल आती है और कागजी काम करती है। और तो और महिला अधिकारी अपनी जवानी के किस्से शिक्षक-शिक्षिका के आगे सुनाया करती हैं। महिला अधिकारी का व्यवहार टीन एज बच्चों पर इसका क्या असर पड़ रहा होगा इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

ज़्यादातर शिक्षण संस्थान आय का एक साधन या व्यवसाय बनकर रह गए हैं। बच्चों का भविष्य अधर में है। सरकारी विद्यालयों की स्थिति निम्न से भी निम्न स्तर की हो चुकी है। एक तो सरकारी, ऊपर से लापरवाही, अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार के कारण माँ-बाप स्थिति से अवगत होकर अपने बच्चों को किसी प्राइवेट स्कूल में एडमिशन करवा देते हैं। जिससे दो-चार अंग्रेजी के शब्द सीख सकें। 'अरण्य रोदन' की एक और महत्वपूर्ण बात विशेषता है कि यह लेखक द्वारा शिक्षा संस्था की दयनीय स्थिति को देखकर यह रुदन बनकर पाठकों के सामने उपस्थित है। "पाठशाला का मुख्य उद्देश्य निरपेक्ष्य है, सापेक्ष्य नहीं हैं।..... लोकतांत्रिक पद्धति से वह पाठशाला चलाना चाहते हैं। विशुद्ध प्रशासनिक पद्धति से। कक्षा का पाठयक्रम समाप्त होना चाहिए, चाहे कोई शिक्षक एक दिन में समाप्त कर दे, चाहे कोई शिक्षक एक पूरा साल लगा दे। उनके पास कोर्स पूरा होने की लिखित रिपोर्ट पहुंचनी चाहिए। कक्षाओं में आठवीं कक्षा के छात्रों को वर्णमाला भी पूरी तरह से आती है या नहीं, इस बात की न तो उन्हें चिंता है और न ही इसकी

[1]दीपक, सुवास.(1985). अरण्य रोदन. पृष्ठ -18

जाँच करने की फुर्सत ही उन्हें है।"[1] यह स्थिति कमोवेश प्रत्यक्ष रूप में आज भी बरकरार है। इसका चित्रण अरण्य रोदन में दर्ज है।

कुर्सी का लोभ सभी जगह है। चाहे वह सरकार की कुर्सी हो या विद्यालय में प्रधानाध्यापक की। महिला अधिकारी नए प्रधानाध्यापकों के बीच कुर्सी हेतु एक दूसरे को बुरा-भला बोलने लगे। प्रधानाध्यापक पाठशाला में सरस्वती पूजा एवं भजन कीर्तन सिखाने लगे। समय सारणी में परिवर्तन हुआ, अब शिक्षक अपना विषय न पढ़ाकर बच्चों को भजन-कीर्तन सिखाने में लग गये। पाठशाला, पाठशाला न रहकर मैडम और विपक्षी दल प्रधानाध्यापक के लिए अलग ही अखाड़ा हो गया। मैडम अपनी पुरानी सत्ता पाने के लिए बहाने करने लगी, कभी पाठशाला न जाना और प्रधानाध्यापक के विरूद्ध साजिश तैयार करने लग गयी।

सांस्कृतिक कार्यक्रम, पूजा, भजन और त्यौहार, समारोह आदि में पाठशाला का समय अधिक व्यतीत होने लगा, जिस कारण विद्यार्थी और शिक्षक अध्ययन-अध्यापन में पूरा समय नहीं दे पाये। इसमें विद्यार्थी क्या सीख पा रहा है और क्या नहीं, इसका किसी को फर्क नहीं। हर व्यक्ति जैसे-तैसे कोर्स पूरा करवा देता है, ताकि किसी तरह का विवाद न उत्पन्न हो। "अरण्य रोदन सुवास दीपक के 1967 से 1978 तक के वर्षों में सिक्किम के विभिन्न इलाकों के स्कूलों में नौकरी करते बिताए जीवनांश का इतिहास है, उनकी आत्मकथा का एक परिच्छेद है, यह एक शिक्षक की संकीर्ण नौकरशाही मनोवृत्ति से भोगने वाली विडंबना की आवृत्ति है। यह शिक्षा व्यवस्था और पद्धति का नग्न चित्रण है – अतः प्रत्येक शिक्षक की जीवनी है। यह वर्तमान शिक्षा पद्धति की तस्वीर है। भारत के स्वतंत्र होने से पहले से अंग्रेजों द्वारा स्थापित शिक्षा सिद्धांत की लकीर पीटती यंत्रवत चल रही हमारी शिक्षा-व्यवस्था ही वस्तुतः इस पुस्तक की जननी है। इसीलिए यह पुस्तक सुवास दीपक की ही नहीं, अपितु वर्तमान भारत वर्ष के किसी भी एक शिक्षक की आत्मकथा है।...अपितु सम्पूर्ण प्रशासन में फैले कैंसर की तरह व्याप्त अनैतिकता असभ्य जंगली प्रवृत्ति की

[1]वही, पृष्ठ -41

तस्वीर यहाँ दिखती है।"[1] शिक्षा प्रशिक्षण करवाया जाता है, फिर भी शिक्षा व्यवस्था की प्रगति की भूमिका बहुत ही कम मात्रा में बढ़ी है। अरण्य रोदन "पाठकों के समक्ष एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है कि इस देश का क्या हो? जहां के शिक्षण-संस्थानों में अध्यापकगण अध्ययन-अध्यापन से कहीं अधिक रुचि अपने स्वार्थ की पूर्ति और एक-दूसरे की छीटाकाशी में रखते हैं। ऐसे शिक्षकों की शैली भी ऐसी है कि जिसे सुनकर सम्पूर्ण शिक्षा-व्यवस्था शर्मसार हो उठे।"[2] "अब बोलो, सूअर के बच्चों तुममें किसको ज्यादा जवानी की पीड़ा सता रही है, राजू? … देखो भाई, यह सब चूतियापंथी है। जो नहीं मानता, उसकी गाँड़ काट लो।"[3] हम कह सकते हैं कि सुवास दीपक ने शिक्षा के गिरते स्तर को बहुत ही बारीकी के साथ अपने इस उपन्यास में दर्ज किया है। एक शिक्षक जिन्हें समाज का एक आदर्श नागरिक माना जाता है, उनकी भाषा और गिरते स्तर की कई मिसालें सुवास जी ने अपने इस उपन्यास में बखूबी दर्ज की है।

[1]विचार, नेपाली साप्ताहिक, (सं. सुवास दीपक) वर्ष: 5, अंक:5, जुलाई, 1985 से उद्धृत

[2] http://www.kanchanjangha.in/wp-content/uploads/2021/04/50-%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE-%E0%A4%B8%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0%A4%BE%E0%A4%B8-%E0%A4%85%E0%A4%B0%E0%A4%A3%E0%A5%8D%E0%A4%AF-%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A4%A6%E0%A4%A8.pdf

[3] दीपक, सुवास.(1985). अरण्य रोदन. पृष्ठ -3

4.2 अरण्य रोदन उपन्यास में व्यवस्था बिडंबना

आधुनिक समय में हम अपनी वस्तु स्थिति के प्रति असंतुष्ट हैं। व्यवस्था और सत्ता के सहारे व्यक्ति अपने स्वार्थ भावों की पूर्ति और पद अर्जित करता है। आम जनता यह जानते हुए भी विरोध नहीं करती। "व्यवस्था के अंतर्गत सभी तरह के संगठन और संस्थाएँ, वे राजनीतिक हों या सामाजिक आ जाती हैं। क्योंकि मनुष्य का शोषण करने में इन सबका भी हाथ है । शोषण होने पर मनुष्य भोथरा हो जाता है। उसकी संवेदनाएं चरमरा जाती है और वह अमानवीय हो जाता है।"[1] युग परिस्थिति के साथ-साथ व्यक्ति के तालमेल में धीरे-धीरे परिवर्तन की गति को महसूस किया जा सकता है। शासन तंत्र की आड़, भ्रष्टाचार और झूठ ने उसे झकड़ लिया है। जिसके फलस्वरूप मानवीय संवेदना कम होती नज़र आ रही है। आज भ्रष्टाचार हमारे समक्ष बड़ा संकट है। व्यक्ति अपने यथार्थ को अपनाने से कतराता है। कहीं उसकी नौकरी न चली जाए या मेरे बाद कोई अपना ही इस पद में आए तो अच्छा रहेगा इत्यादि। व्यक्ति को सबसे पहले अपने बारे में सोचने और समझने हेतु मजबूर कर है। "आज का व्यक्ति जैसे अपनी मान्यताओं के संदर्भ में टूट गया है। संत्रास, वैमनस्य, गुटबाजी, घूसखोरी, भ्रष्टाचार चरित्र एवं विश्वास का ह्रास तथा प्रशासनिक अक्षमता आदि स्थितियाँ व्यक्ति की निजता को पूरी तरह खंडित कर रही हैं। यांत्रिकता, विसंगतियाँ, नैतिक एवं स्थापित मूल्यों का ह्रास, असंतोष में आज व्यक्ति जिस तरह घिर गया है, उसे सार्थक एवं समर्थ अभिव्यक्ति देना कहानीकार का मकसद हो गया है।"[2]

मूल्यों के बदलने के साथ व्यक्ति की मानसिकता भी पूरी तरह बदल रही है। भारत स्वतंत्र हो गया, परंतु जो स्वप्न देखे थे वे साकार नहीं हुए। मनुष्य उच्च जीवन जीने की आकांक्षा में लोभ, स्वार्थ और भ्रष्टाचार का मार्ग अपनाता है और सीधा-साधा जीवन व्यतीत नहीं कर पाता। भ्रष्टाचार व्यवस्था को अव्यवस्थित बना रही है। यह तंत्र व्यक्ति में झूठ, लोभ और स्वार्थ की भावना पैदा करता है, जिससे व्यक्ति में संबंधों का बिखराव, मानवीय मूल्यों का टूटना, डर और संत्रास स्थिति

[1] सिंह,डॉ. प्रेम. (2003). साठोत्तरी कहानी और परिवर्तित मूल्य. पृष्ठ -165
[2]वही, पृष्ठ -166

पैदा होना स्वाभाविक है। "क्रमश: राजनीतिज्ञों की पद लिप्सा, स्वार्थपरता बढ़ती गयी। इनका पूंजीपतियों और नौकरशाहों से एक 'अव्यक्त समझौता' होने लगा। यद्यपि ऐसा कहना न्यायसंगत नहीं होगा कि देश जहाँ स्वतंत्रता के समय था, वहीं खड़ा है।...कितनी परियोजनाएं मात्र कागजी बनकर भी रह गयी। शनै: शनै: देश की जगह व्यक्ति महत्वपूर्ण होने लगा।"[1] सरकार की योजनाएँ कागजी बनकर रह गयी। इन्हीं विसंगतियों मसलन सामाजिक विषमता, निराशा, अकेलापन, भय आदि को शब्द प्रदान करने के लिए इस दौर के लेखकों ने अपनी कलम उठाई, इनमें सुवास दीपक की रचनाधर्मिता भी उल्लेखनीय है। लेखक की मानसिक पीड़ा जब चारो तरफ व्याप्त अन्याय और भ्रष्टाचार में दबने लगती है, तब वह उस दंश का रोदन स्वयं लिखने बैठता है। पूरे उपन्यास में विसंगतिबोध को इस रूप में दर्ज किया गया है जो लेखक का निजी न होकर सामाजिक प्रतीत होता है। एक प्रकार से देखें तो इस उपन्यास का कथानक भारतीय शिक्षा-व्यवस्था की समसामयिक स्थिति पर केन्द्रित है।

उपन्यास में कल्चरल प्रोग्राम पाठशाला में मनाया जा रहा है। लेखक इसकी महत्ता को समझाते हुए बताते हैं कि दुकान हो या संसद इसके बिना हमारा देश नहीं चलता। सरकार हर बार की तरह सांस्कृतिक भावनाओं की बातें करके आम जनता की भावनाओं से खेल जाती है। कल्चरल प्रोग्राम में किसी की रुचि न देखते हुए आयोजक महोदय (डोगरे) कल्चरल प्रोग्राम संयोजक से अपना त्यागपत्र देना चाहते हैं, लेकिन (सेठी साहब) प्रधानाध्यापक सभा बैठाकर उसे जैसे-तैसे मना लेते हैं और वह अपना इस्तीफा वापिस ले लेते हैं। "त्यागपत्र उसी प्रकार वापस ले लिया जिस प्रकार हमारे देश के मंत्री सुबह त्यागपत्र देते हैं और शाम को वापस ले लेते हैं।"[2] जैसे भी हो सरकार चलानी है और सरकार को अपने साथ ऐसे व्यक्ति को रखा जाता है जो कि उनके लिए सिर्फ एक रास्ता बना रहे जैसे कि डोंगरे।

[1] सिंह, डॉ. विमला. (1999). साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में उच्चवर्ग एवं निम्नर्ग का स्वरूप.पृष्ठ -4

[2] दीपक, सुवास, (1985). अरण्य रोदन. पृष्ठ -4

शिक्षा मंत्री अपने स्वार्थलिप्सा हेतु आये और इधर प्रधानाध्यापक अपने स्वार्थ के लिए पाठशाला में तैयारी करने लग गए। "मंत्रियों को जो निरीक्षण करना होता है, वह तो आप जानते ही हैं कि कैसा और किस पद्धति का होता है। दुकानदारों की तरह फोटोग्राफरों को पोज़ देना, न्यूज़रील बनवाना, अखबारों में लम्बे-लम्बे लिखित भाषणों के साथ फोटो खिचवाना आदि से लेकर अंत तक का समूचा काण्ड पूर्व निर्मित होता है। सत्ता के सभी घटकों का इसमें निजी स्वार्थ छिपा रहता है। अतः सेठी जी ने भी उस शुभ दिन के लिए बाकायदा लंगोट कस लिया।"[1] मंत्री के आगमन के लिए हो या देश के अन्य विकास स्थिति के लिए हो सब में भ्रष्टाचार का रूप होता है, इसीलिए तो मंत्री आगमन हेतु कस्बे और पाठशाला के बच्चों से चंदा उठवाया गया। गाय का दूध बेचने वाला आज शिक्षा मंत्री कैसे बना किसी को नहीं पता। किताबों से ज्यादा भैंसों में लगाव रखने वाला दूध बेचने वाले से डेयरी फार्म का मालिक बन गया और देखते-देखते देश का शिक्षा मंत्री बन गया। "गाँव में वह गोरी के प्यार और भैंस के सानिध्य में जवान हुए। उसके बाद डेयरी फार्म के मालिक कैसे बन गए इसके बारे में गाँव वालों को ज्यादा मालूम नहीं है। खैर, पाठक इसी बात पर तसल्ली कर लें कि भारत में यह सब कुछ संभव है।"[2] लेखक यह संकेत करता है कि मंत्री जी इतने में नहीं रुकते, डेयरी फार्म के दूध में ऐसा क्या मिलाया जाता है कि जनता की सेहत बिगड़ती है और लाखों देश-विदेश की दवाइयाँ, डाक्टर और हाकिम अच्छे-अच्छे को स्वस्थ करने के लिए आ पहुँचते हैं। यह घोटाला जनता को बेवकूफ बनाकर उनकी बची-खुची आय भी छीन लेते हैं। सेठी साहब के इंस्पेक्टर होने से सभी को यही खुशी थी कि चलो विभाग में कम से कम कोई अपना आदमी तो है। विभाग में अपने आदमी का होने से सबको उससे अनेक आशाएँ बन जाती हैं। नौकरी पाने में सिफ़ारिश, विभाग से व्यक्तिगत कामों में मदद इत्यादि और भारत में 'अपने आदमी' की मानसिकता नौकरशाही से लेकर शासन व्यवस्था तक सबसे ऊपर है। "भारत में सौ से एक कम प्रतिशत अर्थात 99 प्रतिशत नौकरीपेशा मानस इसी आशा में जीता है। दूसरे की बैसाखियों के सहारे अपने भविष्य को संवारने की फिराक में रहता है क्योंकि वह ख्वाहिश अच्छी पोजीशन पाने

[1] वही, पृष्ठ -9

[2] वही, पृष्ठ -9

की होती है।"[1] वर्तमान परिवेश में कोई भी क्षेत्र भ्रष्ट तंत्र से अछूता नहीं है एवं इसके प्रभाव से व्यवस्था गंभीरता से प्रभावित है। समय आने पर इसकी आवश्यकता पड़ती है, इसी पूर्ति के लिए सरकारें विभिन्न अपराधियों से राशि इकट्ठा करती हैं। धन वर्तमान के व्यवस्था के लिए मूल्य स्त्रोत बन गया है। इसके माध्यम से पूरे व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है।

भारत वर्ष में काले धन की कमी नहीं है। अर्थ के लोभ में व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी है। व्यवस्था में भ्रष्टाचार विडंबना बन कर रह गया है। आज सरकारी दफ्तरों में भ्रष्टाचार कायम है तथा ऊँचे पदों में बैठे लोगों द्वारा पदों का पूरा दुरूपयोग किया जा रहा है। उपन्यास 'अरण्य रोदन' में मंत्री, सेठी साहब, एवं मैडम के विपक्षी पाठशाला के नए प्रधानाध्यापक द्वारा भी भ्रष्टाचार को अपनाया गया। ये सभी नैतिक रूप से एक कमजोर व्यक्ति हैं जो अपने पदों का दुरूपयोग करते हैं। मंत्री से लेकर प्रधानाध्यापक सभी सरकारी भ्रष्ट कर्मचारी हैं। जिनके लिए व्यवस्था मात्र एक व्यवसाय है। उचित समय आने पर स्थिति का लाभ उठाते हुए अपने सरकारी पदों लाभ उठाते हैं, आम आदमी का दोहन करते हैं। "पारंपरिक उपन्यास से कुछ भिन्न सुवास दीपक के उपन्यास अरण्य रोदन को पढ़ने के बाद ऐसा लगा कि लेखक उपन्यास को एक नया ढाँचा देने की कोशिश कर रहे हैं। लेखक ने शिक्षण संस्थाओं को केंद्र बनाया है और उसके माध्यम से पूरे भारत का चित्र उपस्थित किया है। लेखक ने शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों तथा स्कूल से संबंधित राजनेताओं के भ्रष्ट आचरण को नजदीक से महसूस किया है और शिद्दत के साथ उसे चित्रित किया है। अपने आप को शोषित-पीड़ित कहने वाला शिक्षक वर्ग भी भ्रष्ट, बेईमान, चापलूस और अनैतिक हो गया है, तब केवल मैकाले का ही दोष नहीं है। देश की जब पूरी व्यवस्था सड़ चुकी है, तो शिक्षण संस्थाएं कैसे बची रह सकती है।"[2] शिक्षा व्यवस्था वह व्यवस्था है जिसे बहुत ही पवित्र माना जाता रहा है, लेकिन इस व्यवस्था में व्याप्त अराजकता ने इसे अनैतिकता के जद में डाल दिया है।

---

[1]वही, पृष्ठ -12

[2]रविवार (दिसंबर,1985, हिन्दी साप्ताहिक). वर्ष:9. अंक:14 से उल्लिखित

4.3- युवा वर्ग की उदासीनता और मोहभंग

स्वतंत्रता पश्चात आम आदमी तत्कालीन व्यवस्था से पूरी तरह टूट गया। प्रत्येक वर्ग को यह आशा थी कि आजादी के बाद चारो तरफ सुख-शांति होगी, परंतु निराशा हाथ लगी। "जब हमारे देश के नेता, पूंजीपति गरीब जनता के बारे में न सोचकर अपने ही स्वार्थ में दिन-रात डूबे रहे। देश में भयंकर अकाल, भुखमरी, गरीबी, अत्याचार तथा आम-आदमी के शोषण की परिस्थितियां पहले जैसी बनी रही। उनमें कोई बदलाव नहीं आया। तो भारत देश की तमाम जनता का देश की आजादी से मोहभंग हो गया।"[1] राजनीतिक अवमूल्यन के कारण आम-जनता का शोषण होता रहा। देश के सत्ताधारी नेताओं को अपने स्वार्थ से मतलब है। आज लूट-पाट, भ्रष्टाचार के कारण तमाम युवा वर्ग व्यवस्था से उदास है।

सुवास दीपक ने अपनी कथा रचना में समसामयिक परिप्रेक्ष्य को उद्घाटित किया है। उनका उपन्यास अरण्य रोदन जिस समय लिखा जा रहा था, देश एक विषम परिस्थिति के दौर से गुज़र रहा था। उपन्यासकार ने अपने समय के व्यवस्था तंत्र में हो रही तमाम समस्या, भ्रष्टाचार विडम्बना एवं बुराइयों का अन्वेषण किया है। लेखक ने राजनेताओं के छल-कपट, कालाबाजारी, लूट, भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद की झलक को अरण्य रोदन में दर्शाया है।

अरण्य रोदन उपन्यास में युवा समुदाय की विविध स्थितियों को दर्शाया गया है। युवा वर्ग का निर्माण घर के अलावा अधिकांश भविष्य पाठशाला और पाठशाला के परिवेश में होता है। मसलन- "यह सर्वविदित सत्य है कि पाठशाला ही भविष्य के महापुरुषों को बनाने के लिए प्रशिक्षण केंद्र है। उनकी वास्तविक भूमिका हम "सुयोग्य" अध्यापकों और अध्यापिकाओं के सामूहिक प्रयास से तैयार कर रहे हैं। बड़े होकर लड़कियों को दहेज के कारण कुंवारी रहने के त्रास से स्वयं को झुलसाना पड़ता है। अतः वे वय:सन्धि पार करते-करते अपने-अपने सहपाठियों को प्रेम-पत्र लिखने लग जाती हैं। लड़के भी फिल्मी अभिनेताओं की तरह रूमानी प्रेम में डूब जाते हैं।

[1]डॉ. कृष्ण, कुमार. (1986). कविता की सार्थकता. पृष्ठ-13

किताबों के बीच सस्ते उपन्यास और घटिया रोमांस की पत्रिकाएँ होती हैं और पाँचवी कक्षा में पढ़ती अधिकांश लड़कियाँ ड्राइवरों के साथ भाग जाती हैं।"[1] पाठशाला में यह स्थिति होने के पीछे हम किसे दोष देंगे? यह स्थिति अधिकतर पाठशालाओं में देखी जा सकती है जो कि युवा वर्ग के भविष्य के लिए उदासीनता की बात है। पाठशाला में मैडम प्रधानाध्यापक तो नहीं बन पायी, लेकिन पाठशाला का चार्ज मिलते ही अपने नाम की स्टम्प बनवा ली थी। मैडम को पाठशाला में अनुशासन, अच्छे व्यवहार, अपने व्यक्तित्व आदर्श के सामने प्रस्तुति रखने की कभी कोशिश नहीं करती। "वह जब कभी गर्भवती शिक्षिकाओं से बतियाती अपने शौहर के कच्चे-चिट्ठे प्रस्तुत कर रही होती तो उनके गोद की बच्ची जिसके शरीर पर मात्र गंजी होती, मुँह गंदा, टट्टी से लथपथ चूतड़ लिए आती तो वह उसे पकड़कर पाठशाला के नल पर ले जाती और चूतड़ धो देती पर मुँह नहीं धुलाती। फिर उसे उठाकर स्तन मुँह में दिये तीसरी कक्षा में घुस जाती।....और श्यामपट पर खड़िया से लिखती "सदा साफ रहो"। बच्चों को कापी का पूरा पृष्ठ लिखने की हिदायत देकर बच्चे को स्तनपान कराती अपनी कक्षा में चली जाती।"[2] लेखक इस बात को देखते हुए लिखते हैं कि पाठशाला में आने के बजाय इससे अच्छा तो बच्चे घर में ही रहते, तो घर का कुछ काम तो सीख लेते। पाठशाला में सुबह से लेकर शाम तक बच्चों पर शिक्षक का किस प्रकार प्रभाव पड़ रहा है, यह अंदाजा लगाया जा सकता है। पाठशाला के माहौल में बच्चे कुनफू-कराटे करते-करते अपने दोस्तों से कुछ 'पवित्र गाली' भी सीख लेते हैं, जो भविष्य में संसद या नामी सभा में बोली जा सकती है, क्योंकि इन शब्दों का चयन करना उन्होंने बचपन में ही सीख लिए, वे ब्रूस-ली के पदचिन्हों पर चलने लगते हैं। मैडम स्कूल की बड़ी लड़कियों एवं शिक्षिकाओं से अपनी जवानी की गप्पे लड़ाती पायी जाती हैं।

पाठशाला में कई ऐसे फिल्मी रोमांस केस मैडम के पास आते हैं, जिसे मैडम बड़ी आसानी से सुलझा देती हैं। मैडम को इन छोटी-छोटी हरकतों में कोई दिलचस्पी नहीं है, बल्कि पूरा खुली छूट है। "ये तीनों-चारो रमेश को अपना असली प्रेमी जताती हैं। बात कुछ बिगड़ जाने पर

[1]दीपक, सुवास. (1985).अरण्य रोदन.पृष्ठ -20

[2] वही, पृष्ठ -19

खीचा-तानी हो गई। रमेश कृष्ण कन्हैया की तरह निर्लिप्त होकर अश्वासन दे रहा था। एक ने दूसरी की पोल खोल दी, प्रेम पत्र दिखाने की धमकियाँ दी। क्लास में एक-दूसरे के झोटे खीचे। रोई चिल्लाई और अंत में बात मेरे पास आनी ही थी न, सो आ गई।"[1]

नए प्रधानाध्यापक के पाठशाला में आने से कई परिवर्तन हुए, वास्तव में यह परिवर्तन पूर्व चार्ज पर रही मैडम के प्रभाव को कम करना चाहते हैं। "यह सौभाग्य की बात कहें या दुर्भाग्य की कि हमें अपने अध्यापन काल में जितने भी प्रधानाध्यापकों के मातहत अपनी सेवाएँ अर्जित करनी पड़ी वे सभी पहुंचे हुए ही थे....उनका कारोबार पाठशाला चलाना था ही, पर इसके साथ ही साथ उन्होंने कई लघु और कुटीर उद्योगों से स्वयं को जोड़ कर देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, तकनीकी, शैक्षिक – कहने का मतलब यह है कि सर्वांगीण प्रगति एवं उन्नति के लिए सिर पर कफन बांधा था।"[2] इसीलिए पाठशाला में आए दिन मैडम और नए प्रधानाध्यापक के बीच छीना-झपटी होती रहती है। पाठशाला में नए शिक्षक की भर्ती में नवाब साहब और नई अध्यापिका कन्या की प्रेम कथा पूरे पाठशाला में फैल गई। प्रधानाध्यापक का मानना था कि बच्चों में अनुशासनहीनता, सांस्कृतिक विहीनता और धार्मिकता की स्थिति इसलिए उत्पन्न नहीं हुई, क्योंकि अभी तक इस पाठशाला में वे और नवाब साहब जो नहीं थे। पाठशाला में आए दिन पूजा, भजन-कीर्तन, त्यौहार से पाठशाला में सांस्कृतिक क्रांति आ चुकी थी। जिससे प्रधानाध्यापक काफी खुश थे। शिक्षिका अपने विषय न पढ़ाकर बच्चों को भजन सिखाने लग गयी।

परिवार, स्कूल, संसद राजनीतिक दल आदि संस्थाओं के माध्यम से देश की प्रगति के लिए युवावर्ग का महत्वपूर्ण हस्तक्षेप रहता है। देश को मुक्ति दिलाने में भी युवा वर्ग का बलिदान रहा है। राजनीतिक षड़यंत्र और बढ़ती भ्रष्टाचार के खिलाफ विरोध करते युवा वर्ग सड़कों पर आ खड़े होते हैं। वर्तमान समय में युवा शक्ति की भागीदारी से ही आने वाले दौर को प्रेरणा मिल रही है।

---

[1] वही, पृष्ठ -22

[2] वही, पृष्ठ -34

जैसे भी हो पाठशाला तो चलानी है- शालिग्राम नामक शिक्षक जो काफी वर्षों से बच्चों को पढ़ाते आ रहे हैं, चेहरे पर बड़े विद्वान की मुद्रा लिये रहते हैं। दूसरों की जासूसी करने में उनका उम्दा हुनर है और लोगों को पहली झलक में यहाँ धोखा भी हो जाता है। "हमने जब उसे दुआ सलाम की थी, तो इसने एक ऊँचे ओहदे वाले अफसर की तरह हमारी दुआ सलाम का कोई उत्तर नहीं दिया था।...उसी दिन इस मास्टर के उक्त व्यवहार से हमें लगा था कि हो सकता है कि वह सबसे ज्यादा पढ़ा लिखा हो।"[1] शालिग्राम शिक्षक घंटी बजने के काफी बाद कक्षा में आते हैं। शालिग्राम शिक्षक बच्चों को 'अकबर दी ग्रेट' से परिचित कराते हैं। दो-चार पंक्तियां खत्म करके एक भौंगे लड़के को उठाकर पढ़ने के लिए कहते हैं। भौंगे होने के कारण मास्टर की ओर देख रहा होता है, लेकिन ऐसा लगता है कि वह दरवाजे की ओर देख रहा हो। "कुत्ते की दुम तेरा बाप कब पैदा हुआ था?

सर,पता नहीं

सटाक! लड़का सारंगी रटने लग जाता है।

तेरा बाप मीन्स अकबर।

पाठ के अंत में दो दशकों से चल रहा एक ही प्रश्न, वाक्य दोहराता है। इसी के साथ अन्य बच्चों से यही प्रश्न पूछकर पाठ खत्म हो जाता है।

व्हेयर इज ताजमहल?

कीप सायलेंस! कहकर मास्टर एक लड़के को इशारा करता है।

सर, ताजमहल सिलीगुड़ी में है।

नहीं सर कलकत्ता में है।

तो आगरे का ताजमहल क्या तुम्हारे दूसरे बाप ने बनाया था?

[1]वही, पृष्ठ -49

नहीं सर, अलाउद्दीन खिलजी ने बनाया था।

तभी घंटी बज जाती है और मास्टर घंटी बज चुकने के बाद एक मिनट भी कक्षा में टिकना अपनी तौहीन समझते हैं।"[1] इसी वार्तालाप में कक्षा खत्म हो जाती है। उक्त उद्धरण शिक्षा व्यवस्था के पतन एवं अध्यापकों के गैर जिम्मेदारना व्यवहार का मुकम्मल उदाहरण है।

पाठशाला में हर महीने विभाग से शिक्षकों के लिए ट्रेनिंग आयोजित होती है, जिसमें राज्य के सभी शिक्षक उपस्थित होते हैं। चूंकि ट्रेनिंग की जगह शहर के सबसे ऊँचे स्थल पर थी, तो कुछ शिक्षक ठंड के मारे पीने लगे थे। ट्रेनिंग में बीस वर्ष की उम्र से लेकर पचास साल तक के शिक्षक उपस्थित थे। सुबह10 बजे से शाम के 5 बजे तक ट्रेनिंग के अलावा शिक्षकों को हस्तकला भी सिखायी जाती है। शिविर में दिन की शुरुआत किसी न किसी शिक्षक को पंद्रह मिनट समूह के आगे किसी भी विषय को लेकर बोलना पड़ता है और यहीं से उनके प्रत्येक दिन की शुरूआत होती है। दिल्ली से आए प्राध्यापक पढ़ाते कम अपने विदेश की यात्रा अधिक सुनाते रहते हैं। "ऐसे कार्टून जब कक्षा में दाखिल होते तो इनके थोबड़ों पर विलायत, अमेरिका अथवा जर्मनी का मानचित्र खुदा हुआ दिखता। विज्ञान से लेकर आध्यात्म के विषयों को पढ़ाते हुए यदि विदेश का जिक्र न किया जाए तो यह कैसे प्रामाणिक हो कि प्राध्यापक महोदय के थोबड़े पर समुद्र पार के देश का मानचित्र खुदा हुआ है या नहीं।"[2] ऐसे ही एक शिक्षक हिंदी प्रशिक्षण के लिए आये थे, वे इतने विलायती हो गए कि हिंदी भी हिंदी-अंग्रेजी मिश्रित करके पढ़ाते हैं। "पूरे प्रशिक्षण काल में उन्होंने कुल आठ कक्षाएं ली थी। परंतु प्रत्येक कक्षा में वह यह बताना नहीं भूले कि वह विलायत हो आए हैं। इन महोदय पर शायद विलायत का प्रभाव कुछ ज्यादा ही पड़ गया लगता था, इसीलिए वह हिंदी पढ़ाते समय भी अंग्रेजी-हिंदी को खिचड़ी बनाकर बोलते थे।"[3]

---

[1]वही, पृष्ठ -51

[2] वही, पृष्ठ- 64-65

[3] वही, पृ. 65

सरकार द्वारा शिक्षण-प्रशिक्षण करवाया जाता है, लेकिन इसका प्रतिफल विद्यार्थियों को नहीं मिल पा रहा है। अभी भी कहीं न कहीं चूक हो रही है। पाठशाला में किताबों के बोझ का माहौल ज्यों का त्यों चला आ रहा है। व्यवस्था और विभाग स्वार्थ पूर्ति में मग्न है तथा सरकार के झूठे वायदे, भाषण पिछले बीस-तीस सालों से एक ही है। शिक्षा में परिवर्तन होना चाहिए। यह वाक्य स्कूलों के हेड मास्टरों से लेकर देश के शिक्षामंत्री, प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति तक कहते आये हैं। जब प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति ऐसे बोलते हैं कि 'परिवर्तन होना चाहिए। 'करना है' तो शिक्षा में परिवर्तन एक औसत स्कूल मास्टर कैसे कर सकता है? शिक्षा व्यवस्था में प्रगति हो रही है, लेकिन किस दिशा में प्रगति हो रही है यह विचारणीय तथ्य है। "इस व्यवस्था के तहत योग्यता का कोई मूल्य है ही नहीं। जिसके पास सत्ता, पद और बल की शक्ति है, वह सर्वोच्च शिखर पर है। दूसरी ओर, योग्य व्यक्ति सत्ता, पद और बल के अभाव में धूल चाट रहा है।"[1] अरण्य रोदन में सुवास दीपक ने शिक्षा-विसंगति को केंद्र में रखकर समाज में हो रहे परिवर्तन को दर्शाया है। युवा वर्ग का व्यवस्था के प्रति मोहभंग एवं उससे उपजी उदासीनता को इस उपन्यास के जरिये लेखक ने बखूबी उकेरा है।

[1] http://www.kanchanjangha.in/wp-content/uploads/2021/04/50-%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE-%E0%A4%B8%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0%A4%BE%E0%A4%B8-%E0%A4%85%E0%A4%B0%E0%A4%A3%E0%A5%8D%E0%A4%AF-%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A4%A6%E0%A4%A8.pdf

अध्याय-5 सुवास दीपक के कथा-साहित्य की शिल्पगत नवीनता

5.1 भाषागत वैशिष्ट्य

5.1.1 भाषा में आंचलिकता

5.1.2 मुहावरे एवं लोकोक्तियों का गठन

5.2 **शैलीगत वैशिष्ट्य**

5.2.1 सांकेतिक एवं व्यंग्यात्मक शैली

5.2.2 आत्मकथात्मक शैली

5.2.3 सादृश्य विधान एवं संवाद शैली

5.1 भाषागत वैशिष्टय

हिंदी साहित्य में साठ के बाद कथा भाषा में पहले की अपेक्षा अधिक बदलाव आया है। वर्तमान परिवेश की बदलती परिस्थितियों के कारण रचनाकारों ने भाषा के साथ-साथ नये शब्दों का चयन किया है। लेखक के सृजनात्मक विकास में भाषा की महती भूमिका होती है। भाषा जितनी विशिष्ट होगी उसका कथा-साहित्य उतना ही अलहदा होगा। कथाकार अपनी कृति को पाठकों के मानस तक पहुँचाने हेतु कथा के विन्यास को रोचक बनाने हेतु नवीन भाषा का प्रयोग करता है। जिसके जरिये वह उन भावों को पाठकों के समक्ष पहुंचाने में समर्थ होता है। बिना भाषा के लेखक या साहित्यकार अपने मन के भावों एवं विचारों को पाठक तक कभी नहीं पहुंचा सकता। लेखक अपने मनोभावों को पूर्णता के साथ अभिव्यक्त करता है और इसी भाषा को लिखने का तरीका ही लेखक की शैली बन जाती है। इसमें लेखक के परिवेश का भी बहुत अधिक महत्व है। सुवास दीपक का भाषा-प्रयोग अन्य रचनाकारों से अलहदा है। लेखक के पास अपनी बात को कहने का एक विशेष ढंग एवं प्रक्रिया है। उन्होंने जीवन को अत्यंत करीब से देखा है और उसे अपने साहित्य में हू-ब-हू भाषा के माध्यम से उतारा है। उनकी भाषा, विषय परिवेश, संदर्भ एवं घटना के हिसाब से परिवर्तित होती हुई नजर आती है।

सुवास दीपक की कथा-भाषा, वाक्य रचना, चरित्र चित्रण एवं दृष्टि उस समय के परिवेश से संबद्ध है, जो कि नेपाली, बंगाली, उर्दू, डोगरी आदि से संपृक्त है। परिवेश में शिक्षित-अशिक्षित, ग्रामीण एवं शहरी पात्र आदि सभी से लेखक का गहरा जुड़ाव है। सुवास दीपक की भाषा संपदा प्रेमचंद के समान ही अत्यन्त समृद्ध है। सुवास ने अपने साहित्य में जिन शब्दों का चयन किया है, उससे ज्ञात होता है कि उनका शब्द ज्ञान वृहद है। उनकी रचनाशीलता में आंचलिकता, मुहावरों और लोकोक्तियों का भरपूर प्रयोग दिखाई देता है।

5.1.1 भाषा में आंचलिकता

"अंचल शब्द से एक विशेषपूर्ण भूभाग या प्रदेश का बोध होता है जो अपनी स्थानीय, भौगोलिक या प्राकृतिक विशेषताओं के कारण अन्य समग्र भूमिका से अलग दिखाई देता है। उसकी जलवायु एवं प्रकृति, पर्वत, भूमि, लोगों का रहन-सहन, आचार-विचार, बोल-चाल की भाषा, वेशभूषा यहाँ तक कि उसका सम्पूर्ण जनजीवन अपने आप में एक इकाई है।"[1] अंचल शब्द हिंदी में विशेष क्षेत्र या प्रदेश को लेकर लिखे गए साहित्य का बोध कराता है। जिसमें किसी विशेष क्षेत्र की भाषा में आंचलिकता एवं जीवन संघर्ष का चित्रण द्रष्टव्य है। रामदरश मिश्र का मंतव्य है- "जैसे नयी कविता ने सच्चाई, अनुभव की भट्टी में तपे हुए पलों को व्यंजित करने में ही कविता की सुंदरता देखी, वैसे ही आंचलिक उपन्यासों ने अनुभवहीन सामान्य या विराट के पीछे न दौड़कर अनुभव की सीमा में आने वाले अंचल विशेष को विषय के रूप में दर्ज किया। आंचलिक उपन्यास तो अंचल के जीवन समग्र का उपन्यास है। उनका संबंध जनपद से होता है, ऐसा नहीं वह जनपद की ही कथा है।"[2] कथा-साहित्य में आंचलिक भाव लाने के लिए भाषा में आंचलिक तत्व का प्रयोग होना जरूरी है। लेखक की भाषा एवं शब्द चयन लोक परिवेश के अनुकूल हो, तभी आंचलिक कथा-साहित्य आकर्षक बनता है तथा इसके माध्यम से किसी विशेष क्षेत्र के जीवन, रहन-सहन, लोक-परिवेश आदि पाठक के मनःस्थिति पर अंकित हो पाते हैं। भाषा में आंचलिकता जीवन के लोक-तत्व का सूचक है।

सुवास दीपक के कथा-साहित्य में आंचलिकता का तत्व स्वाभाविक ढंग से भाषा में विद्यमान है। लेखक ने नगरीय जीवन एवं निम्न मध्यवर्गीय समस्याओं को अपने साहित्य का आधार विषय बनाया है। सुवास दीपक की रचनाशीलता में उनके पात्र परिवार, ग्राम अंचल की परिस्थितियों और परिवेश से जूझते हैं एवं आर्थिक संघर्ष से लड़ते हैं, परिणामस्वरूप रचना में आंचलिकता का आना स्वाभाविक है। उपन्यास का केन्द्रीय तत्व भ्रष्ट-राजनीति एवं देश निर्माण

[1]डॉ. ह. के, कडवे. (2001). हिन्दी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति. पृष्ठ-17
[2]मिश्र, रामदरश. (2007). हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा. पृष्ठ-224-225

करने वाली संस्था पाठशाला में शिक्षकों के कार्य अनुभूति को प्रकट करता है। सुवास दीपक के उपन्यास 'अरण्य रोदन' में पूर्वोत्तर राज्य सिक्किम प्रदेश की नेपाली भाषा और बोली के शब्दों का यथावत प्रयोग हुआ है। यद्यपि सुवास दीपक की मातृभाषा डोगरी है, परन्तु उपन्यास के लिए उन्होंने प्रादेशिक भाषा का ही चयन किया। 'अरण्य रोदन' में नेपाली के अलावा उर्दू व देशज शब्दावली का भी प्रयोग हुआ है।

"ए जेठा नानी, झिकेर ले ले।

रकसी छ दराजमा।

बाबुले गर्दा छोरो नै बिगर्यो, नेपाली समाजमा.....।"[1] उपर्युक्त अंश पूर्वोत्तर क्षेत्र सिक्किम की नेपाली भाषा से संबद्ध है।

प्रस्तुत उपन्यास पाठशाला के परिवेश को केन्द्रीय बिन्दु बनाकर यहाँ व्याप्त भ्रष्ट-राजनीति एवं खोखली व्यवस्था को प्रस्तुत करता है। भाषा के माध्यम से भ्रष्ट-नीति परिवेश की वास्तविक सच्चाई से अवगत कराती है, जहाँ राजनेताओं और उच्च पदों पर बैठे अधिकारी वर्ग ने एक-दूसरे से पूरा ताल-मेल बैठा रखा है। सुवास दीपक के उपन्यास में नेपाली शब्द-व्यवहार का प्रयोग मिलता है, साथ ही इनकी भाषा में ग्रामीण बोलियों के देशज शब्दों का इस्तेमाल पर्याप्त हुआ है।

"मैं त्याग पत्र देने को तैयार हूँ .....

किस ...किस चीज का। का कहत ह भाई?

मुझे यह आयोजकी-फयोजकी नहीं चाहिए।"[2]

उपर्युक्त उद्धरण पाठशाला के कार्यक्रम में कोई रुचि नहीं लेने के कारण आयोजक महोदय अपने त्याग-पत्र देने की बात करते हैं। लोग जितने भी पढ़-लिख कर अधिकारी साहब बन जाएं

[1] दीपक, सुवास.(1985).अरण्य रोदन. पृष्ठ-5
[2] वही, पृ. 3

किन्तु, उनकी भाषा, रहन-सहन में देशजपन झलकता है। सुवास दीपक ने इसी भाषा का प्रयोग सफलतापूर्वक किया है। पाठशाला में शिक्षा मंत्री के आगमन से पहले ही सेठी साहब पाठशाला को पूरी तरह तैयारी कर लेते हैं। सफाई से लेकर, कक्षा में बच्चों को क्या-क्या और कौन-कौन से प्रश्न पूछे जाने हैं इत्यादि। अपनी इस महान उपलब्धि के बारे में सेठी साहब बाजार, प्रार्थना सभा और जानवरों को यह कहते सुनाते हैं कि "आए कोई माई का लाल और हमारे स्कूल का इम्तिहान ले, काम करते हैं भाई, स्कूल चलाना कोई लौंडों का खेल थोड़ो है।"[1] भाषा में देशज के साथ उर्दू भाषा भी घुल-मिल गई है।

"यहाँ तक कि पाठशाला के अहाते में कोई बकरी आ जावे ओ उसे बँधवा लेते।"[2]

पाठशाला के नये प्रधानाध्यापक स्पष्टवादी एवं विभाग के लिए खतरनाक हद तक वफादार हैं। पाठशाला के प्रशासन में किसी तरह की दखलंदाजी उन्हें पसंद नहीं हैं, जब कभी कस्बे के चौधरियों की बकरी पाठशाला के अंदर घुस जाती है तो वे वही बँधवा लेते हैं। भिजवाते, दिलवाए देता हूँ, हो जावेंगे, बुहारने का झाड़ू, म्न्ने बेरा कोनि , मगज, हम-बिस्तरा, देशी ठर्रा, क्या रे?, उगाहे, बतियाती कच्चै-चिट्ठे, हेकड़ी, क्यो नहीं रे?, गाठ भिगोई, पाखाने इत्यादि शाब्दिक प्रयोग भाषा में आंचलिकता को सिद्ध करते हैं।

उर्दू का प्रयोग भी अरण्य रोदन में बखूबी मिलता है। यथा-मशगूल, खैर, इत्मीनान, तबादला, गनीमत, शौहर, मुख्ताबित, नामाकूल, खाकसार, नाचीज, दक़ियानूसी, ताज्जुब, बरखुरदार, अजीजो, तशरीफ, गुस्ताखी, मेजबान,मिया, लिहाफ, कलाम, इम्तिहान आदि। इन कहानीकारों ने भाषा के तत्व को सभी प्रकार से ग्रहण किया है। लेखक के परिवेश का भी बहुत अधिक प्रभाव दिखता है। सुवास दीपक पर उर्दू परिवेश का प्रभाव स्पष्ट है। अतः प्रभाव की दृष्टि से भाषा में आंचलिकता के महत्व को समझा जा सकता है।

---

[1]वही, पृष्ठ-10

[1]वही, पृष्ठ-16

सुवास दीपक का कहानी संग्रह जीवन की यथार्थता का बोध कराता है। सुवास दीपक ने अपनी कहानियों में अलग-अलग सामाजिक प्रश्न उठाये हैं, यह पूर्ण रूप से व्यंग्यात्मक हैं। सुवास दीपक ने अपने आस-पास में हो रही घटनाओं को नए सिरे से कहानियों के मार्फ़त बताया है, जिससे हम हमेशा से परिचित हैं, किन्तु उस पर कोई ध्यान देना आवश्यक नहीं समझता है। तुमि आमा के मारते परोना, ग्राम सेवक,पड़ोस, बिल्ली के गले में घंटी, कर्ज वसूली आदि कहानियाँ आज के समाज के व्यक्ति का व्यवहार प्रस्तुत करती हैं।

सुवास दीपक अपनी भाषा को लेकर सचेत हैं। भाषा की दृष्टि से इन्होंने कहानियों में नया दृष्टिकोण अपनाया है। उनकी कहानियाँ अलग-अलग गाँव और कस्बे के परिवेश से जुड़ी हुई हैं, इसीलिए कहानी की भाषा ग्राम अंचल से प्रभावित है। भाषा प्रयोगधर्मिता की दृष्टि से लेखक के कथा-साहित्य में सरल और स्पष्ट भाषा का प्रयोग हुआ है। इनकी भाषा में आंचलिकता का प्रयोग है। इसका कथानक मूलतः स्वातंत्र्योत्तर बदलते परिवेश एवं सिक्किम प्रदेश से जुड़ा हुआ है इसलिए इस कहानी संग्रह में आंचलिकता का प्रवाह है। सुवास की कहानी 'धुलते बिम्ब' का परिवेश सिक्किम राज्य से जुड़ा हुआ है। इसमें वहाँ के परिवेश और प्रसिद्ध 'तीस्ता नदी' व जगहों के नाम का उल्लेख मिलता है।

"कालिम्पोंग से लौटते ही पता चला कि मकान मालिक आए थे।"[1]

अन्य उदाहरण द्रष्टव्य हैं- "बस सिंगताम के कोलाहल से निकलकर तीस्ता के किनारे दौड़ रही थी। मैं रम्फू से आने और वापस लौटकर जाने के बीच की मनःस्थिति की तुलना कर रहा था। अभी मन कुछ चिढ़ा भी था, भीड़ से तीस्ता का किनारा कछार और सड़क अब मुझे जाने पहचाने लग रहे हैं।"[2]

[1]दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृष्ठ-9
[2] वही, पृष्ठ-10

उपर्युक्त अंश के माध्यम से नगरीय जीवन की आर्थिक स्थितियों को दर्ज किया गया है। सुवास दीपक की कहानी 'विकल्प' में लोकरंग विद्यमान हैं। "मजदूर गिट्टी-पत्थर तोड़ कर ठेकेदारों का हिसाब देते और शाम को अपनी मजदूरी वसूल कर हांडियों में कुछ उबाल कर खाते और चीथड़ों में लिपटे अलाव के इर्द-गिर्द बैठ कर मादल के ताल पर लोकगीतों के रस में जिंदगी की अथाह पीड़ा को भिगो कर पीते थे।"[1] इस कहानी में शोषण, सामाजिक बुराईयों पर व्यंग्य किया गया है। उपर्युक्त अंश में मजदूर के मजदूरी खत्म कर उनके शाम के माहौल को दिखाया गया है। सभी बैठ कर शाम को लोकगीत और दिन भर की थकान को भूलकर शाम का आनंद ले रहे हैं।

"ये स्कूल कालिज की लड़कियाँ आँखे नचाती, कूल्हे मटकाती नाचती हैं ड्रामे में। कलजुग आ गया है, बीबीजी कलजुग लाज-शरम सब खत्म हो गयी।"[2] 'पड़ोस' कहानी में सुवास दीपक ने देशज और ठेठ शब्दों का प्रयोग प्रमुखता से अपनाया है। उपर्युक्त वाक्य से यह समझ सकते हैं कि पात्र जिस परिवेश से जुड़ा हुआ है, लेखक को उसकी गहरी समझ है। इसी कहानी के एक अंश में श्रीमती मोहन और पड़ोसन जिसको छोटी बहन कहती हैं श्रीमती लाल के बारे में आपस में बाते कर रही हैं- "रांड हर साल कुतिया की तरह बियाती रहती है। इस बार फिर बियाने वाली है। तू इससे ज्यादा हेल-मेल न रखा कर, जलील औरत है। एक दम नागिन है, नागिन। चोट्टी भी एक नंबर की है। हमारी कई कटोरियाँ थालियाँ गायब कर चुकी है। तू ज्यादा मेल-जोल बरतेगी तो तेरा घर भी लूट लेगी और क्या पता तेरे घर वाले को ही दबोच बैठे।"[3]

इसी प्रकार अन्य उदाहरण द्रष्टव्य हैं- "बेटी तू आज देवता को बुला और कमीनी के पेट के कीड़े को मरवा दे न जाने किसका पाप पल रही है। बकवास बंद कर वर्ना मुझसे बुरा कोई न होगा। कभी किसी का भला भी चाहा है तूने? कीड़े पड़ेंगे तेरे शरीर में।" बेटी माँ को फटकरती है।"[4]

---

[1] दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृष्ठ-15

[2] वही, पृ. 59

[3] वही, पृ. 59

[4] वही, पृष्ठ-60

उपर्युक्त अंश में सम्पूर्ण वाक्य-योजना की भाषा देशज है। भाषा का यह रूप परिवेश संरचना की निर्मिति करता है। कथानक के अलावा इसमें लेखक की स्थानीय भाषा और लोक रंग का प्रवाह है जो प्रारम्भ से अंत तक छाया रहता है।

'बिल्ली की गले में घंटी' कहानी में पति अपनी पत्नी से परेशान है, लेकिन भाषण देने से पहले ही वह बेहोश हो जाता है। "नदी से जैसे जागते हुये मैं उठता हूँ और माइक की ओर जाने लगता हूँ , मगर घिसी चप्पल में पाँइचा उलझ जाने से में औधे मुँह गिर पड़ता हूँ। मेरे सहकर्मी समझते हैं कि मैं गश खाकर गिरा हूँ। ..... कोई कहता है पानी छिड़को थोबड़े पर.....मिर्गी का दौरा पड़ गया होगा, जूते मारो, नहीं सुंघाओ।"[1] इसी कहानी में जब आयोजक सभा के सामने कुछ कहने जा रहा था तो बीच में से किसी की आवाज आती है कि "अरे क्या बकरी की तरह मिमिया रहा है, असली मुद्दे पर आ।"[2]

'कर्ज वसूली' कहानी में जब अध्यापक द्वारा पाठशाला से कुछ पैसे उधार लिए जाते हैं, वह सोचता है कि स्कूल से सिर्फ कोई खत ही आयेगा कोई घर तक थोड़े आ पहुँचेगा। "कोई माई का लाल मुनीमों की तरह तकादा करने थोड़े ही आवेगा।... इसके अलावा इतना कहकर मैं दूसरी गली से होकर अपनी कुटिया में आ गया और दरवाजा भीतर से बंद कर दिया।"[3]

अतः स्पष्ट है कि सुवास दीपक के साहित्य की भाषा संरचना में आंचलिकता की प्रमुखता है। इनकी रचनाशीलता में किसान, बेरोजगारी, नगरों में आर्थिक संघर्ष को दर्शाया गया है। कमलेश्वर के मतानुसार "आज की कहानियों की भाषा कृत्रिम नहीं है। यह जीवन यथार्थ की पूरी सच्चाई के साथ अभिव्यक्त देने की भाषा है, जीवन में आए अंतर्विरोधों, विसंगतियों को सहेजने

[1] वही, पृष्ठ-37
[2] वही, पृष्ठ-38
[3] वही, पृष्ठ-79

वाली भाषा है। यह नगरों, महानगरों, गाँवों-प्रदेशों, अंचलों में बिखरी और चारो ओर के वातावरण में समाई जिंदगी की भाषा है।"[1]

5.1.2 मुहावरे एवं लोकोक्तियों का गठन

साहित्य में सामाजिक संबंध एवं परिस्थितियों की जटिलता को अभिव्यक्त करने के लिए समसामयिक कहानीकारों ने कथा-साहित्य में नवीनतम भाषा और शैली का प्रयोग किया है। सुवास दीपक ने कथा-साहित्य को अत्यंत रोचक बनाने हेतु मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। सुवास जी की कहानियां अधिकांशतः निम्न मध्यवर्गीय परिवार एवं समाज से संबद्ध हैं, अतः उनके द्वारा बोली जाने वाली शब्दावलियों का प्रयोग मुक्त रूप से हुआ है। लोकोक्तिपरक शब्दों के इस्तेमाल से कथा और भी सजीव हो उठी है और कहानी अनुभूति की संप्रेषण क्षमता भी बढ़ी है।

मुहावरे शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा से मानी जाती है। जिसका अर्थ अभ्यास करना है। मुहावरे को भाषा के स्तर से देखें तो बहुत सरल लगता है, लेकिन इसके पीछे का भावार्थ एक पूर्ण विचार होता है। इसके विपरीत लोकोक्ति अपने-आप में एक पूर्ण वाक्य रूप होता है। लोकोक्तियों-मुहावरे को आम जन अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं, अधिकांशत: इसका गाँवो में प्रयोग होता है। इस संदर्भ में डॉ. पृथ्वी नाथ पाण्डेय ने कहा है- "कहावत उस बंधे पद-समूह को कहते हैं, जिसमें अनुभव की कोई बात संक्षेपतः सुंदर, प्रभावशाली और चमत्कारी ढंग से कही जाती है। संस्कृत और हिंदी में कहावत को सूक्ति प्रवाद वाक्य अथवा लोकोक्ति भी कहते हैं और अँग्रेजी में इसे (Proverb) तथा उर्दू में 'मसल' कहा जाता है। कहावतें मुहावरे से भिन्न हैं इसका प्रयोग मुहावरों की भांति एक वाक्य में हो पाना संभव नहीं।"[2] इसी तरह मुहावरे के संदर्भ में डॉ. ओम प्रकाश गुप्ता पारिभाषित करते हुये लिखते हैं कि "प्राय: शारीरिक चेष्टाओं, अस्पष्ट ध्वनियों, कहानी

[1] कमलेश्वर, (2000). नई कहानी की भूमिका. पृ.सं. 211
[2] पाण्डेय, डॉ. पृथ्वी. (2009) सामान्य हिन्दी पृष्ठ-454

और कहावतों अथवा भाषा के कतिपय विलक्षण प्रयोगों के अनुरूप या आधार पर निर्मित और अभिधेयार्थ से भिन्न कोई विशेष अर्थ देने वाले किसी भाषा के गठे हुए रूढ़ वाक्य, वाक्यांश अथवा शब्द इत्यादि को मुहावरा कहते हैं।"[1]

सुवास दीपक के कथा-साहित्य में विविध मुहावरों-लोकोक्तियों का प्रयोग है। उनके उपन्यास 'अरण्य रोदन' की भाषा को सहज बनाने में मुहावरे-लोकोक्तियों आदि की महती भूमिका है। कोऊ नृप होई हमे का हानी, गिरगिट की तरह रंग बदलना, सूरा का पान कराना, ऋण लेकर घी पियो, आग बबूला होना, दाँत भिजते रहना, एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा, कुत्ते की दुम, मज़बून की भूमिका बांधना, जमीन सूँघा दी, रास्ते से रोड़ा हटाना, जंगे मैदान में कूद पड़े, कारवाँ गुज़र गया गुबार देखते रहे, ऐरे गैरे नथु खैरे इत्यादि का सुवास दीपक ने उपन्यास में सहज एवं वस्तुस्थिति के अनुसार उपयोग किया है।

उनके उपन्यास 'अरण्य रोदन' के चरित्र मध्यवर्गीय हैं, अतः इसमें इस वर्ग में प्रचलित मुहावरों-लोकोक्ति का होना सहज एवं स्वाभाविक है। यह मुख्य रूप से जन साधारण की संस्कृति, वातावरण से प्रभावित होते हैं। 'अरण्य रोदन' में इसके प्रयोग से उपन्यास की कथा और भाषा और सशक्त और प्रामाणिक लगती है। लेखक ने उपन्यास की भाषा वास्तविक और यथार्थबोध के धरातल गढ़ा है।

इसी तरह इन संदर्भों के कुछ उदाहरण सुवास दीपक के कहानी संग्रह में भी देखने को मिलता है। मसलन- असली धरातल पर उतरना, दिमाग ठिगाने आना, एक कौड़ी की औकात नहीं, खून का घूँट पीना, सब्र का ज्वालामुखी, रीढ़ की हड्डी, दिलो दिमाग पर छाना, अंधेरे में लाठिया भजाना, बिचौलिये की मार्फ़त, लेखा-जोखा, घायल की गति घायल जाने, जमीन सूंघ जाना, खिदमद की दुम, खीसे निपोरना, घोड़े बेचकर सोना, आग बबूला, जब ओखली में सर दे ही दिया

[1] डॉ.कपूर,बद्रीनाथ. (2010) हिन्दी मुहावरे और लोकोक्ति कोश .पृष्ठ-9

हो तो मसूलो का क्या डर, चेहरे से उड़ती हवाई, सिर पर कफन बाँधना, ऋण लेकर घी पियो इत्यादि।

5.2 शैली गत वैशिष्टिय

5.2.1 सांकेतिक तथा व्यंग्यपरक शैली

हिंदी कथा-साहित्य का जो रूप सन् 1950 में था वह 60 तक आते-आते परिवर्तित होने लगा। अतः कथा-साहित्य के मूल में बदलाव के साथ कथा-रचना के शिल्प में भी नयापन आया। शिल्प वह माध्यम है जिससे लेखक अपने कलात्मक रूप, रंग के अनुभव को नए ढंग से दर्ज करता है। परिवर्तित मूल्यों, भावनाओं, अनुभूतियों को कलात्मक ढंग से लिखना ही शिल्प है।

स्वतंत्रता के उपरांत हमारा देश कई सामाजिक परिवर्तनों और झंझावातों से गुजरा है। साठोत्तरी साहित्य में कथा, पात्र, वातावरण आदि की आवश्यकताओं के साथ नए शिल्प की भी अहमियत है। आम जनमानस जीवन की जटिलतम समस्याओं से इतना घिर चुका है कि अब उसे समझना कठिन हो गया है, वह अंतर्मुखी हो गया है। रचनाकारों ने जटिल पात्रों के अनुसार उसी वातावरण का संयोजन किया है। सुवास दीपक ने अपनी रचनाओं में नवीनतम और अद्यतन शैलियों का प्रयोग किया है। मसलन सांकेतिक, व्यंग्यात्मक, आत्मकथानक, सादृश्य विधान एवं संवाद शैली आदि।

संकेतों द्वारा किसी घटना को प्रस्तुत करना सांकेतिक शैली है, सांकेतिक शैली का इस्तेमाल साठोत्तरी साहित्य में कई लेखकों द्वारा हुआ है। सुवास जी की कथा-रचना में सांकेतिक-शैली का इस्तेमाल हुआ है। लेखक जब संकेतों द्वारा कहानी लिखता है तो उसे समझना और भी जटिल हो जाता है। क्योंकि इस शैली में लेखक कई ऐसे सूत्र वाक्य छोड़ता हुआ चलता है जिसे सामान्यतया एक पाठ में नहीं समझा जा सकता। 'टूटना' कहानी में नायक शराब पीने की लत से खुद को काबू नहीं कर पाता, वह घर से मदिरालय की ओर निकलता है। लेखक इस संदर्भ को कुछ

इस प्रकार दर्ज करता है- "शराब पीने की इच्छा ने प्रबल रूप धारण कर लिया है। परंतु मैं उठ नहीं पा रहा हूँ उसे कह भी नहीं पा रहा हूँ। सोच रहा हूँ कि वह खुद मुझे कहे कि शराब पीने चलें। ....मैं उठता हूँ और चप्पल पहनता हूँ। वह कुछ हिलता है। वह समझ जाता है। हम राजी हो जाते हैं। उसकी भी पीने की इच्छा हो रही थी। हम दोनों कमरे से बाहर निकल कर सीढ़ियाँ उतर रहे हैं। पीछे से पत्नी बुलाती है- "सुनिए।" परंतु हमारे पैरों की ध्वनि में उसके सुनिए की आवाज मेरे कानों से टकराने के बावजूद भी मैं अनसुनी कर रहा हूँ।"[1]

इसी तरह 'ग्राम सेवक' कहानी में ग्राम सेवक अपनी बूढ़ी माँ से कठोर व्यवहार करता है, जिस कारण बूढ़ी माँ की मौत हो जाती है। माँ के प्रति कठोर व्यवहार का वर्णन करते हुए सुवास दीपक लिखते हैं "और इस भयवाह आधी रात को जब सभी सो रहे थे बुढ़िया के कमरे से पेटी की धड़ाधड़ बौछारों की आवाज आ रही थी। बुढ़िया की हृदय विदारक चित्कार। चार बजे फिर वही खटाक-खटाक फिर खामोशी।...बुढ़िया जंगले के रबड़ को ऊपर नीचे खीच रही है। पाँव जंगले के बाहर निकालने की कोशिश कर रही है।...धड़ाम की आवाज।...बुढ़िया फर्श पर पीठ के बल पड़ी है। खुली-खुली ज्योतिहीन आंखे अपलक। वह पेटी उठाते हैं और सटाक-सटाक....प्रहारों की झड़ी। वह कुछ क्षण पहले ही ठंडी हो चुकी होती है और ग्राम सेवक उसके पथराए शरीर पर पेटी से प्रहार करने में व्यस्त है।"[2] यहाँ लेखक ने बुढ़िया की मृत्यु की सूचना बहुत रोचक ढंग से दी है। रचनाकार की यह खासियत है कि वह इस सामन्य बात की सूचना सीधे-सीधे नहीं देता, वह अपने पाठक को संकेतों के जरिये बताते हुए उसकी व्याख्या के लिए स्वतंत्र छोड़ देता है।

सुवास दीपक की 'टकराव' कहानी पति-पत्नी के संबंधों पर आधारित है। यह कहानी प्रेम, यौन कुंठा को दर्शाती है। कहानी के अंतर्गत सुमेर और शीला एक-दूसरे से नाराज हैं, किन्तु जब सुमेर शीला को अपने करीब नंगे कपड़े बदलते हुए देखता है तो सुमेर के अंदर क्रोध, घृणा और वासना की टकराहट होती है, जिससे सुमेर पिघल जाता है। "शीला की दूसरी टांग भी उसके ऊपर

[1]दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृष्ठ- 29
[2]वही, पृष्ठ- 34

आ पहुंचती हैं और वह बाँह सुमेर के गले में डाल देती है। सुमेर चुप है। वह अभी तक शिथिल पड़ा है। परंतु उसका शरीर पिघल चुका है। इस आक्रमण से वह निढाल हो चुका है। शीला धीरे-धीरे उसकी ओर सरक रही है। और उसके मुँह के करीब अपना मुँह कर रुआसें से कहती है- मुझे प्यार नहीं करोगे ?..... अनेक प्रश्न उसके मस्तिष्क से आ टकराते हैं परंतु उस समय जैसे सुमेर किसी प्रश्न में न उलझ कर सिर्फ शीला को अपनी ओर खींच लेता है।"[1] यहाँ लेखक बहुत कुछ न कहते हुए भी सांकेतिक रूप में सब कुछ कह जाता है, सुवास दीपक की रचनाशीलता की यह महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

सुवास दीपक की कहानियों में सांकेतिक ध्वनियों का प्रयोग कई स्थानों पर हुआ है। इसी तरह उनके उपन्यास 'अरण्य रोदन' में भी सांकेतिक ध्वनियों का प्रभाव परिलक्षित है। लेखक ने घटना को छोटे-छोटे संकेत-बिंबों द्वारा चित्रित किया है। कई बार प्रतिक्रिया को सिर्फ संकेत-बिंबों से व्यक्त किया गया है। अरण्य रोदन उपन्यास में पाठशाला में आयोजक महोदय के कल्चरल प्रोग्राम से चिन्तित होने का सांकेतिक बिम्ब है- "आयोजक अचानक ध्यानातीत मुद्रा से जागते हैं और स्वयं को मछली बाज़ार में पाते हैं। मछली बाज़ार की सी दुर्गंध उनके नथुनों से टकराती है। कुछ लड़के नाक बंद किए हैं और बीच से चिल्ला रहे हैं –सर, राजू ने गैस छोड़ी है।... आयोजक का पारा सातवें आसमान पर चढ़ जाता है। वह चारो और देखते हैं तो उन्हें लगता है कि इस महफिल में वही एक शख्स हैं जो इस पाठशाला के तथाकथित सांस्कृतिक प्रोग्राम के बारे में ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से सोच रहे हैं। तत्काल उन्हें लगता है कि उन्हें इस आयोजकी से त्यागपत्र दे देना चाहिए।"[2] यहाँ संकेत-बिंबों के जरिये से सुवास दीपक ने स्थिति को जीवंत रखने का प्रयत्न किया है।

अरण्य रोदन में लेखक शादीशुदा है, जब पाठशाला के एक शिक्षक को बेहद उतावला देखते हैं तो उसे भी शादी करने की सलाह देते हैं। "तीसरे ही दिन जब हम अपने दौलतखाने से

---

[1]वही, पृष्ठ- 75

[2]वही, पृष्ठ- 2

निकलकर बाज़ार से नून तेल-दाल का जुगाड़ करके आ रहे थे कि वही शिक्षक और सुग्गे की तरह नाक वाली शिक्षिका अचानक मेरे सामने आकर खड़े हो गए और बोले आशीर्वाद दीजिए।... तथास्तु ! अचानक हमारा हाथ बारी-बारी से उनके सिरों पर पहुँच गया और एक आत्मसंतुष्टि की सांस ली। काफी खुश भी थे कि बच्चू अब हमारी तरह भोगेगा। सारी हेकड़ी निकल जाएगी। वे हमारी (बद्द) दुआएँ लेकर नदी की ओर चले गए।"[1] यहाँ लेखक बिना संवाद के अपनी प्रसन्नता संकेतों द्वारा स्पष्ट करते हैं। लेखक द्वारा प्रयुक्त सांकेतिकता का यह उदाहरण उसकी शिल्प कला को समझने हेतु उल्लेखनीय है।

सुवास दीपक के कथा-साहित्य में एक और शैली समय के यथार्थ से रू-ब-रू कराती है, व्यंग्यात्मक शैली इसकी एक मिसाल है। स्वतन्त्रता के बाद देश जिस समय से गुजर रहा था, उसी को लेखक ने अपने कथा-रचना का जरिया बनाया है- जन सामान्य में मोहभंग की दशा, राजनीतिक भ्रष्ट व्यवस्था, आर्थिक शोषण इत्यादि। आम आदमी को योजनाओं के माध्यम किस प्रकार राजनेताओं द्वारा ठगा जाता है तथा भ्रष्ट व्यवस्था सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए लोगों को लूट रही है। इसी यथार्थ को सुवास ने अपने कथा-संसार में व्यंग्य विधान के जरिये से दिखाया है। उनकी कथा-दुनिया में व्यंग्य-रूप प्रमुख शैली के रूप में अभिव्यंजित है। सुवास ने व्यंग्य का अपनी कथा-रचना में बड़े सहज भाव से दर्ज किया है। व्यंग्यात्मकता उनके कथा-साहित्य की ताकत है, उसमें चित्रित यथार्थ पाठकों को गहराई से जोड़े रखता है।

लेखक अपने उपन्यास 'अरण्य रोदन' में देश की व्यवस्था पर कुठाराघात दर्ज करते हुए लिखता है कि "जिस प्रकार देश की सरकारें चल रही हैं, उसी प्रकार सरकार के मातहत विभिन्न विभाग चल रहे हैं। सेठी साहब की सरकार बनाम पाठशाला भी उसी प्रकार चल रही है। विरोधी दल चाहे जैसे भी कुत्तों की तरह भौकते रहें, सरकार चलती रहेगी। पाठशालाओं में हम जैसे

[1] दीपक, सुवास. (1985).अरण्य रोदन. पृष्ठ-24

अध्यापक चाहे जितना भी विरोध प्रकट करें, पाठशालाएँ चलती रहेगी।"[1] प्रस्तुत अंश से यह ज्ञात होता है कि देश को चलाने वाले नेता और पाठशाला को चलाने वाला अध्यापक सिर्फ अपने लाभ के लिए देश या विभाग का इस्तेमाल करते हैं। उन्हें देश की या विभागीय व्यवस्था की कोई परवाह नहीं है। 'अरण्य रोदन' मूलतः राजनीतिक व्यवस्था पर केन्द्रित अलग ढंग का व्यंग्य परक उपन्यास है। सुवास दीपक ने राजनीतिक जागरूकता का परिचय देने के लिए कभी प्रजातन्त्र की उपलब्धियों और सीमाओं का मूल्यांकन किया है तो कभी उसकी सार्थकता पर प्रश्न लगाकर भ्रष्टाचार की चर्चा भी की है। प्रजातन्त्र की आड़ में आज भी सत्ताधारी लोग अपनी ही झोली भर रहे हैं इन सभी पर लेखक ने उपन्यास अरण्य रोदन में कटाक्ष किया है।

'अरण्य रोदन' में व्यंग्य के साथ-साथ विद्रोह का स्वर दिखाई पड़ता है, उपन्यासकार राजनीतिक व्यवस्था की योजनाओं एवं भाषण पर व्यंग्य करता है। लेखक की रचनाओं में परिवर्तन की आहट स्पष्ट रूप से व्यंजित दिखती है। उपन्यास में व्यवस्था और राजनेताओं पर व्यंग्य है- "यथा स्थिति को बरकरार रखने की मुद्रा हमारी सांस्कृतिक धरोहर को कोई त्याग नहीं सकता। चिपके रहने की कितनी उज्ज्वल परंपरा है, मैकाले की शिक्षा पद्धति से चिपके रहना। राष्ट्रीय नेता रोजाना शिक्षा पद्धति में परिवर्तन लाने की बात करते हैं। उनके भाषण करने की शैली पिछले तीस-बत्तीस सालों से एक ही रही है। "शिक्षा में परिवर्तन होना चाहिये।" यह वाक्य स्कूलों के हेड मास्टरों से लेकर देश के शिक्षा मंत्री, प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति तक कहते आए हैं। जब प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति ऐसा बोलते हैं कि 'परिवर्तन होना चाहिये।" 'करना है' तो शिक्षा में परिवर्तन एक औसत स्कूल मास्टर कैसे कर सकता है?"[2] सुवास दीपक राजनेता द्वारा देश में परिवर्तन लाने वाले भाषणों पर व्यंग्य करते हैं।

शिक्षकों को प्रशिक्षण केंद्र में पाठशाला और बच्चों के विकास हेतु हस्तशिल्प, कला आदि का ज्ञान व अभ्यास कराया जाता है, फिर भी शिक्षा का स्तर वहीं का वहीं बना रहा- क्योंकि

---

[1] वही, पृष्ठ-7

[2] दीपक,सुवास.(1985).अरण्य रोदन. पृष्ठ-69

इसमें भी स्वार्थ-भाव बरकरार है। लेखक भ्रष्ट तंत्र, शोषण, अन्याय, अनाचार, अनुशासनहीनता तथा मूल्यहीन राजनीति को अपने उपन्यास का विषय बनाकर ऐसे समय में लिखने का जोखिम उठा रहा है। इस संदर्भ में सुवास दीपक कहते हैं- "राजनीति की बात छोड़ दें क्योकि "कोऊ नृप होई हमै का हानि" वाली मुद्रा सभी अपनाते हैं तो हम कौन होते हैं जो अकेले अंधेरे में लाठियाँ भाँजते क्रांति का बिगुल बजायें। शुरू से लेकर अंत तक जो बात हमने कही है, वह है देश की मौजूदा विकास की ओर अग्रसर होती शिक्षा की बुनियाद। और इस बुनियाद की ईट और गारा हम शिक्षक स्वयं होकर भी शिक्षा में मूलभूत परिवर्तन नहीं ला सकते हैं।"[1] यहाँ व्यंग्यात्मक शैली उपन्यासकार की भाषा को और भी सुंदर और प्रभावशाली बनाती है।

इसी प्रकार उनके कहानी संग्रह में भी व्यंग्यात्मक शैली का उद्घाटन विशेषतः परिलक्षित होता है। 'विकल्प' कहानी में लकड़ा व्यवस्था से तंग आकर व्यवस्था पर कटाक्ष करते हुए कहता है कि "मैं हत्यारा नहीं हूँ , हत्यारा फैक्टरी का स्टोर-कीपर है, ठेकेदार है। मैंने कोई हत्या नहीं की। इस पेट के लिए अपने बीवी-बच्चों के लिए दो रोटियाँ भी आपकी व्यवस्था मुझे मुहैया नहीं कर सकी।....मेरे बच्चे, मेरी बीवी पंद्रह दिन से सड़े-गले पत्ते उबाल कर खा रहे हैं। उन्हें भर-पेट रोटी कौन देगा ?आप देंगे? आप सिर्फ उन्हें कुत्तों की तरह सड़-सड़ कर मर जाने के लिए मजबूर कर देंगे। उन्हें हत्यारे बनने के लिए मजबूर करेंगे.....हा...हा...हा।"[2] सुवास दीपक अपनी कहानियों में उक्त शैली के प्रयोग से व्यवस्था और विरोधी वर्ग पर तंज कसते हैं।

'चक्रव्यूह' कहानी में उन्होंने देश के राजनेताओं पर सहजभाव से कटाक्ष किया है- "स्कूल के किसी फंक्शन में आमंत्रित किसी अंगूठा छाप मिनिस्टर के स्वागत-गान की रचना मुरारीलाल के अलावा और कौन कर सकता है?..... फंक्शन शुरू होने से पहले मुरारीलाल ने स्कूल की बरामदे पर कुछ पोस्टर चिपका दिए। इन पोस्टरों पर उसने हेडमास्टर, मास्टर और साथ ही आमंत्रित मिनिस्टर के कार्टून बनाए थे। सिर्फ कार्टून ही बनाए होते हो कोई आपत्ति नहीं होती पर हमारे

[1] वही, पृ. 69

[2] दीपक, सुवास. (2005). चक्रव्यूह एवं अन्य कहानियाँ. 20

प्रगतिशील मुरारीलाल ने शरीर तो उनके मनुष्यों के बनाए थे पर खोपड़ियाँ सूअरों की बना दी थी और नीचे उन महानुभावों के तकिएकलाम लिख दिये थे।"[1] मुरारीलाल प्रगतिशील होने के साथ-साथ अपने आस-पास क्या हो रहा है उससे औरों की तरह अवगत हैं। लेखक ने यहाँ खुलकर व्यवस्था पर व्यंग्य व विरोध किया। चित्र में जानवरों की खोपड़ी से स्पष्ट हो जाता है कि इनका शरीर तो मनुष्य का है लेकिन दिमाग जानवरों जैसा है, ऐसा शायद इसलिए क्योंकि जानवर और मनुष्य में अंतर है। यह एक गहरी सोच की ओर संकेत करता है। पूंजीवादी समाज में खोखले आदर्शों एवं नैतिकता के नाम पर सामान्य व्यक्ति का इस तरह शोषण होता है कि उसमें और जानवरों में अंतर बहुत कम हो जाता है। "पर एक बात बड़े गज़ब की हुई। इन जंगली सूअरों ने उसका खून पिया, गोश्त खाया पर उन्होंने भेजे को छुआ तक नहीं"[2] इन उद्धरणों में व्यंग्यात्मक शैली को स्पष्टतः द्रष्टव्य है। सुवास दीपक ने 'विकल्प' और 'चक्रव्यूह' के अलावा अन्य कहानियों में भी इस शैली का इस्तेमाल किया है। इन कहानियों में समय सापेक्ष सामाजिक दृष्टि व चेतना का प्रभाव है, यह प्राथमिक रूप से उसका सीधा खुलासा है।

'कर्ज वसूली' कहानी में जब प्रधानाध्यापक सभी से राशि एकत्रित कर कुछ कार्य नहीं करते तो इस पर जनता उनसे प्रश्न करने आती है, किन्तु उससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। "पाठशाला की ओर से कल्चरल प्रोग्राम हुए, जिससे और राशि एकत्रित हो गई। जिन-जिन अन्य साधनों से धन इकट्ठा हो सकता था, जनाब ने इकट्ठा किया और तोंद बढ़ा कर आँखें मूंद कर ध्यानस्थ हो गए। जिन-जिन कार्यक्रमों के लिए वह धनराशि एकत्रित की हुई थी उन पर जब कोई काम होता हुआ नज़र नहीं आया तो लोगों का माथा ठनका। इधर-उधर कानाफूसी हुई। दीवार के भी कान होते हैं, बात जनाब तक भी पहुंची। पर बात के उनके कान तक पहुँचने का कोई फर्क थोड़े ही पड़ने वाला था क्योंकि पहुंचे हुए पैगम्बर इस दुनियावी शोर-शराबे से निर्लिप्त रहते हैं। वह भी रहे।"[3] लेखक ने समाज में व्याप्त इस दो मुंहेपन कथनी और करनी के अंतर और नैतिकता के नाम

[1] वही, पृष्ठ-46
[2] वही, पृष्ठ-46
[3] वही, पृष्ठ-82

पर जनता को भ्रम में रखने वाली स्थितियों का चित्रण यह बखूबी किया है। उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि सुवास दीपक की कथा-रचना में व्यंग्यात्मकता सुंदर व अर्थपूर्ण ढंग से दर्ज है।

5.2.2 आत्मकथात्मक शैली

इस शैली में लेखक 'मैं' के माध्यम से साहित्य लिखता है या कथा सुनाता है, जो आत्मकथानक शैली के अंतर्गत आती है। सुवास दीपक ने अपनी कथा-रचना में इस शैली का इस्तेमाल किया है। सुवास दीपक के कहानी संग्रह 'चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ' में कुल 11 कहानियों में लेखक ने लगभग सभी कहानियों में आत्मकथानक अथवा 'मैं' शैली का प्रयोग किया है। यह शैली पाठक और कहानी के बीच आत्मीयता व यथार्थता का भाव पैदा करती है। कथा-साहित्य में पात्र के मनःभावों का स्वरूप दर्ज करने के लिए इस शैली का प्रयोग होता है। कथा-साहित्य में आत्मकथात्मक अथवा 'मैं' शैली के संबंध में डॉ. अनिल सिंह की धारणा है कि – "आत्मकथानक शैली में लिखित कहानी और उपन्यास विशेष प्रभावशाली सिद्ध हुए है। उसका कारण यह है कि इस शैली के अंतर्गत पाठक और नाटक के मध्य बिना किसी बाधा के संपर्क स्थापन हो जाता है। इसमें रचित कभी-कभी अविश्वसनीय घटनाएं भी आत्मीय सहानुभूति के कारण सह और विश्वसनीय प्रतीत होने लगती है।"[1] आत्मकथात्मक शैली में पात्र स्वयं निजी चरित्र पर प्रकाश डालता है, इसमें किसी अन्य व्यक्ति अथवा चरित्रों का समावेश निषेध है। सुवास दीपक के कथा-साहित्य से कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

"....और अंत में इस कथा का विदूषक अर्थात 'मैं' या 'हम' इस अरण्य रोदन में अब शामिल नहीं है। क्योंकि निर्मित 'लॉबी' में वह अकेला पड़ गया। पाठशाला उसके लिए एक यातनागृह से कम

[1] सिंह, (2006) अनिल. कथाकार. पृष्ठ-166

नहीं रह गई थी।... मैं पहले लेटा-सा उसे देख रहा था। अब उठ कर सीधा बैठ गया था। ....मेरे अंदर कुछ पिघल रहा था। पाल्थी मारकर बैठे मैंने उसके चेहरे पर दिग्भ्रमित युवा मानस चित्र देखा।"[1]

"भाइयों: मैंने कहावत को एक नया रूप देने का बीड़ा उठाया था पर अब नतीजे पर पहुँचा हूँ कि यह मेरे वश का रोग नहीं है। पत्नी बड़ी मासूमियत से खाट पर पड़ी सुबह की मीठी नींद ले रही है और मुझे एक शेर याद आ रहा है। आप को सुनाकर रसोई घर की ओर चलता हूँ।"[2]

"कुछ ही देर बाद सिंगताम पहुँच जाता हूँ। भीड़ में अकेला। मुझे इस भीड़ से इतनी चिढ़ हो रही थी कि एक बम मेरे पास हो और मैं इस भीड़ को खत्म कर दूँ। पत्नी का जेवर मेरे कोट की जेब में था। लगता था मैंने पत्नी की ख्वाहिशों को अपने कोट की जेब में रख लिया है। जेब इतनी भारी लग रही थी कि मैं अपने संतुलन को कायम नहीं कर पा रहा था।"[3]

उक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि सुवास दीपक की कथा-बुनावट में उक्त शैली का प्रयोग जीवंतता के साथ व्यंजित है। इसमें लेखक स्वयं कथा में उपस्थित होकर विस्तार देता है जिससे कहानी और भी रोचक और प्रभावशाली हो जाती है।

---

[1] दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृष्ठ- 22

[2] वही, पृष्ठ- 8

[3] वही, पृष्ठ- 8

5.2.3 सादृश्य विधान एवं संवाद शैली

संवाद शैली या कथोपकथन शैली नाम से ही स्पष्ट है कि जिसके अंतर्गत संवादों के जरिये कथा आगे बढ़ती है। आजादी के पश्चात साहित्य में बदलते परिवेश के साथ सशक्त संवाद और सादृश्य विधान कथा साहित्य में एक आवश्यक तत्व बनकर उभरा है। संवादों की भाषा सरल एवं अविधात्मक होती है। यह संवाद सामाजिक बोध, समस्यामूलक और राजनीतिक मनोदशा को व्यक्त करने में उपयोगी हैं। इसलिए कथा-रचना में संवाद- सौन्दर्य रूप सर्वाधिक प्रभावी माने गए।

साठोत्तरी कथा रचना में संवाद शैली व सादृश्य विधान शिल्पगत विशेषता का प्रमुख हिस्सा है, इसका लगभग सभी रचनाकारों ने प्रमुखता से प्रयोग किया। संवाद और सादृश्य विधान की शक्ति ने कथा-साहित्य में कथ्यानुरूप वातावरण का निर्माण किया है। यह वातावरण चाहे किसी विशेष चरित्र केन्द्रित हो या दृश्य, उन्हें विश्वसनीय बनाता है। सादृश्य विधान कथा में दृश्य को यथार्थपूर्ण एवं सजीव बनाने का प्रयास करता है।

सुवास दीपक के कथा-साहित्य में सरल, सीधी भाषा विद्यमान है। रचनाकार ने भाषा-शैली के माध्यम से बेरोजगारी, आर्थिक संघर्ष, भ्रष्ट व्यवस्था एवं शोषण अभावों से जूझते हुए चरित्रों तथा उनके आस-पास के परिवेश को दृश्यों के माध्यम से दर्ज है। कहानी संग्रह 'चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ' तथा उपन्यास 'अरण्य- रोदन' में यह प्रयोग प्रमुखता से दर्ज है।

संवाद कथानक-प्रक्रिया पर पाठक का ध्यान आकृष्ट करता है। साहित्य की मूल समस्या और चरित्र दृश्य से ही स्पष्ट होती है जिससे रचना आगे बढ़ती है। कहानी 'कर्ज वसूली' में संवाद के साथ-साथ दृश्य का भी सूत्र मिलता है। उदाहरण द्रष्टव्य है- "वह एक कुर्सी में धंसे थे। उन्हें पहले देखा नहीं था। उनके बारे में क्या कुछ नहीं सुना था पर साक्षात दर्शन आज ही हो रहे थे। हम जाके उनके सामने खड़े हुए तो उन्होंने सामने वाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। बैठ गए तो उन्होंने बिना किसी भूमिका के आदतन आँखे मूँदकर दाया हाथ आगे बढ़ाकर कहा- प्लीज गिव मी हंड्रेड

रूपीज।… हमारी त्योरियां चढ़ी। पूछा किस खुशी में? उन्होंने उसी लहजे में आंखे बंद करके कहा, आपने यह अदद रकम मैनेजिंग कमेटी से बतौर कर्ज ली है।

"पर मैं ये रूपये आप को क्यों दूंगा? मैंने तो ये कमेटी के सचिव से लिए हैं।

मैं उस समिति का नया सचिव हूँ।

बात अब हमारे पल्ले पड़ी। हमने नम्र होकर कहा- हजूर अभी तो हमारी जेब में फूटी कौड़ी भी नहीं है। उन्हें लगा कि शिकार को फांसना इतना आसान नहीं है जितनी उन्हें आशा थी।"[1]

संवाद शैली व दृश्य से कहानी की मूल संवेदना भी ज्ञात होती है। 'चक्रव्यूह' कहानी में नायक मुरारीलाल पाठशाला का अध्यापक है। वह भ्रष्ट व्यवस्था के परिवेश को बदलना चाहता है। नायक भ्रष्ट राजनीति के संबंध में विद्रोह व्यक्त करते हुए पाठशाला में आमंत्रित नेता के साथ-साथ प्रधानाध्यापक और अध्यापकों के कार्टून में व्यक्ति के सिर के जगह पशुओं के सिर बनाता है। यहाँ लेखक समाज सत्ता, व्यवस्था, शिक्षा प्रणाली, प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति, सरकार आदि पर व्यंग्य करता है तथा मुरारीलाल के बनाए चित्र के माध्यम लेखक द्वारा उनके प्रति आक्रोश प्रकट करता है।

लेखक की कहानी सौन्दर्य का आधार सादृश्य विधान है और यह उसका आधार अनुभूति की प्रामाणिकता है। लेखक ने बदलते हुए युग के अनुरूप नई अभिव्यक्ति और सौन्दर्य बोध की आवश्यकता का प्रतिपादन किया है। लेखक ने अपनी कथा रचना में सामाजिक जीवन का दायित्व स्वीकार किया है। भाषा-शैली में सपाटबयानी को अपनाकर परिवेशजन्य विडम्बना को सीधे तौर पर दर्ज किया है। 'अरण्य रोदन' में सादृश्य विधान और संवाद के कुछ बिन्दुओं को देखा जा सकता है-

"एक तो करेला दूसरा नीम चढ़ा। लड़का एक तो भौंगा है और उसके ऊपर नाक से बोलता है। इसके साथ ही वह स्पष्टवादी है। बेचारा भौंगा होने के कारण वास्तव में जब वह मास्टर की ओर

[1]दीपक, सुवास. (2005).चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ. पृष्ठ-78

देख रहा होता तो मास्टर साहब उसे दरवाजे की ओर देख रहा हुआ पाते। मास्टर बुद्धिजीवी होने के कारण इतने सालों से यह थाह नहीं पा सके थे कि लड़का भौंगा है।"[1]

"कुत्ते की दुम! तेरा बाप कब पैदा हुआ था?

सर, पता नहीं।...

ईडियट, अपने बाप के जन्म के बारे में भी नहीं जनता ? कहा था तेरा ध्यान?

सर, बापू ने मेरे को बताया नहीं हैं। मन्ने बेरा कोनि।

तेरा बाप मीन्स अकबर।

मास्टर लड़के को रोता छोड़कर अकबर के अन्य बेटों की ओर मुखातिब होता है।

अकबर वाज बोर्न ऑन..। ऑन....

शाबास, देख नामाकूल, तेरे सारे भाई जानते हैं कि तेरा बाप कब पैदा हुआ था। तू जरूर अकबर की मौलिक संतान नहीं।

पाठ खत्म हो जाता है। अब मास्टर वार्तालाप पर आता है। पिछले दो दशकों से कुछ रटे वाक्यों को दुहराता है। आज तक उसने हाथ में खड़िया लेकर अपने हाथ गंदे नहीं किये है। कभी एक शब्द भी श्यामपट पर लिखा हो, इसका कोई रिकार्ड नहीं है।"[2]

उपर्युक्त अंश में अध्यापक-कक्षा का दृश्य दिखाया गया है। अध्यापक कक्षा को कई सालों से एक ही क्रमबद्ध में चला रहे हैं। घंटी बजने के काफी देर बाद कक्षा में प्रवेश करना, और घंटी बजते ही कक्षा से तुरंत निकल जाना और तो और पाठशाला में ऐसे शब्दों का प्रयोग करना, जिससे सुनकर भविष्य में बच्चे भी वही शब्द को अपनाते हैं।

---

[1]दीपक,सुवास.(1985).अरण्य रोदन. पृष्ठ-50

[2] वही, पृ. 50

पाठशाला में गुरुजनों के पदचिन्हों में चलने के संदर्भ में एक और दृश्य यहाँ देखा जा सकता है- ‘‘बड़ी कक्षाओं में जब शिक्षक पढ़ाने जाते तो यदि शिक्षिका हुई तो कक्षा के लड़के उसके चेहरे की ओर एकटक देखते रहते और यदि शिक्षक हुआ तो छात्राएं उसके चेहरे की ओर देखती रहती। चूंकि इस पाठशाला में कोई शिक्षक सठियाया हुआ नहीं है अत: गुरूभक्ति के लक्षण जो कभी-कभार हमारी हिंदी फिल्मों में दिखाए जाते हैं, उनकी प्रैक्टिस यहाँ होने लग गई थी। कक्षा समाप्त होने पर छात्र-छात्राएं एक दूसरे की ओर देखने लग जाते। गुरुजनों के पदचिन्हों पर चलने का यह एक उज्ज्वल एवं प्रामाणिक उदाहरण था।’’[1]

सुवास दीपक के कथा-साहित्य में दृश्य व संवाद का अद्भुत समन्वय है। प्रत्येक रचना में संवाद व दृश्य का अंकन मिलता है और कथा-साहित्य में इसके प्रयोग से विषय का मूल मंतव्य और भी प्रभावी होकर दिखता है। भाषा और शैली के प्रयोग से रचनाएँ कभी कमजोर नहीं पड़ती है। सुवास की कथा-व्यंजना में कहीं-कहीं सघन संवादों का प्रयोग दिखता है और कही संक्षिप्त संवादों का। उदाहरण के रूप में हम ‘विकल्प’, ‘धुलते बिम्ब’ आदि कहानियों को देख सकते हैं। संवाद व सादृश्य योजना वाक्य में एक गहरी अर्थपूर्ण व्यंजना लाता है। शैली-वैशिष्ट्य की दृष्टि से सुवास दीपक का कथा-साहित्य अत्यंत उल्लेखनीय है। उपर्युक्त उद्धरणों के आलोक में स्पष्ट है कि सुवास दीपक की कथा-रचना में शैली का प्रयोग प्रसंशनीय है तथा उनकी रचनाओं का शिल्प पक्ष अंतर्वस्तु के साथ इतना घुलमिल गया है कि उसका प्रवाह पाठकों को अत्यंत सहज और प्रभावी लगता है। वस्तुतः इनके कथा-साहित्य की भाषा योजना में मुहावरे तथा लोकोक्ति, सांकेतिक बिम्ब, आत्मकथानक, सादृश्य विधान और संवाद योजना की प्रधानता है। इसके प्रयोग में सुवास दीपक एक सधे हुए शिल्पकार के रूप में उभरकर आते हैं। सुवास दीपक की कथा-दुनिया का शिल्प अध्येताओं को सहज रूप से आकृष्ट करता है। स्पष्टतः साठ के बाद की कथा रचना में सुवास दीपक की रचनाशीलता अंतर्वस्तु और शिल्प दोनों स्तरों पर बेजोड़ है, इसमें नई अर्थवत्ता के साथ कलात्मकता के कई नए सूत्र एवं आयाम देखने को मिलते हैं।

---

[1]दीपक, सुवास. (1985). अरण्य रोदन. पृष्ठ-37

उपसंहार

प्रस्तुत अनुसंधान सुवास दीपक की दो रचनाओं पर केंद्रित है। इसके तहत उनका उपन्यास 'अरण्य रोदन' एवं 'चक्रव्यूह और अन्य कहानियाँ' कहानी संग्रह के रूप में शामिल है। यह अनुसंधान पाँच अध्यायों में विभाजित है। सुवास दीपक साठ के बाद के लेखकों में से एक हैं। सुवास दीपक ने स्वतन्त्रता के बाद मोहभंग, पीढ़ी संघर्ष, व्यवस्था पर व्यंग्य, युवा आक्रोश, यौन कुंठा एवं बेरोजगारी से जूझते अलग-अलग सामाजिक परिवेश को अपनी कहानी के माध्यम पाठकों के सम्मुख रखा है। साठोत्तरी हिंदी लेखक सुवास दीपक मानते हैं लेखक अपने परिवेश से पूरी तरह वाकिफ होता है। बिना परिवेश से जुड़े यथार्थपरक कहानियाँ लिखना संभव नहीं है। सुवास दीपक का जुड़ाव अपने परिवेश, समय और समाज से रहा है। रचना से गुजरते हुए ऐसा जान पड़ता है कि इन्होंने कहानी और उपन्यास के पात्रों को करीब से देखा है। दूसरे शब्दों में कहें तो स्वयं वह पात्रों एवं समसामयिक परिवेश से जुड़े हुए हैं, उसी भोगे हुए यथार्थ को उन्होंने अपने कथा-जगत में प्रस्तुत किया है। लेखक का उपन्यास अरण्य रोदन शिक्षा-व्यवस्था की विडम्बना को दर्शाता है। 'चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ' में समाज के सभी पहलुओं जैसे बेरोजगारी, युवा क्रांति, आर्थिक संघर्ष, संबंध-विच्छेद, गरीबी, शोषण, मोहभंग आदि को प्रमुखता के साथ दर्ज किया है।

सुवास दीपक ने उपन्यास में शिक्षा प्रणाली में हो रहे भ्रष्टाचार और सत्ता-लोभ के कारण पाठशाला में हो रहे एक-दूसरों पर छीटाकशी करना, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों से चंदा उठाना व अन्य समस्याओं से अवगत होकर पाठशाला व बच्चों के भविष्य के प्रति जागृत भावना एवं राजनीतिक चेतना पर ज़ोर दिया है। उपन्यास 'अरण्य रोदन' उस दौर के जीवन की विसंगति को चित्रित करता है, जिसके प्रति हमारा समाज मुखर नहीं होता है। पूर्वोत्तर भारत से ताल्लुक रखने के कारण सुवास दीपक ने अपनी सृजनशीलता के लिए हिंदी भाषा को चुना, यह कहीं न कहीं उनके भाषाई प्रेम को दिखाता है। इसीलिए सुवास दीपक का हिंदी साहित्य लेखन कार्य खासकर सिक्किम और पूर्वोत्तर भारत के लिए एक उपलब्धि है।

1947 के पश्चात की स्थितियों में अनेक सामाजिक विभेदों ने जन्म लिया, जिसका चित्रण सुवास दीपक ने अपनी कथा दुनिया में किया है। समाज में व्यक्ति को अनेक दौर से गुजरना पड़ता है। कहानी के पात्र तत्कालीन स्थितियों के समक्ष हार मान लेते हैं, लेकिन दोबारा उठने की हिम्मत भी रखते हैं। कहानी निरंतर वस्तुस्थिति के साथ बदलती रहती है। सुवास दीपक की कहानियों में भी परिस्थितियों का प्रभाव अधिक दिखता है।

स्वाधीनता के बाद विशेषकर नई कहानी के दौर में कथा और शिल्प दोनों में बदलाव हुए। आजादी के बाद लोगों की जो आकांक्षाएं थीं, जो उम्मीदें थीं वह एक दिवास्वप्न बन कर रह गई जिससे बहुत जल्द ही देशवासियों के मन में मोहभंग का भाव उत्पन्न होने लगा। साठ के बाद की कहानी में विभिन्न परिवर्तन सामने आया है। इन कहानियों के केंद्र में आम जनता की पीड़ा को अधिक अभिव्यक्ति मिली। मध्यवर्गीय जीवन में आए बदलाव के कारण यह समाज आर्थिक कठिनाइयों से जूझने लगा, संयुक्त परिवार टूटने लगा, नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी में दरारे आने लगी और जीवन में तनाव, अविश्वास, आपसी संबंधो में बिखराव आने लगा। व्यक्ति निराशा, अवसाद और अकेलेपन से घिरने लगा। सुवास दीपक ने अपने कथा साहित्य आमजन के जीवन, सामाजिक खोखलापन और भ्रष्टाचार को केंद्र में रखा है। साठोत्तरी के दौर के लेखकों में सुवास दीपक ने अपनी एक अगल पहचान बनाई। सुवास दीपक की यह पहचान भले ही हिंदी भाषी प्रदेशों में बहुत स्थिर नहीं रही हो, लेकिन पूर्वी उत्तर भारत के राज्यों में सुवास दीपक एक उल्लेखनीय हस्ताक्षर के रूप में जाने जाते हैं।

उल्लेखनीय है, सिक्किम में अरण्य रोदन को पहले उपन्यास का दर्जा प्राप्त है। इस उपन्यास में शिक्षा जगत में बिताए गए 11 वर्ष के अनुभवों को सुवास दीपक ने दर्ज किया है। कहानी संग्रह में सुवास दीपक ने निम्न मध्यवर्गीय जीवन की निराशा, शोषण, पीड़ा व सामाजिक प्रश्नों को बहुत ही गंभीरता के साथ उठाया है। सुवास दीपक संवेदनशील लेखक हैं। इनकी प्रत्येक कहानियां सामाजिक सरोकारों से संबद्ध है। उनकी रचनाशीलता से गुजरते हुए ऐसा महसूस होता है कि सुवास दीपक का उद्देश्य अपनी रचनाशीलता के जरिये आम जनमानस को सचेत करना रहा है।

साठ के बाद हिंदी साहित्य में बदलती परिस्थिति का असर स्पष्ट रूप से सामने आया, जिसे लेखकों ने अपनी रचनाओ में प्रमुखता से रेखांकित किया। साठ के दौर में सुवास दीपक भी एक ऐसा नाम है जिन्होंने समकालीन दौर में अर्थव्यवस्था के प्रति आक्रोश तथा विद्रोह पर कलम चलायी है। साठ के बाद के साहित्य में सुवास दीपक के समकालीन लेखक रमेश बत्रा और शामलाल प्रचंड के साथ-साथ कई महत्त्वपूर्ण नाम शामिल हैं। इन लेखकों ने भी समसामयिक परिवेश के प्रति आक्रोश प्रकट किया है। इन सभी की साहित्य में मोहभंग, शोषण एवं बेरोजगारी के प्रति विद्रोह भाव अधिक मुखर रूप में द्रष्टव्य है।

सुवास दीपक के संग्रह 'चक्रव्यूह एवं अन्य कहानियाँ' में सामाजिक विद्रूपता, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि समस्याएँ चित्रित हैं। बाजारवाद के दखल से प्रभावित समाज, स्वतन्त्रता से पहले देखे गए स्वप्न, जो बाद में लोगों के मन में मोहभंग का एक कारण भी बना, इसे सुवास दीपक ने अपनी रचनाशीलता के हवाले से व्यक्त किया है। सुवास दीपक की कहानियों में शोषण के प्रति विरोध व व्यंग्य एवं युग बोध को प्रमुखता से देखा जा सकता है। प्रेम का विभिन्न रूप 'टकराव' कहानी में उभरकर आया है। प्रेम, यौन कुंठा एवं पुरुष की बदलती मानसिकता का विश्लेषण उनके यहाँ मिलता है। उपन्यास 'अरण्य रोदन' हमें आभास करवाता है कि आम आदमी के संदर्भ में समान अधिकार की बात तो की जाती है, लेकिन असलियत में वह अब भी वह जस की तस है। यह एक सरकारी फाइलों में ही दर्ज है। लेखक ने अपने उपन्यास में यह दिखाने का भरपूर प्रयत्न किया है कि किस तरह से से व्यक्ति परस्थितियों के सामने बेबस हो जाता है। असंतोष होते हुए भी वह व्यवस्था का विरोध नहीं कर पाता और सब कुछ मौन होकर सहता रहता है।

सुवास दीपक का कथा साहित्य मौजूदा समाज व्यवस्था से मुठभेड़ करने का साहस देता है। सुवास दीपक के कथा-साहित्य का फ़लक अत्यन्त विस्तृत है जिसमें मानवीय गरिमा और बराबरी का भाव है जो समतामूलक समाज की संरचना में विश्वास करता है। सुवास दीपक के कथा-जगत की बड़ी खूबी है कि उनके यहाँ देश की राजनीति के प्रति कोई कटुता नहीं है, प्रतिकार है। उनके यहाँ मानवीय मूल्यों की वकालत है। सुवास दीपक व्यक्ति की किसी भी समस्या को

नकारते नहीं, शायद इसीलिए उन्होंने समाज की किसी भी विसंगति और समस्या को अछूता नहीं छोड़ा। कहानियों के पात्रों में बदलाव की व्याकुलता है, प्रगतिशील जीवन के प्रति बेचैनी है। लेखक उन्हें जितना समझते हैं, उतना ही उनके अंतर्विरोधों पर व्यंग्य भी करते हैं। अपने परिवेश के प्रति, अपने समय और भविष्य की चिंता के कारण इनका साहित्य व्यंग्य और मार्मिकता से निहित है।

सुवास दीपक के उपन्यास में राजनीति का मूल स्वर प्रमुखता से सामने आया है। इनकी कहानियों में राजनीतिक चेतना के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना का व्यापक फ़लक है। देश में 1975 में घोषित आपातकाल, सरकार से जनता का असंतोष, इन्दिरा गांधी की हत्या, नागरिक असंतोष के कारण देश में असंतुलित वातावरण का प्रभाव हिंदी कहानियों में अधिक देखने को अधिक मिलता है। 'तुमि आमाके मारते परोना' कहानी में उस मोहभंग को दर्शाया गया है जो लोगों के मन में स्वतन्त्रता के बाद पैदा हुई भावना है। इस कहानी संग्रह में व्यंग्य और आक्रोश चित्रण हुआ है। सुवास दीपक ने 'विकल्प' कहानी में राजनीतिक अव्यवस्था, जीवनयापन के लिए सामाजिक विकृतियों के साथ ही व्यक्तिगत पीड़ा के साथ-साथ, भय, त्रास, हिंसा, आतंक आदि का समावेश किया है। जनता की परेशानियाँ और शासक की लापरवाही का सही उदाहरण इस कहानी के द्वारा समझा जा सकता है। सुवास दीपक ने उस दौर में निचले पायदान पर खड़े उस आम आदमी की पीड़ा को जगह दी है जो अब तक साहित्य की परिधि से बाहर था। टूटना कहानी के नायक का सरोकार उन तमाम बेरोजगार भारतीय मानस से है जिसमें व्यक्ति की आशा-निराशा, आकांक्षा और हर्ष आदि समाया हुआ है। कहानी का नायक जिस परिस्थिति से गुज़र रहा होता है, उससे प्रायः मध्यवर्गीय परिवार के नवयुवक गुजरते हैं। ऐसे में वे हीनता का भाव महसूस करते हैं। फलस्वरूप व्यक्तित्व में अनंत संभावनाओं के रहते हुए भी वह उनका समुचित विकास नहीं कर पाता। सुवास दीपक के कथा साहित्य में विचारों को लेकर कोई विशेष आग्रह नहीं है, बल्कि एक तटस्थता का भाव अधिक दिखता है।

सुवास दीपक 'चक्रव्यूह' कहानी के माध्यम से एक ऐसे साधारण व्यक्ति की कहानी को कहते हैं जिसका जीवन विभिन्न विसंगतियों से घिरा हुआ है। व्यवस्था एक महत्वपूर्ण इकाई है,

लेकिन समाज में ईमानदारी से पहचान बनाने वाले क्यों सत्ता और गहरे दलदलों में फंसते चले जाते हैं। आखिर उसकी ज़िम्मेदारी उसकी ईमानदारी है या व्यवस्था ? इस क्यों का जवाब कहानी में दर्ज नहीं है, बल्कि वे पाठक के ऊपर छोड़ देते हैं। कहानी का पात्र सुमेर, शीला की दूसरे मर्दों से बातचीत एवं मिलने-जुलने को बार्दश्त नहीं कर पाता। इस कहानी में यौन-कुंठा, एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या, संबंधों में घुटन आदि को दिखाया गया है। स्त्रियों के कामकाजी होने पर पितृसत्ता की अवाधारणा कमजोर होती है जिसे मर्दवादी सोच वाला यह समाज बर्दाश्त नहीं कर पाता और उसे तुरंत ही स्त्री के चरित्र और यौन सुचिता से जोड़ देता है। स्त्री को विवश होकर उसी सामाजिक संरचना को अपनाना पड़ता है, जिससे वह निकलना चाहती है।

सुवास दीपक अपनी भाषा में हमेशा संवेदनशील दिखते हैं, इसलिए कहानियों की भाषा में कहीं कोई पांडित्य एवं कलात्मक चमत्कार की बात नहीं दिखती, बल्कि सरल, सहज एवं ग्राह्य है। ग्राम सेवक, बिल्ली के गले में घंटी, पड़ोस, कर्ज वसूली कहानियों में बहुविध जिंदगी के यथार्थ से जन्मी पीड़ा, व्यंग्य, आक्रोश, हास्य, संघर्ष, मानवीय जीवन, बेवसी आदि का सामंजस्यपूर्ण रूप देखने को मिलता है। सुवास दीपक के यहाँ व्यंग्य की प्रधानता है। अरण्य रोदन का नायक, चक्रव्यूह कहानी का मुरारीलाल, विकल्प कहानी का लकड़ा मध्यवर्ग के शोषित पात्र हैं वे अपनी ईमानदारी के कारण अपनी स्थिति से असफल हुए हैं और इस भ्रष्ट व्यवस्था से छुटकारा पाने के लिए प्रयत्न करते हैं।

सुवास दीपक के कथा-साहित्य का धरातल विस्तृत है। समग्रता में देखें तो हम पाते हैं कि इनके कथा-साहित्य में यथार्थपरकता एवं व्यंग्य महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में दिखती है। उस दौर की परिस्थितियों की भीतरी-बाहरी टकराहट, आम आदमी की विडम्बना या उसके आत्मसंघर्ष एवं मनोवृत्तियां सुवास दीपक की रचनाओं के केंद्रीय विषय हैं। इसके अलावा सुवास दीपक ने शहरी जीवन की समस्या, तनाव और राजनीतिक भावबोध को अपने कथा साहित्य का विषय बनाया है, जो प्रमुख है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

दीपक, सुवास. (1985). *अरण्य रोदन.* रेवती कुंज हापुड़: संभावना प्रकाशन.

दीपक, सुवास (2003). *चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ.* गुम्बा घुर्विसे नामची (दक्षिण सिक्किम): निर्माण प्रकाशन.

सहायक ग्रंथ

अरोड़ा, डॉ.ज्ञानवती.(1989). *समसामयिक हिंदी कहानी में बदलते परिवर्तिक संबंध.*दिल्ली: सूर्य प्रकाशन.

अवस्थी, देवीशंकर. (2013). *नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

कमलेश्वर. (2000). *नई कहानी की भूमिका.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

गर्ग, डॉ.भैरु लाल.(1878). *स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में सामाजिक परिवर्तन.* इलाहाबाद: चित्रलेखा प्रकाशन.

जयमोहन, एम.एस. (2014). *हिंदी कविता में प्रयोगवाद और उसके बाद.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

त्रिपाठी, आशीष. (संपा.) . (2012). *हिन्दी का गद्य पूर्व.* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

दीपक, सुवास. (1996). *भारतीय नेपाली कहानियाँ.* सिक्किम:निर्माण प्रकाशन.

परमानंद, श्रीवास्तव.(2012). *कहानी की रचना प्रक्रिया.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

पांडेय, भवदेव. (संपा.). (2006).*हिन्दी कहानी का पहला दशक.* दिल्ली: रे माधव पब्लिशिंग प्राइवेट लि.

पाण्डेय, पृथ्वीनाथ. (2009). *सामान्य हिन्दी.* बिहार: नालंदा पब्लिकेशन.

बंसल, बीना.(2001). *नई कहानी में आर्थिक संघर्ष.* नई दिल्ली: ईशा ज्ञानदीप.

मधुरेश. (2014).*हिंदी कहानी का विकास. इलाहाबाद:* लोकभारती प्रकाशन.

मार्कन्डेय. (2013). *हिंदी कहानी: यथार्थवादी नजरिया.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

मिश्र, डॉ. रामप्रसाद. (संपा.). (1974). *हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष.* पिलजीगंज मेहसाना: गिरनार प्रकाशन.

मेहता, डॉ. एम.एल. (1984). *स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी वस्तु विकास एवं शिल्प-विधान.* आगरा: प्रगति प्रकाशन.

यादव, राजेंद्र (2018). *एक दुनिया समानांतर.* इलाहाबाद. लोकभारती प्रकाशन.

यादव, राजेंद्र. (1988).*कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति.* दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

यादव, राजेंद्र.(1968). *कहानी:स्वरूप और संवेदना.* दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

रामप्रसाद. (1995). *साठोत्तरी हिंदी कहानी में पात्र और चरित्र चित्रण.* इलाहाबाद: जयभारती प्रकाशन.

राय, गोपाल. (2011). *हिन्दी कहानी का इतिहास (भाग1 व 2).* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

राय, डॉ.सूबेदार. (1981). *स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी का विकास.* श्रीनगर कानपुर: अनुभव प्रकाशन.

वर्मा, पवन कुमार.(2009).*भारत में मध्यवर्ग की अजीब दास्तान.* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

शुक्ल, रामचंद.(2014). *हिंदी साहित्य का इतिहास.* नई दिल्ली: संस्थान प्रकाशन.

श्रीवास्तव, डॉ. शोभारानी.(2011). *बीसवीं सदी की हिंदी के बदलते परिदृश्य.* कानपुर: साहित्य रत्नालय प्रकाशन.

सिंह, डॉ. प्रेम. (2015). *साठोत्तरी कहानी और परिवर्तन मूल्य.* नई दिल्ली: मीनू पब्लिकेशन.

सिंह, डॉ.विमला.(1999). *साठोत्तरी हिंदी कहानियों में उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग का स्वरूप.* वाराणसी: कला प्रकाशन.

सिंह, डॉ.विमला.(1999). *साठोत्तरी हिंदी कहानियों में उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग का स्वरूप.* वाराणसी: कला प्रकाशन.

सिंह, त्रिभुवन. (1962). *हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.

सिंह, नरेंद्र. (2012). *साठोत्तरी हिन्दी कविता में जनवादी चेतना.* वाणी प्रकाशन.

सिंह, नामवर. (1991). *कला और साहित्य चिंतन कार्ल मार्क्स.* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

सिंह, नामवर. (2006). *कहानी नयी कहानी.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

सिंह, नामवर. (2018). *आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ.* लोकभारती प्रकाशन.

सिंह, बच्चन. *हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास.* नईं दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.

सिंह, बच्चन. (2000). *आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास.* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

पत्र-पत्रिकाएँ

रविवार. (हिंदी साप्ताहिक, आनंद पत्रिका प्रकाशन) वर्ष: 9, अंक:14,1-7 दिसंबर, 1985

विचार. नेपाली साप्ताहिक, दीपक, सुवास.(संपा). वर्ष: 5, अंक:5, जुलाई, 1985

भाषा. (जनवरी-फरवरी, 2006). केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

सेतु, (अनुराग शर्मा, संपा.) अक्टूबर, 2020, अमेरिका: पीट्सबर्ग

कंचनजंघा. (प्रदीप त्रिपाठी, संपा.) वर्ष: 01, अंक: 02, जुलाई-दिसंबर- 2020, सिक्किम

शोधार्थी का विवरण

नाम : मैरिमित लेप्चा

शिक्षा : एम. ए. (हिंदी)

विभाग : हिंदी

लघु शोध-प्रबंध शीर्षक: सुवास दीपक का कथा साहित्य : अंतर्वस्तु और शिल्प

प्रवेश की तिथि : 22.06.2019

शोध प्रस्ताव की संस्तुति :

(i) **पंजीयन संख्या :** 19/M.Phil/HND/02

(ii) **पंजीयन तिथि**: 13.08.2020

Hardeep Singh

अध्यक्ष / Head /
हिंदी विभाग / Department Hindi
सिक्किम विश्वविद्यालय / Sikkim University

अध्यक्ष
हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक

प्रदीप त्रिपाठी
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
भाषा एवं साहित्य संकाय
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक-737102

शोध निर्देशक
हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक